मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१३, अंक-०७ अक्टूबर २०२३ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ 48 मूल्य १००.०० रूपए

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक बिजय कुमार जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष मैं भारत हूँ फाउंडेशन को मिल रही यशस्वी सफलता के लिए बधाईयां

मैं भारत हूँ

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

मैं भारत हूँ

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

दिल्ली संयोजक
जिनेश जैन, दिल्ली

छत्तीसगढ संयोजक
कैलाश रारा, रायपुर

पूर्वोत्तर संयोजक
कैलाश काबरा, गुवाहाटी

राष्ट्रीय प्रवक्ता
संपत मिश्रा, गुवाहाटी

राष्ट्रीय सोशल मिडिया प्रवक्ता
अजय सेठी, डिमापुर

व समस्त पदाधिकारियों की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं

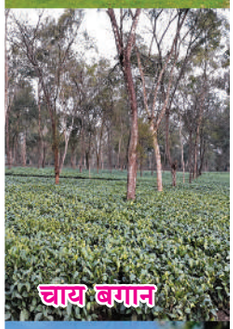

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक बिजय कुमार जैन ने किया असम का दौरा

सम्मानित किया गया भारत माँ के लाडले स्वरूप असम राज्य विधानसभा के सभापति बिस्वजीत दैमारी को

गुवाहाटी: १७ अक्टूबर २०२३ भारत का ही एक राज्य असम के लिए एक ऐतिहासिक दिन निर्धारित हो गया, जब 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा लड्ढा ने गुवाहाटी का दौरा किया गया।

असम राज्य के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा के निर्देशन पर असम राज्य के विधानसभा के सभापति बिस्वजीत दैमारी जी ने अपने कार्यालय में सदीक्षा भेंट दी, सभा में उपस्थित रहे विभिन्न असम संस्कृति के विद्वान विधानसभा के अध्यक्ष विश्वजीत जी ने कहा कि भारत को तो 'भारत' ही कहना चाहिए, बोला भी जाना चाहिए, इसमें कोई दो राय नहीं है और दो राय हो भी नहीं सकती। वर्तमान में भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने भी अपने पत्रक में 'भारत' का ही उल्लेख किया है। वर्तमान के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी 'भारत मां की जय' ही बोलते हैं और असम तो भारत का ही एक राज्य है।

मैं सर्वप्रथम आप सभी मुंबई, कोलकाता, गुवाहाटी से पधारे सभी भारत मां के लाडलों का स्वागत व सम्मान करता हूं, आप सभी एक ऐसे विषय को लेकर आए हैं मेरे समक्ष, जो की सर्वांगीण राष्ट्रीय मुद्दा है और जरूरी भी है। आप सभी उपस्थित सुधिजनों को बता देना चाहता हूं कि महाभारत काल से भी पुराना हमारे असम राज्य पौराणिक इतिहास रहा है।

मैं तो आप सभी से निवेदन करता हूं कि भारत का ही एक राज्य 'असम' के इतिहास का नाट्य मंचन व वीडियो फिल्म का निर्माण किया जाना चाहिए, क्योंकि असम राज्य का इतिहास अति प्राचीन है, इतिहास तो इतिहास ही होता है, जिसकी जानकारी यदि आप लोगों को चाहिए तो मैं भी उपलब्ध करवाऊंगा, क्योंकि असम मेरी मातृभूमि है, कर्मठ भूमि है, पवित्र व ऐतिहासिक भूमि है साथ ही कहूंगा कि भारत राष्ट्र का दिल भी है 'असम', मेरे पास जो कुछ है वह आपको बता रहा हूं और उपलब्ध भी करवाऊंगा। अनंतोगत्वा इतना ही कहूंगा कि आप लोगों की सोच व कार्य 'भारत' केवल 'भारत' ही रहे' ऐतिहासिक है और एक दिन इतिहास में भी लिखा जाएगा।

भारत की स्वतंत्रता के ७५ सालों के बाद आप लोगों ने बताया कि मां भारती विश्व को बताए कि 'मैं भारत हूँ' जो कि एक दिन जरूर होगा। करीब १ घंटे चली सभा में उपस्थित सभी सुधिजनों ने असम राज्य के विधानसभा के अध्यक्ष विश्वजीत जी को धन्यवाद दिया और दुपट्टे पहना कर और उनके द्वारा बताए गए असम राज्य के पुराने इतिहास की जानकारी उपलब्ध कराने हेतु करतल ध्वनि से 'जय भारत' के नारे से सम्मान किया। सभा में उपस्थित 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के सहयोगी बिजय कुमार जैन, श्रीमती निशा लड्ढा, शंकर लाल बिड़ला, कमलेश गोयल, श्रीमती पुष्पा सोनी, श्रीमती ममता दुगर, विमल काकड़ा, श्रीमती मंजू दायमा, कैलाश काबरा, श्रीमती सारिका अग्रवाल, श्रीमती पूजा शर्मा, संपत मिश्रा, मोतीलाल पंड्या जैन, संतोष बैद, विनोद लोहिया, श्रीमती रंजना बरारिया, श्रीमती सविता सराफ, श्रीमती सविता अग्रवाल आदि।

'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा घोषित असम राज्य के संयोजक कैलाश काबरा ने कहा कि जल्द ही असम राज्य के इतिहास का नाट्यमंचन व वीडियो का निर्माण किया जाएगा ताकि पूरे विश्व को पता चले कि 'असम' राज्य का इतिहास पुरातन व महाभारत कालीन है। निर्धारित सभा के आयोजन में विशेष भूमिका श्री निकुंज तालुकदार की रही। जय भारत!

भारत को केवल भारत ही बोलें तो अच्छा लगता है

- गुलाबचंद कटारिया, राज्यपाल, असम राज्य

गुवाहाटी: 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं अभियान की सफलता के लिए दिनांक १७ अक्टूबर २०२३ को भारत का एक राज्य असम के राज्यपाल माननीय श्री गुलाबचंद जी कटारिया से सदिक्षा भेंट हुयी। निवेदन किया गया कि अब देश का नाम एक ही हो, केवल 'भारत', माननीय कटारिया जी ने कहा कि हम तो भारत ही बोलते हैं और अपने देश को 'भारत' ही बोलना चाहिए। उपस्थित थे 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा व पूर्वोत्तर के संयोजक कैलाश काबरा। जय भारत!

'मैं भारत हूं फाउंडेशन' पूर्वोत्तर के संयोजक बने कैलाश काबरा

गुवाहाटी: १७ अक्टूबर २०२३ पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन का सभागार, अपराह्न ३:०० बजे गुवाहाटी में भारत मां के लाडलों के साथ चर्चा सभा हुई, जिसमें मोतीलाल जैन, सुशील कुमार सराफ, संपत मिश्रा, विनोद कुमार लोहिया, संतोष बैद, अशोक अग्रवाल, कैलाश काबरा के साथ मैं भारत हूँ फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा, सरला काबरा, सीता देवी झंवर, मीना पोद्दार, पुष्पा सोनी आदि उपस्थित रहे। सभा में निर्णय लिया गया कि हम सभी अभिवादन के समय 'जय भारत' ही बोलेंगे, साथ ही जल्द असम के इतिहास का नाट्य मंचन व वीडियो बनाया जाएगा, क्योंकि भारत का ही एक राज्य है असम, यहां से 'भारत केवल भारत' की उठी आवाज विश्वस्तर पर जाएगी। सभा में उपस्थित भारत मां के लाडलों की अनुमति से प्रसिद्ध समाजसेवी कैलाश काबरा को 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के पूर्वोत्तर क्षेत्र का संयोजक घोषित किया गया, जिसका स्वागत करतल ध्वनि से सभी ने किया, जल्द ही कैलाश जी के निर्देशन में जम्बो कार्यकारिणी की घोषणा भी की जाएगी, जिनके द्वारा पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में 'भारत नाम सम्मान' अभियान पहुंचाया जाएगा। जय भारत!

मैं भारत हूँ पत्रिका का आगामी विशेषांक
नवम्बर २०२३

प्रकृति की सुंदरता से सजाए हुए एक शहर 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Prabhudayal Bhartia
Mob: 9954407974
Kalyani Industries
Manufacturer of Quality Masala & Besan
Ward No. 14 Chandmari Road, P.O. Khelmati,
North Lakhimpur, Assam, Bharat-787031

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए असम का एक जिला 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

A. P. Sonthalia
Mob. : 9435085104
GHANSHYAM TRADERS
Authorised Dealer
"PIX" V-Belts, Aspee Group of Co's (Sprayers),
HPM Chemicals & Fertilizers Ltd,
Karnataka Agro Chemicals & Balaji Chemicals
DEALS IN:- HARDWARES, MACHINERIES, ELECTRICALS
TEA GARDEN STORES & PESTICIDES ETC.
K. B. ROAD, North Lakhimpur,
Assam, Bharat-787001

१४वें वर्ष में प्रवेश

मैं भारत हूँ

वर्ष -१३, अंक ७, अक्टूबर २०२३

वार्षिक मुल्य
रु.१२००/-
१२ अंकों का

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

● 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
● 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

अति प्राचीन व महत्वपूर्ण इतिहास से भरा है 'नॉर्थ लखीमपुर'

कौन कहता है कि आसमां में छेद हो नहीं सकता, भारत का ही एक राज्य असम का एक जिला 'नॉर्थ लखीमपुर' ने दुनिया को बताया कि इतिहास को कभी भुलाया नहीं जा सकता 'नॉर्थ लखीमपुर' जिले का इतिहास है ही ऐसा, क्या नहीं है 'नॉर्थ लखीमपुर' में, मंदिर कहें या ऐतिहासिक स्थल, तरक्की पर तरक्की, उत्थान पर उत्थान सब कुछ तो है 'नॉर्थ लखीमपुर' में, सुबह की शुरुआत भी तो इसी पावन और पवित्रतम माटी से ही होती है।

'मैं भारत हूँ' का प्रस्तुत विशेषांक 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास के साथ अग्र पुरोधा महाराज अग्रसेन जी का इतिहास व विभिन्न जानकारी की प्रस्तुति का अवसर मिला, साथ ही अहिंसा के आध्यात्मिक विश्व गुरु विद्यासागर जी के जन्म पर्व का संक्षिप्त इतिहास लिखने का भी अवसर प्राप्त हुआ।

मैं तो बहुत ही भाग्यशाली हूं कि मुझे 'भारत नाम सम्मान' के लिए कुछ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

गत ८ अक्टूबर २०२३ को 'रायपुर' में जो कि भारत का ही एक राज्य छत्तीसगढ़ की राजधानी में सभा करने के आयोजन का अवसर मिला, छत्तीसगढ़ के संयोजक कैलाश जी रारा के मिले सहयोग को जीवन भर भुला नहीं सकता, तभी तो मैंने 'कैलाश जी को कहा कि आप 'भारत मां के लाडले' हैं।

९ अक्टूबर २०२२ को चल रहे डूंगरपुर चातुर्मास के पावन अवसर पर परमाचार्य श्री विद्यासागर जी के दर्शन का अति सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। आचार्य श्री ने कहा बिजय कुमार भारत की कुंडली निकालो कि भारत पर इंडिया कहाँ और क्यों बैठा है? मैंने आचार्यश्री को विश्वास दिलाया कि जिस प्रकार आपके पूर्व निर्देशों पर चलकर सभी कुछ पूरा किया हूं यह निर्देश भी पूरा करूंगा।

दिनांक १७ अक्टूबर को 'भारत' का ही एक राज्य असम के विधानसभाध्यक्ष बिस्वजीत दैमारी जी के गुवाहाटी कार्यालय में मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा जी के निर्देशन पर भेंट हुयी, आदरणीय बिस्वजीत जी से असम के इतिहास की काफी जानकारी प्राप्त हुई, हमने जानकारी दी कि भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए आज विश्वस्तर का हो चुका है जिसे आंशिक सफलता भी मिली है। जल्द ही पूर्वोत्तर राज्य के लिए घोषित संयोजक के पद पर कैलाश जी काबरा ने कहा कि जल्द ही असम राज्य के पौराणिक इतिहास के साथ 'जय भारत' का भी गुणगान किया जाएगा।

अनंतोगत्वा आप सभी भी व 'मैं भारत हूँ' विश्वस्तरीय घोषित पत्रिका के प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन करता हूं कि जब भी किसी का अभिवादन करें 'जय भारत' से ही करें।

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

मैं भारत हूँ फाउंडेशन द्वारा भारत का एक राज्य छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन

हम सभी जानते हैं की किसी भी इंसान के संवैधानिक नाम २ नहीं हो सकते, तो हमारे देश के २ नाम क्यों?

रायपुरः लोग कहते हैं और हम सभी भारतीयों को बताया भी गया है कि इंडिया का मतलब 'भारत' होता है, 'भारत' का मतलब इंडिया होता है, क्या कभी नाम का अनुवाद हो सकता है, जब नाम का अनुवाद नहीं हो सकता तो इंडिया का मतलब भारत या भारत का मतलब इंडिया कैसे हो सकता है? हमारे देश का नाम भी एक ही रहना चाहिए केवल 'भारत'।

क्योंकि हजारों सालों से हमारे देश का नाम भारत' ही रहा है, हमने लगभग ढाई सौ साल गुलामी की दास्तॉ सही और अपने आप को इंडियन कहने के लिए मजबूर रहे, पर आज हम स्वतंत्र हैं और हम चाहते हैं कि हम भारतीय बने रहें, क्योंकि पुराणों व वेदों में हमारे देश के नाम का उल्लेख 'भारत' ही मिलता है।

पिछले १५ सालों से लगातार हमारा प्रयास रहा है कि पूरी दुनिया अपने देश को एक ही नाम से पुकारें केवल 'भारत'।

'मैं भारत हूं फाउंडेशन' एक अंतरराष्ट्रीय संस्थान है, संस्थान ने विश्व के कोने-कोने में फैले भारतीयों को बताने का प्रयास किया है कि नाम का कभी अनुवाद नहीं होता, भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए और इसमें आंशिक सफलता भी मिली है। संस्थान ने भारत का ही एक राज्य 'उत्तर प्रदेश' के हर गलियों में 'रथ यात्रा' निकाली। भारत की राजधानी 'दिल्ली' में जन-जन तक अभियान को पहुंचाने के लिए भारत मां के रथ के साथ लोगों से संपर्क किया। दिल्ली के सुप्रीम कोर्ट के प्रांगण में अधिवक्ताओं के बीच कार्यक्रम किया। दिल्ली में स्थापित जनपथ में बाबा साहेब अंबेडकर इंटरनेशनल सभागार में विशाल कार्यक्रम किया, जिसमें कई राजनीतिक दलों के शिरोधार्य उपस्थित हुए। भारत की जितनी भी सामाजिक संस्थाएं हैं उनसे संपर्क किया गया। देश के कोने-कोने में रहने वाले भारतीयों से सोशल मीडिया व युवा छात्र-छात्राओं से संबंध स्थापित कर पूछा गया कि देश का नाम एक ही कैसे हो केवल 'भारत', क्योंकि हजारों सालों से हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है यह वैदिक पुराणों में भी हमें लिखा मिलता है।

'भारत' को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान को आंशिक सफलता भी मिली है लेकिन जब तक भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्रमांक १ में, जहां 'इंडिया देट इज भारत' लिखा है वहां 'भारत ईज भारत' नहीं लिखा जाएगा तब तक हम भारतीय चैन से नहीं बैठेंगे।

'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के पदाधिकारीयों ने भारत के केंद्रीय सरकार,सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, राज्यपाल आदि से संपर्क कर निवेदन किया है। दिनांक ८ अक्टूबर २०२३ को 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के पदाधिकारी भारत का एक राज्य छत्तीसगढ की राजधानी 'रायपुर' में स्थापित **शेष पृष्ठ ७ पर...**

बिजय कुमार!
भारत का ज्योतिष निकालो इंडिया क्यों बैठा है भारत में
-परमाचार्य श्री विद्यासागर जी

डोंगरगढ़: ९ अक्टूबर २०२३ की चिलचिलाती धूप, भारत का एक राज्य छत्तीसगढ़ की पावन भूमि 'डोंगरगढ़' में हो रहे परम आचार्य श्री विद्यासागर जी के चातुर्मास के समय जब मैं सुबह सबेरे अपनी धर्मपत्नी संतोष के साथ 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' अंतर्राष्ट्रीय संस्थान की कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा संजय लड्ढा कोलकाता निवासी के साथ आचार्य श्री विद्यासागर जी के दर्शनार्थ पहुंचा तो काफी भीड़ के मध्य आचार्यश्री के संत निवास में 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान की आंशिक सफलता के बारे में विस्तारपूर्वक बताया तो आशीर्वाद देते हुए आचार्य श्री ने कहा, अच्छा कर रहे हो, सफलता जरूर मिलेगी, साथ ही भारत का ज्योतिष निकालो, इंडिया क्यों बैठा है 'भारत' पर, वह अध्ययन करो। मैंने कहा! आचार्यश्री आपका आशीर्वाद व स्नेह निर्देश आज मुझे प्राप्त हुआ है, इस विषय पर भी कार्य करते हुए वापस आपके समक्ष दर्शनार्थ जल्द ही उपस्थित होऊंगा। जय भारत!

पृष्ठ ६ से... वृंदावन सभागार में आप सबके समक्ष निवेदन लेकर आए हैं की छत्तीसगढ़ की राजधानी का हर बच्चा, युवा, बुजुर्ग, महिला-पुरुष जब भी किसी का अभिवादन करें 'जय भारत' से ही करें।

हमें पूरा विश्वास है कि आप सभी का साथ हमें मिलेगा और आप अपने क्षेत्र में इस अभियान का उल्लेख जरूर करेंगे और जन जन तक यह बात पहुंचाने में साथ देंगे, क्योंकि हम सभी भारतीय हैं, भारत के रहने वाले हैं और हमारे देश का नाम एक ही रहे केवल 'भारत'।

कार्यक्रम में उपस्थित राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा लड्ढा ने अपने गरिमामयी उद्बोधन से सभागार में उपस्थित छत्तीसगढ वासियों को संबोधित किया। छत्तीसगढ के संयोजक कैलाश रारा ने सभी का परिचय कराया और कहा कि जब तक 'भारत को केवल भारत नहीं बोला जाएगा' मैं चावल ग्रहण नहीं करुंगा। मंच का संचालन चिर-परिचित मंच संचालिका 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने अपनी गरिमामयी वाणी से संचालित कर रही थीं। उपस्थित मंचासीन कैलाश रारा रायपुर- छत्तीसगढ संयोजक (मैं भारत हूँ फाउंडेशन), प्रो. रमेन्द्रनाथ मिश्रा रायपुर- अध्यक्ष इतिहास विभाग (RSV), गिरीश पंकज रायपुर- वरिष्ठ पत्रकार व साहित्यकार, बिजय कुमार जैन मुंबई- राष्ट्रीय अध्यक्ष (मैं भारत हूँ फाउंडेशन), प्रदीप जैन रायपुर- सम्पादक दैनिक विश्व परिवार, सुरेन्द्र पाटनी रायपुर- प्रदेश अध्यक्ष भाजपा (NGO प्रकोष्ठ), राजकुमार राठी रायपुर- महामंत्री अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन ने अपने उद्बोधन दिए। जय भारत!

-मैंभाहूँ

दैनिक पूर्वोदय

भारत का एक राज्य असम के अखबारों ने भी लिखा....

विस अध्यक्ष व राज्यपाल से मिला 'मैं भारत हूं' फाउंडेशन का प्रतिनिधिदल

गुवाहाटी, 17 अक्टूबर (पू.सं)। 'मैं भारत हूं' फाउंडेशन का एक प्रतिनिधिमंडल फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार जैन (मुंबई) के नेतृत्व में विधानसभा अध्यक्ष विश्वजीत दैमारी से असम विधानसभा भवन में मुलाकात की। इस अवसर पर फाउंडेशन की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा (कोलकाता), स्थानीय प्रतिनिधि में मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा उपस्थित थे। फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार जैन ने विधानसभा अध्यक्ष को स्मारक पत्र एवं फाउंडेशन का साहित्य प्रदान करते हुए उन्हें अवगत कराया कि आज से 3 साल पहले मुंबई में 'मैं भारत हूं' फाउंडेशन का गठन हुआ था। जिसका मुख्य उद्देश्य था कि भारत को केवल भारत ही बोला जाए इंडिया नहीं। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि हम विधानसभा में इसकी चर्चा नहीं करा सकते। अगर कोई विधायक विधानसभा सत्र में इस विषय पर प्रस्ताव दे तो उस पर चर्चा कराई जा सकती है। विधानसभा अध्यक्ष ने आगे कहा कि असमिया लोगों की मानसिकता अब बदल चुकी है। पहले असमिया भारत से नाता नहीं रखना चाहते थे।

पर आज असमिया समाज भारत में पूर्ण रूप से निष्ठा रखता है। वह अपने आप को राष्ट्रवादी समझ रहे हैं। प्रतिनिधि मंडल में संपत मिश्र, रंजू बरड़िया, और ममता दुगड़, पुष्पा सोनी, मंजू दाहीमा, मीना पोद्दार, मोतीलाल जैन, सारिका अग्रवाल, सविता अग्रवाल, सुनीता सराफ के अलावा, संतोष बैद शामिल थे।

इसके पश्चात एक पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने राज भवन में जाकर असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया से भेंट की। उन्हें एक स्मार पत्र प्रदान किया गया। राज्यपाल महोदय ने प्रतिनिधि मंडल को आश्वासन दिया कि इस अभियान में यथासंभव उनका सहयोग रहेगा। इस अभियान को सफल बनाने के लिए कई बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित करने होंगे।

मैं भारत हूं फाउंडेशन का प्रतिनिधिमंडल विधानसभा अध्यक्ष व राज्यपाल से मिला

पूर्वांचल प्रहरी नगर संवाददाता

गुवाहाटी : भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' का एक प्रतिनिधिमंडल फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार जैन (मुंबई) के नेतृत्व में विधानसभा अध्यक्ष विश्वजीत दैमारी से असम विधानसभा भवन में मुलाकात की। इस अवसर पर फाउंडेशन की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा (कोलकाता), स्थानीय प्रतिनिधि में मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा उपस्थित थे। इस अवसर पर फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार जैन ने विधानसभा अध्यक्ष को स्मारक पत्र एवं फाउंडेशन की साहित्य पुस्तिका प्रदान करते हुए उन्हें अवगत कराया कि आज से 3 साल पहले मुंबई में मैं भारत हूं फाउंडेशन का गठन हुआ था। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत को केवल भारत ही बोला जाए इंडिया नहीं है। अभियान का प्रचार पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में करने का शुभारंभ कर दिया गया है। इसी कड़ी में विधानसभा अध्यक्ष श्री दैमारी से अनुरोध है कि इस अभियान में वे अपना मार्गदर्शन प्रतिनिधिमंडल को दे। विधानसभा अध्यक्ष श्री दैमारी ने प्रतिनिधिमंडल से कहा कि इस अभियान की पूरे भारत के साथ असम में भी शुरुआत हो चुकी है। अब तो इसका प्रचार ही काम आएगा। विधानसभा अध्यक्ष निष्पक्ष रहता है। अत: इसमें हमें कई परंपरा का निर्वाह करना पड़ता है। जिसके चलते हम विधानसभा में इसकी चर्चा नहीं कर सकते। प्रतिनिधि मंडल में पत्रकार संपत मिश्र, तेरापंथ महिला मंडल की रंजू बरड़िया और ममता दुगड़, माहेश्वरी महिला समिति की सचिव पुष्पा सोनी, दाधीच महिला समिति की अध्यक्ष मंजू दाहीमा, अग्रवाल महिला समिति की अध्यक्ष मीना पोद्दार, ग्वालपाड़ा से मोतीलाल जैन, राष्ट्रीय सामाजिक विकास की अध्यक्ष सारिका अग्रवाल, सविता अग्रवाल, सुनीता सराफ के अलावा, संतोष बैद उपस्थित थे। इसके पश्चात एक पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने राजभवन में जाकर असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया से भेंट की। उन्हें मैं भारत हूं फाउंडेशन के सौजन्य से भारत को केवल भारत ही बोला जाए इंडिया नहीं, इस संदर्भ में एक स्मारक पत्र प्रदान किया गया। राज्यपाल महोदय ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि इस अभियान में यथासंभव उनका सहयोग रहेगा। इस अभियान को सफल बनाने के लिए कई बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित करने होंगे। उन कार्यक्रमों में हम अपनी उपस्थिति जरूर देंगे।

मैं भारत हूं फाउंडेशन के प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल व विस अध्यक्ष से की मुलाकात

गुवाहाटी, 17 अक्तूबर (ख.सं.)। मैं भारत हूं फाउंडेशन का एक प्रतिनिधिमंडल फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार जैन (मुंबई) के नेतृत्व में विधानसभा अध्यक्ष विश्वजीत दैमारी से असम विधानसभा भवन में मुलाकात की। इस अवसर पर फाउंडेशन की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा (कोलकाता), स्थानीय प्रतिनिधि में मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा उपस्थित थे। इस अवसर पर फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार जैन ने विधानसभा अध्यक्ष को स्मारक पत्र एवं फाउंडेशन की साहित्य पुस्तिका प्रदान की। ज्ञापन में मांग की गई कि भारत को केवल भारत ही बोला जाए इंडिया नहीं। अभियान का प्रचार पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में करने का शुभारंभ कर दिया गया है।इसी कड़ी में विधानसभा अध्यक्ष विश्वजीत दैमारी से भी मुलाकात की। असम और भारतीय संस्कृति का प्राचीन संबंध है। प्रतिनिधि मंडल में पत्रकार संपत मिश्र, तेरापंथ महिला मंडल की रंजू बरडिया, और ममता दुगड, माहेश्वरी महिला समिति की सचिव पुष्पा सोनी, दाधीच महिला समिति की अध्यक्ष मंजू दाहीमा, अग्रवाल महिला समिति की अध्यक्ष मीना पौदार, ग्वालपाड़ा से मोतीलाल जैन, राष्ट्रीय सामाजिक विकास की अध्यक्ष सारिका अग्रवाल, सविता अग्रवाल, सुनीता सराफ के अलावा,संतोष बैद उपस्थित थे। इसके पश्चात एक पांच सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने राज भवन में जाकर असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया से भेंट की। उन्हें मैं भारत हूं फाउंडेशन के सौजन्य से भारत को केवल भारत ही बोला जाए इंडिया नहीं इस संदर्भ में एक स्मारक पत्र प्रदान किया गया। राज्यपाल महोदय ने प्रतिनिधि मंडल को आश्वासन दिया कि इस अभियान में यथासंभव उनका सहयोग रहेगा। इस अभियान को सफल बनाने के लिए कई बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित करने होंगे। उन कार्यक्रमों में हम अपनी उपस्थिति जरूर देंगे।

'एक ईंट-एक रुपये' की भावना

सम्पूर्ण भारत में फैलाना चाहिए

महाराज अग्रसेन अपने युग की एक महान विभूति थे, वे एक कुशल राजनीतिज्ञ थे, पराक्रमी योद्धा थे और प्रजा के हितकारी सहृदय राजा थे। अपनी प्रजा एवं राज्य की सुरक्षा के लिये उन्होंने सुरक्षित अग्रोहा नगर बसाया, सुदृढ़ कोट से घिरा नगर, जिसमें करीब सवा लाख से भी अधिक घरों की बस्ती थी, उनके सबल हाथों में प्रजा सुरक्षित थी, इसीलिए नागरिक निश्चिन्त होकर अपने काम-धन्धे में लगे रहते थे। 'अग्रोहा' पूर्णत: वैश्य-राज्य था, व्यापारियों, किसानों, कर्मकारों, शिल्पकारों और उद्योग-धन्धे करने वालों का राज्य। वैश्य होते हुए भी महाराज अग्रसेन क्षत्रियों से भी अधिक कुशलता से शासन का संचालन करते थे। राज्य दिनों-दिन फल-फूल रहा था। नये-नये उद्योग-धन्धे पनप रहे थे। व्यापार-व्यवसाय उत्तरोत्तर उन्नति कर रहे थे। देश-विदेश में मधुर राजनयिक तथा व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित होते जा रहे थे। दशों दिशाओं से धन-वैभव, सुख-सम्पदा उनके राज्य में बरस रहे थे। 'अग्रोहा' दिन दूनी और रात चौगुनी समृद्धि की ओर बढ़ता ही जा रहा था। अग्रोहा के वैभव और महाराज अग्रसेन की महानता की चर्चा चारों ओर फैल चुकी थी, अन्य राज्यों में बसे वैश्यगण भी इस राज्य की ओर आकर्षित होने लगे, जो सम्पन्न वैश्य अपने को किसी कारणवश कहीं असुरक्षित समझते थे, वे अग्रोहा में आकर बसने लगे।

अन्य राज्यों से उपेक्षित तथा विपन्न वैश्य भी आश्रय पाने के लिए यहाँ आने लगे। वैश्य-नगरी अग्रोहा का विस्तार बढ़ता गया और महाराज अग्रसेन का यश दूर-सुदूर तक फैलता गया।

अग्रोहा में इस प्रकार प्रतिदिन आने वाले वैश्यों के कारण राज्य के सामने उनके पुनर्वास की समस्या खड़ी हो गई। धनवान वैश्यों के सम्बन्ध में तो कोई विशेष अड़चन नहीं थी, उनके आवास के लिए भूमि राज्य की ओर से उपलब्ध करा दी गई। सम्पन्न लोग उस पर अपना भवन बनाकर बस गये तथा उद्योग-व्यवसाय में लग गये, परन्तु निर्धनों की समस्या विकट थी, वे स्वयं विपन्न और असहाय थे, उनके आवास और व्यवसाय का प्रबन्ध आवश्यक था, ऐसा न करने पर राज्य में अव्यवस्था व अराजकता फैलने का डर था।

सहृदय महाराज ऐसे लोगों के राज्य में प्रवेश पर प्रतिबन्ध भी नहीं लगाना चाहते थे पर दु:ख कातर थे महाराज अग्रसेन! वे ऐसे असहायों को शरण तथा आश्रय देना अपना प्रथम कर्त्तव्य एवं परम धर्म मानते थे, अत:लोग आते रहे। राज्य-कोष से उन्हें बसाने तथा धन्धे पर लगाने की व्यवस्था की जाती रही। यह क्रम चलता रहा, परन्तु कब तक? आने वालों की कोई सीमा नहीं थी। धीरे-धीरे राज्य-कोष कम होने लगा, राज्य की आर्थिक स्थिति क्षीण होने लगी।

मन्त्री-परिषद इस स्थिति से चिन्तित थी। राज्य-कोष निरन्तर घट रहा था। स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी थी कि राज्य के आवश्यक कार्यों के लिए भी धन की कमी अनुभव होने लगी। आखिर मन्त्री- परिषद ने यह निर्णय ले ही लिया कि बाहरी लोगों को बसाने के लिए राज्य-कोष से अब और व्यय नहीं किया जा सकेगा, महाराज को इस निर्णय से बड़ा दु:ख हुआ।

असहाय लोगों को सहायता न मिलने से उनका कोमल हृदय व्यथित रहने लगा। राज्यकोष की भी स्थिति दयनीय थी, वे उस पर बलात् और अधिक भार डाल भी नहीं सकते थे, वे उदास तथा चिन्तित रहने लगे।

महाराजा सदा इसी विकट समस्या का समाधान ढूँढने में लगे रहते और रात-दिन वे इसी पर विचार करते रहते थे। विद्वानों-मनीषियों से सलाह मशवरा करते, परन्तु कोई हल नहीं निकल रहा था। व्यथा और चिन्ता से उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। एक दिन दु:खी मन से ही महाराज, नगर की **शेष पृष्ठ १० पर...**

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution
चंपालाल गौड़
नाशिकवाला चंपालाल
गणेशप्रसाद महाराज केटरर्स
लग्न व शुभप्रसंगी गुजराथी, मारवाड़ी, पंजाबी व महाराष्ट्रीयन पद्धतीचे तसेच सर्व पद्धतीचे स्वयंपाक व बुफे डिनरचे कॉन्ट्रॅक्ट स्विकारले जातील
लक्ष्मी निवास (धुमाळ) घर नं. १०१ व १०३, मंगळवार पेठ, शाळा नं. १५ (मुलांची), कमला नेहरू हॉस्पिटलमागे, पुणे, महाराष्ट्र, भारत-४११०११
मो : 9822329509/ 9422316429/9370656509/8055276219
फोनः- 020-26053439

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर
हार्दिक शुभकामनायें
Kailash Garg
Mob: 9323210075

DODAKA CARRYING CORPORATION
207, Doshi Chambers, 29, Nandlal Jani Road,
Poona Street, Masjid East, Mumbai, Bharat- 400009
Tel: 91-22-66349444/ 23780075
E-mail: dodakagroup@hotmail.com

पृष्ठ ९ से... स्थिति देखने के लिए निकल पड़े। घूमते-घूमते वे उधर भी गये जिधर बाहर से आये गरीब वैश्यों का शिविर लगा हुआ था, उनका कष्ट देख महाराज का ह्रदय द्रवित हो उठा। वे रो पड़े उसी समय उन्होंने देखा कि एक परिवार के सदस्य भोजन करने बैठे ही थे कि उनके यहाँ पर अतिथि आ गया। घर में और भोजन नहीं था पर अतिथि को भूखा नहीं रखा जा सकता था। समस्या खड़ी हो गई, परन्तु परिवार वालों ने इसका हल सहज ही निकाल लिया, सभी सदस्यों ने अपने-अपने भोजन में से थोड़ा-थोड़ा निकाल कर अतिथि के लिये भोजन की व्यवस्था कर दी। अतिथि की भरपेट सेवा हो गई और परिवार का कोई सदस्य भी भूखा नहीं रहा। महाराज के मस्तिष्क में सहसा बिजली कौंध गई। अंधेरा छँट गया, जगमग प्रकाश से मन द्युतिमान हो उठा, उन्हें अपनी समस्या का हल मिल गया, वे बड़े प्रसन्नचित हो अपने महल में लौट आये, दूसरे दिन उन्होंने मन्त्री-परिषद तथा नगर के गण्यमान्य महाजनों की बैठक बुलाई, उसमें उन्होंने अपने विचार रखे, उन्होंने प्रस्ताव रखा- ''अग्रोहा के प्रत्येक घर से-बाहर से, आने वाले प्रत्येक परिवार को 'एक रूपया और एक ईंट' का उपहार दिया जाना चाहिए, इससे हमारे नागरिकों पर कोई विशेष भार नहीं पड़ेगा और बाहर से आने वाला परिवार इस सहायता से सम्पन्न हो जाएगा, इस प्रकार हमारे राज्य में बाहर से आने वालों की समस्या हल हो जाएगी। राज्य में अराजकता भी नहीं फैलेगी। असमानता, ऊँच-नीच तथा छोटे-बड़े के विघटनकारी विचार नहीं पनप सकेंगे। भाईचारा बढ़ेगा तथा समाज और देश, सदा एकता के मजबूत सूत्र में बन्धे रहेंगे।

महाराज का प्रस्ताव तथा छोटा सा भाषण, मन्त्री-परिषद व सम्भ्रान्त नागरिकों ने सुना, उन्हें अपने महाराज के विचारों पर गर्व हुआ। समस्या का इतना सरल समाधान पाकर वे सभी हर्षित हो गये।

महाराज का प्रस्ताव सभी ने सर्व-सम्मति से यथारूप में स्वीकार कर लिया। नागरिकों ने कहा- ''महाराज, वैसे भी हम नित्य ही अपने इन गरीब भाइयों को कुछ न कुछ तो देते ही हैं परन्तु वह उनके लिए ठोस सहायता नहीं होती है, इससे उनका मनोबल तो गिरता ही है, उनमें हीन-भावना भी जागृत होती है, आपके प्रस्ताव से हम अपने इन गरीब भाइयों की स्थाई सहायता करने में सफल हो सकेंगे, इस ठोस मदद से वे भी अपने पाँवों पर आप खड़े हो सकेंगे और हमेशा के लिये वे किसी पर आश्रित नहीं रहेंगे, उनमें नए आत्मविश्वास की जागृति होगी और वे भी हमारी ही तरह साधन-सम्पन्न होकर नए उद्योग-व्यवसाय में लगेंगे तो राज्यकोष में भी वृद्धि करेंगे, इस प्रकार हमारा स्वदेश भी समृद्ध तथा सम्पन्न हो जाएगा, महाराज! हम आपके इस अनुपम सुझाव के बड़े आभारी हैं, हम इसी समय से इस सुझाव को कार्य में परिणत करने में जुट जाते हैं'' निर्णय हो गया।

समस्या के सहज समाधान ने सबको प्रसन्न कर दिया, खुशी-खुशी सभी लोग कार्य में जुट गये। राज्य की ओर से उचित आवासीय भूमि की व्यवस्था कर दी गई, नागरिकों ने आये हुए, प्रत्येक परिवार को प्रत्येक घर से 'एक-एक रूपया तथा एक-एक ईंट' इकट्ठे करके दे दिए, सभी विस्थापितों का पुनर्वास हो गया, वे भी सभी सम्पन्न हो गये, अपने निजी व्यवसाय में जुट गये और महाराज अग्रसेनजी की प्रशस्ति के गीत गाने लगे, इसके बाद से अग्रोहा में यह परम्परा चल पड़ी। बाहर से आकर बसने वाले किसी भी परिवार को प्रत्येक घर से 'एक रूपया व एक ईंट' का उपहार मिलता तो अग्रोहा में आते ही कंगाल भी अमीर बन जाता और वह उम्र-भर अग्रोहा तथा अग्रसेन के गुण गाता था। विश्व में समाजवाद का पहला पाठ पढ़ाने वाले अग्रसेन महाराज अग्रवालों के आदिपुरूष माने जाते हैं, उनके नाम से आज भी प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ला प्रथमा को श्री अग्रसेन-जयन्ती, देश-भर में बड़ी धूम-धाम से मनाई जाती है। महाराजा अग्रसेन जयन्ति पर्व पर 'मैं भारत हूँ' के प्रबुद्ध पाठकों व समस्त अग्र बंधुओं को मेरी तरफ से कोटि-कोटि शुभकामनायें।

-बिजय कुमार जैन 'हिंदी सेवी'
राष्ट्रीय अध्यक्ष-मैं भारत हूँ फाउंडेशन

महाराजा अग्रसेन जी की जन्म जयंती के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें
Laxmi Chand Khemka
Purushottamdas Tulsiram
W C & F A- Adani Wilmar Ltd. (Fortune)
● Authorised Distributor ●
Gujarat Co-operative Milk Marketing Fed. Ltd. (Amul)
Agro Tech. Ltd. (Sundrop)
'Khemka Bhawan' , Bihar, Chowk, Satna, Madhya Pradesh, Bharat-485001
Tel.:- 07672 - 226511, 226711, Mobile 94253 30711, 93033 33344

महाराजा श्री अग्रसेन की आरती

(स्तुति)

जय अग्रसेन दाता, स्वामी अग्रसेन दाता
जिस पर कृपा तुम्हारी, सब वैभव पाता
जय अग्रसेन दाता...
महालक्ष्मी के परम हो प्यारे, सबके मन भाता
सत्य संग व्रत लिन्हा, आनंद के दाता
जय अग्रसेन दाता...
सूर्यवंश में जन्म लियों है, जन-जन सुख दाता
वल्लभसेन के पुत्र लाड़ले, भगवती है माता
जय अग्रसेन दाता...
अटल सिंहासन सोहे, सब जन हरषाता
प्रिया माधवी संग में, परमानंद है पाता
जय अग्रसेन दाता...
आग्रेयपुरी की करी स्थापना, विश्व में विख्याता
अग्रवंश के हैं संस्थापक, कष्ट हरो हे दाता
जय अग्रसेन दाता...
अमित प्रभाव तुम्हारो, सब जग विख्याता
सबके कष्ट मिटाओ, शरण में जो है आता
जय अग्रसेन दाता...

अग्रसेन जी के जीवन की शिक्षा हम अपनाएँ
उनके आदर्शों पर चलकर जीवन सुखी बनाएँ
महाराजा अग्रसेन जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

Diamond Beverages Pvt. Ltd.

P41, Taratala Road, Kolkata West Bengal, Bharat - 700088
Phone : 033 - 3987 8207
e-mail: goenka@diamondbev.in

अग्रसेन जी के जीवन की शिक्षा हम अपनाएं
उनके आदर्शों पर चलकर जीवन सुखी बनाएँ
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

KHETAN® GROUP

KHETAN WELPACK PVT. LTD
KHETAN PACKFINE PVT. LTD

(Mfg. Of Corrugated Boxes & Sheets)

Think it. Box it.

khetangroup.in

Registered Ofiice :
145-147, 'Avior' Nirmal Galaxy,
LBS Marg, Mulund (West),
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 080

Khetan Packfine Pvt. Ltd
9/3A , Sarsan Village,
Khopoli Pen Road, Khopoli,
Dist.: Raigad, Maharashtra, Bharat - 410 203

Khetan Welpack Pvt. Ltd
9/3C, Sarsan Village,
Khopoli Pen Road, Khopoli,
Dist.: Raigad, Maharashtra, Bharat - 410 203

Saurabh Khetan 9833517763
Ankit Khetan 84510 45976

Head Office : 022 -2560 1206 / 07/08
e-mail : contact@khetangroup.in

अग्रसेन जी के जीवन की शिक्षा हम अपनाएं
उनके आदर्शों पर चलकर जीवन सुखी बनाएँ
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

सुर्यवंशी अग्रकुल प्रर्वतक महाराजा अग्रसेन

वर्तमान में जहाँ राजस्थान व हरियाणा राज्य हैं किसी समय इन राज्यों के बीच सरस्वती नदी बहती थी, इसी सरस्वती नदी के किनारे प्रतापनगर नामक एक राज्य था। भारतेन्दु हरिशचन्द्र के अनुसार-मांकिल ऋषि जिन्होंने वेद-मंत्र की रचनाएं की थी, की परम्पराओं में राजा धनपाल हुए। धनपाल ने प्रतापनगर राज्य बसाया था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित महालक्ष्मी व्रत कथा और गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा रचित 'अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास' में छपा है कि राजा धनपाल की छठी पीढ़ी में महाराजा वल्लभ प्रतापनगर के शासक बने। महाराजा वल्लभ का काल महाभारत के काल के आसपास का माना जाता है।

महाराजा वल्लभ के घर अग्रसेन और शूरसेन नामक २ पुत्र हुए, युवा अवस्था में पहुंचने पर अग्रसेन प्रतापनगर की शासन व्यवस्था को देखते थे और शूरसेन सैन्य संगठन के कार्य को देखते थे, उनके राज्य में चारों और सुख-शांति थी। दोनों भाईयों में बहुत प्रेम था, अन्य राज्यों में उनके प्रेम के उदाहरण दिए जाते थे। अग्रसेन के जन्म के समय गर्ग ऋषि ने महाराजा वल्लभ से कहा था कि यह बहुत बड़ा राजा बनेगा, इनके राज्य में एक नई शासन व्यवस्था उदय होगी और हजारों-हजार वर्ष बाद भी इसका नाम अमर रहेगा।

माधवी स्वयंवर : अग्रसेन ने जब युवा अवस्था में प्रवेश किया तब नागलोक के राजा कुमुद के यहां से राजकुमारी माधवी के स्वयंवर का समाचार आया, महाराजा ने अपने दोनों पुत्रों अग्रसेन और शूरसेन को इस स्वयंवर में भाग लेने के लिए भेजा, इस स्वयंवर में भू-लोक के ही नहीं अपितु देवलोक से भी अनेक राजकुमार भाग लेने आए थे, इन्द्र भी उनमें से एक थे, राजकुमारी माधवी ने जब स्वयंवर भवन में प्रवेश किया तो उसकी रूप-राशी को देखकर इन्द्र स्तब्ध रह गए, इन्द्र ने देखा कि देवलोक की अप्सराएँ भी राजकुमारी माधवी के सामने कुछ भी नहीं है। स्वयंवर में आए राजाओं व राजकुमारों का राजकुमारी से परिचय समाप्त होने के पश्चात अग्रसेन के गले में स्वयंवर की माला डाल दी गई। नागराज कुमुद अति प्रसन्न हुए। महलों में संख ध्वनि हुई। स्वयंवर में आए राजाओं व राजकुमारों ने अपनी ओर से बधाई और शुभकामनाएँ दीं, किन्तु दूसरी ओर इन्द्र कुपित होकर स्वयंवर स्थान से उठकर चले गए, उन्हें लगा कि माधवी ने अग्रसेन का वरण कर उनका अपमान किया है। महाराजा वल्लभ को भी प्रतापनगर समाचार भेजा गया। महाराजा वल्लभ अति प्रसन्न मन से बारात लेकर नागलोक पहुँचे, इस विवाह से नाग एवं आर्य कुल का नया गठबंधन हुआ था।

देवलोक पहुँचकर इन्द्र ने मन ही मन अग्रसेन से राजकुमारी माधवी को प्राप्त करने का षड़यंत्र रचा, एक तरफ नागलोक में अग्रसेन और माधवी का विवाह हो रहा था, वहीं दूसरी ओर इन्द्र अपने अनुचरों से प्रतापनगर में वर्षा नहीं करने का आदेश दे रहे थे, इन्द्र का मानना था कि जब राज्य में वर्षा नहीं होगी तो सूखे से जनता में त्राहि-त्राहि मचेगी। महाराजा वल्लभ वर्षा का अनुष्ठान करेंगे तब उनके सामने माधवी को मुझे सौंपने की शर्त रख दूंगा।

इन्द्र से संघर्ष : प्रतापनगर में भयंकर अकाल पड़ा, वहां पर त्राहि-त्राहि मच गई, राजा वल्लभ को जब इन्द्र के षड़यंत्र का पता चला तो उन्होंने इन्द्र से संघर्ष करने का निर्णय लिया। अग्रसेन और शूरसेन ने अपने दिव्य शास्त्रों का संज्ञान कर प्रतापनगर को विपत्ति से बचाया। दिव्य अस्त्रों से वर्षा तो खूब हुई लेकिन समस्या का स्थायी समाधान नहीं था? अग्रसेन के मन में एक विचार पैदा हुआ कि मेरे कारण राज्य संकट में आ गया है, अत: मेरा यह धर्म बनता है कि मैं समस्या का स्थायी समाधान करूँ। अग्रसेन ने भगवान शंकर की आराधना करने के लिए वन में जाने का निश्चय कर लिया।

शंकर एवं महालक्ष्मी की आराधना : अग्रसेन ने अपनी भार्या माधवी से सारी बातें कहीं और यह भी कहा कि वह राज्य की सुख-शांति के लिए प्रतापनगर छोड़ेंगे। माधवी ने भी उनके साथ जाने का निश्चय सुनाया किन्तु अग्रसेन ने कहा कि मेरे कारण जो कष्ट राज्य में आया है उसे मैं ही दूर करूँगा। अग्रसेन के संकल्प की जानकारी जब राजा वल्लभ को हुई तो वह बहुत दु:खी हुए उन्होंने अग्रसेन को समझाया कि इस वृद्ध अवस्था में पिता को छोड़कर नहीं जाना चाहिए। अग्रसेन अपने संकल्प के धनी थे, उन्होंने पिता से अनुरोध किया कि छोटा भाई सूरसेन यहां है, वह आपके साथ राज्य के कार्य को देखेगा, माधवी माता-पिता की सेवा में यहीं रहेगी।

शेष पृष्ठ १३ पर...

पृष्ठ १२ से ... भगवान शंकर का नाम लेकर अग्रसेन ने प्रतापनगर से प्रस्थान किया। काशी पहुँचकर वहां पर उन्होंने भगवान शंकर की तपस्या की और उनका आह्वान किया। अग्रसेन की कठिन तपस्या को देखकर भगवान शंकर ने दर्शन दिए। भगवान शंकर ने अग्रसेन से कहा कि तुम्हें अपने राज्य की सुख-समृद्धि के लिए महालक्ष्मी को प्रसन्न करना होगा। महालक्ष्मी समृद्धि की देवी हैं, उनकी समृद्धि के समक्ष इन्द्र भी कुछ नहीं हैं, यह कहकर भगवान शंकर अन्तरध्यान हो गए।

अग्रसेन ने महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए तपस्या करने का निश्चय किया। महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए एक विशाल यज्ञ किया गया, जिसमें उन्होंने ब्राह्मणों को दान दिया और उसके पश्चात् वन में जाकर महालक्ष्मी जी की तपस्या आरम्भ की। महालक्ष्मी प्रसन्न न हो इसके लिए इन्द्र ने अग्रसेन की तपस्या में अनेक बाधाएँ उत्पन्न की किन्तु अग्रसेन तपस्या में लीन रहे। अनेक कठिनाईयां सहते हुए तपस्या जारी रखी। अग्रसेन की अटूट भक्ति को देखते हुए महालक्ष्मी प्रकट हुई, उन्होंने अग्रसेन से कहा कि कुमार यह अवस्था तपस्या करने की नहीं है, इस उम्र में तो आपको त्याग के स्थान पर भोग करना चाहिए।

अग्रसेन माता महालक्ष्मी की अनुपम छवि देखकर अपलक निहारते रहे, उस अदभूत आभा के सामने अग्रसेन कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। महालक्ष्मी ने पुन: कहा, 'हे राजकुमार! तुम्हारी कठिन साधना पूर्ण हुई, संकट के दिन बीत गए, वरदान मांगो'

अग्रसेन बोले 'हे मातेश्वरी आप सारे संसार का कल्याण करने वाली हैं, आप परमशक्ति हैं, आपसे क्या छुपा हुआ है, आप शक्ति की प्रतीक हैं एवं भक्ति

की दाता हैं, मैं आपको बार-बार नमन करता हूँ'

महालक्ष्मी बोली, 'हे अग्रसेन! तुम यह कठिन तपस्या का मार्ग त्यागकर ग्रहस्थ धर्म में पुन: प्रवेश करो, इसी में तुम्हारा कल्याण है। मैं तुम्हें वरदान देती हूँ कि तुम्हारे सभी मनोरथ सिद्ध होंगे, तुम्हारे द्वारा सबका मंगल होगा।'

इस पर अग्रसेन बोले, 'हे मातेश्वरी! मेरी समस्या यह है कि इन्द्र ने मेरे राज्य में वर्षा बंद कर अकाल की काली छाया से सबको दुखी कर रखा है'

महालक्ष्मी ने कहा, 'इन्द्र को अमरत्व प्राप्त है, साथ ही साथ वह ईर्ष्यालु भी है। आर्य और नागवंश की संधि और राजकुमारी माधवी के सौन्दर्य ने उसको दु:खी कर दिया है, तुम्हें कूटनीति अपनानी होगी, कोलापुर के राजा ने अपनी पुत्री के लिए स्वयंवर रचा है, कोलापुर के राजा भी नागवंशी हैं, यदि तुम उनकी पुत्री का वरण कर लेते हो तो नागराज कुमुद के साथ-साथ कोलापुर नरेश की महीरथ शक्तियाँ भी तुम्हें प्राप्त हो जाएंगी, इन शक्तियों शेष पृष्ठ १४ पर...

अग्रसेन जी के जीवन की शिक्षा हम अपनायें
उनके आदर्शों पर चलकर जीवन सुखी बनाएँ
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनायें

Dinanath Pasari
Mob. : 9830018193
Narayani Sons India Pvt. Ltd.
Station Road, Mu.Po. Barbil, Dist. Kendujhar,
Odisha, Bharat- 758035
Ph. : 06767- 275235/276833
Kolkata 2D, Gardenia House 227/1A, J C Bose Road,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700020 Ph.: 033- 22836942

जन-जन के सरताज महाराजा अग्रसेन जयंती पर
समस्त 'मैं भारत हूँ' के प्रबुद्ध पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

Brijmohan Agrawal
Mob : 9825118396
Shree Kay Tex Processors Pvt Ltd
W-2209, Surat Textile Market,
Ring Road, Surat,
Gujarat, Bharat- 395002
Email: sktppl287@gmail.com

पृष्ठ १३ से ... के समक्ष इन्द्र को तुम्हारे सामने आने के लिए अनेक बार सोचना पड़ेगा? तुम निडर होकर अपने नए राज्य की स्थापना करो, तुम्हारे राज्य में कोई भी दु:खी नहीं होगा, 'यह कहकर महालक्ष्मी अन्तरध्यान हो गईं, अग्रसेन बार-बार उस पावन भूमि को प्रणाम करने लगे, जहाँ पर माता महालक्ष्मी के चरण-कमल पड़े थे, उसी समय महर्षि नारद प्रकट हुए। नारद को देख अग्रसेन ने प्रणाम किया। महालक्ष्मी द्वारा दिए वरदान से नारद को अवगत कराया और बोले, 'हे महर्षि! माता महालक्ष्मी के आदेश को पालन करने में मेरा मार्ग दर्शन करें और कोलापुर की यात्रा के लिए मुझे भी अपने साथ ले चलें नारद ने अग्रसेन को साथ लेकर कोलापुर के लिए प्रस्थान किया।

सुन्दरावती स्वयंवर: अग्रसेन महर्षि नारद के साथ कोलापुर पहुँचे। कोलापुर में नागराज महीरथ का शासन था, उन्होंने देखा कोलापुर, इन्द्र की अल्कापुरी को भी मात दे रहा था। सम्पूर्ण कोलापुर नगरी राजकुमारी सुन्दरावती के स्वयंवर में आनेवाले अतिथियों के सम्मान में जुटी हुई थी। नागकुमारी की चर्चा जगह-जगह हो रही थी। नागरिक बातों ही बातों में उस व्यक्ति को भाग्यशाली बता रहे थे जिसको राजकुमारी सुंदरावती वरण करने वाली थी।

कोलापुर नगर के मध्य पहुंचने पर महर्षि नारद ने अग्रसेन से कहा कि अब आप अकेले ही रंगशाला में जाएँ। महर्षि को प्रणाम कर अग्रसेन स्वयंवर वाले स्थान पर पहुँचे, अग्रसेन ने वहाँ पर देखा कि भिन्न-भिन्न देशों के राजकुमार स्वयंवर में आए हुए हैं। वेष वदलकर अनेक गंधर्व व देवता भी राजकुमारी को वरण करने के लिए लालायित होकर इस स्वयंवर में भाग ले रहे थे। शूरसेन भी वहां विराजमान थे। अग्रसेन को देखते ही शूरसेन अपने आसन से खड़े हो गए, उन्होंने अपने अग्रज को प्रणाम कर बैठने के लिए स्थान दिया। अग्रसेन ने शूरसेन से महालक्ष्मी द्वारा दिए गए आशीर्वाद की चर्चा की और शूरसेन को इस बात के लिए आश्वस्त किया कि सुन्दरावती के साथ विवाह करने से माधवी के साथ कोई अन्याय नहीं होगा, मेरे लिए माधवी और सुन्दरावती दोनों ही बराबर रहेंगी। शूरसेन ने अपने अग्रज को कहा कि वे अब स्वयंवर में भाग नहीं लेंगे,

इसी बीच नागकन्या सुन्दरावती ने रंगशाला में प्रवेश किया। कोलापुर राज्य के महामंत्री ने वहां उपस्थित सभी स्वयंवर प्रतियोगियों का परिचय कराया। नागकन्या सुन्दरावती ने जब अग्रसेन को देखा तो ऐसा लगा कि वह ही उसके स्वामी हैं, जिनको वह हर जन्म में वरण करती आई है। मन ही मन नागकन्या ने भगवान शंकर को प्रणाम किया और अग्रसेन के आसन की ओर बढ़ चली। अग्रसेन के समक्ष जाकर सुन्दरावती ने अपनी वरमाला उनके गले में डाल दी। वरमाला डालते ही महल में नगाड़े बजने लगे, शंख की ध्वनि हुई। शूरसेन ने बड़े भाई अग्रसेन को प्रणाम कर बधाई दी।

नागराज महीरथ ने तुरन्त ही देश वाहक को प्रतापनगर भेजा और महाराज वल्लभ से बारात लेकर आने का अनुरोध किया। अग्रसेन और सुन्दरावती के विधिवत विवाह के पश्चात विदाई के समय नागराज कुमुद और नागराज महीरथ ने महाराजा वल्लभ से कहा, 'एक ही परिवार में दो-दो नाग कन्याओं

का वरण कर आपने नागवंश के प्रति जो स्नेह दिखाया है, उसके लिए हम आपके हमेशा आभारी रहेंगे, हम दोनों आपके साथ संकट की इस घड़ी में कंधा मिलाकर चलने का वचन देते हैं, यह दो परिवारों का मिलन नहीं अपितु दो संस्कृतियों का मिलन है' शेष पृष्ठ १५ पर...

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनायें

Mahabir Prasad Jalan

Ramkrishna Forgings Ltd.

23 Circus Avenue, 9th Floor
Kolkata, West Bengal, Bharat-700017
Ph : 033-71220900
Secretary.cmd@ramkrishnaforgings.com

पृष्ठ १४ से... महाराजा वल्लभ ने दोनों नाग राजाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा, 'अग्रसेन के पैदा होने के समय ही यह बात सामने आ गई थी कि मेरा पुत्र संसार में अपनी छाप छोड़ेगा, आप लोगों से मिलन, इसी शृंखला की कड़ी है' महाराजा वल्लभ की बातें सुनकर दोनों नाग राजाओं ने उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए पुन: प्रणाम किया, इसके पश्चात महाराजा वल्लभ ने सभी के साथ प्रतापनगर के लिए प्रस्थान किया।

अग्रसेन इन्द्र मैत्री : दो-दो नागवंशों से संबंध स्थापित करने के बाद महाराजा वल्लभ के राज्य में अपार सुख-समृद्धि व्याप्त हो गई। शासन व्यवस्था से प्रजा भी संतुष्ट थी, वहां महाराजा वल्लभ और उनकी पत्नी महारानी अपने दोनों पुत्रों की सेवा से हमेशा प्रसन्न रहते थे। प्रतापनगर की सुख-समृद्धि देखकर इन्द्र के मन में पैदा हुई ईर्ष्या की भावना और भी बलवान हो रही थी लेकिन इन्द्र का वश नहीं चल रहा था, इन्द्र को ईर्ष्या की अग्नि में जलते देख उसकी पत्नी शची ने कहा कि आपको अग्रसेन से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए, आप माधवी को अपनी बहन बनाएं और अग्रसेन को मित्र, इससे जहां आपके मन की विरह व्यथा भी समाप्त होगी और प्रतापनगर और देवलोक के बीच प्रतिदिन होनेवाले विवाद भी समाप्त हो जायेंगे।

इन्द्र को अपनी रानी शची का सुझाव अच्छा लगा, उन्होंने महर्षि नारद को बुलाया और अग्रसेन से संधि करने की बात कही। महर्षि नारद ने कहा, 'देव आपका सुझाव बहुत अच्छा है, आज जब सुर-असुर के संघर्ष से ही देवलोक त्रस्त है ऐसे में प्रतापनगर से संधि करना देवलोक के हित में ही होगा'

इन्द्र का संदेश लेकर महर्षि नारद प्रतापनगर पहुँचे। महर्षि नारद को अपने बीच पाकर राजा वल्लभ अति प्रसन्न हुए, उन्होंने उनको उचित सम्मान के साथ आसन पर बैठाया और अभिनन्दन किया। महर्षि नारद ने महाराजा वल्लभ से कहा, 'मैं आपके लिए शुभ समाचार लेकर आया हूँ' महर्षि नारद ने इन्द्र का संधि प्रस्ताव महाराजा वल्लभ के सामने रखा और कहा कि इन्द्र माधवी से क्षमा मांगने के लिए तैयार है। नारद का प्रस्ताव सुनकर महाराजा वल्लभ का मुख कमल की तरह खिल उठा, उन्होंने प्रस्ताव पर अपनी सहमति जताते हुए, इन्द्र को प्रतापनगर आने का निमंत्रण दिया, महाराजा वल्लभ का निमंत्रण लेकर नारद ने देवलोक के लिए प्रस्थान किया।

इन्द्र के आगमन पर प्रतापनगर को बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया। सुगंधित फूलों से सारा प्रतापनगर महक रहा था, विभिन्न रंगों के झरने बह रहे थे। स्वयं अग्रसेन ने नगर के बाहर मुख्य द्वार पर इन्द्र की अगवानी की, उन्हें बहुत ही सम्मान के साथ राजमहल में लाया गया।

महाराजा वल्लभ ने अपने साथ इन्द्र के लिए एक नया आसन लगवाया था, इन्द्र को अपने बराबर बैठाकर महाराजा वल्लभ ने यह संदेश दिया कि उनके मन में इन्द्र के प्रति कोई भी दुर्भाव नहीं है, इन्द्र ने अपनी भूलों के प्रति खेद प्रकट करते हुए माधवी से क्षमा मांगी और कहा कि आज जो संधि हमलोगों के बीच में हुई है वह संधि आपके वंशजों को हमेशा एक विशेष स्थान दिलाती रहेगी, (आज भी अग्रवाल समाज में जब विवाह होता है तो वर के द्वारा छत्र व चंवर का प्रयोग उसी परम्परा का प्रतीक है)

अग्रसेन और इन्द्र आपस में गले मिले, माधवी ने इन्द्र की आरती उतारी। आरती उतार कर उनका तिलक किया, इन्द्र ने उन्हें अखंड सौभाग्यवती रहने और पुत्रवती होने का वर दिया। इन्द्र ने माधवी को आशीर्वाद दिया कि उसके मन में अग्रसेन के प्रति हमेशा अनुराग बना रहे, इसके साथ ही इन्द्र ने वहां से विदा ली, महाराजा वल्लभ, अपने दोनों पुत्रों के साथ महल से बाहर आये और इन्द्र को विदाई दी।

शूरसेन विवाह : इन्द्र और अग्रसेन की मैत्री के समाचार से प्रतापनगर के अधिपत्य का प्रभाव बढ़ा। मंदाकिनी के किनारे बसे **शेष पृष्ठ १६ पर...**

पृष्ठ १५ से... यक्ष राजा को इन्द्र-अग्रसेन मैत्री का संवाद प्राप्त हुआ, उसने महाराजा वल्लभ से अपनी पुत्री सुपात्रा का सूरसेन से विवाह की चर्चा की, युवराज अग्रसेन ने कहा कि प्रतापनगर और नागलोक की संधि से हम शक्तिशाली हुए हैं, यदि यक्षराज की पुत्री का शूरसेन से विवाह होता है तो हिमालय पर्वत के इलाके में बसे सभी राज्य प्रतापनगर का लोहा मानने लग जायेंगे। महाराजा वल्लभ ने यशराज के प्रस्ताव को तुरन्त ही स्वीकार कर लिया, कुछ ही समय पश्चात शूरसेन का विवाह यक्ष कन्या सुपात्रा के साथ हो गया, इस तरह से महाराजा वल्लभ ने विभिन्न संस्कृतियों के साथ संबंध स्थापित कर एक नए इतिहास की रचना की।

महाराजा वल्लभ वृद्ध होते जा रहे थे, अत: उन्होंने निश्चय किया कि वह प्रतापनगर का राज्य अग्रसेन का सौंपकर वन की ओर प्रस्थान करेंगे, उन्होंने अग्रसेन और शूरसेन को बुलाकर अपना निश्चय बताया, इस पर अग्रसेन ने कहा, 'मैं पहले पूरे आर्यवर्त का भ्रमण करूँगा, उसके पश्चात् ही राज्य का भार सम्भालने के लिए सोचुँगा' अग्रसेन ने अपने पिता से अनुरोध किया कि 'जब तक मैं बाहर रहूँ शूरसेन ही राज्य की देखभाल करेगा' महाराजा वल्लभ और उनकी पत्नी ने अनिच्छा से अग्रसेन, माधवी और सुन्दरावती को भारत दर्शन के लिए विदा किया।

अग्रसेन ने अपनी दोनों पत्नियों के साथ दक्षिण के सभी तीर्थ स्थानों की यात्रा की, इस यात्रा के दौरान उन्हें अनेक प्रकार के अनुभव हुए। यात्रा के मध्य ही उन्हें महाराजा वल्लभ के अस्वस्थ होने का समाचार मिला, पिता के कुशल-मंगल रहने की प्रार्थना करने के साथ-साथ अग्रसेन ने अपनी यात्रा अधूरी छोड़कर प्रतापनगर के लिए प्रस्थान किया।

महाराजा वल्लभ का निधन : पिता के कुशलमंगल होने की भगवान से प्रार्थना करते हुए अग्रसेन जल्द प्रताप नगर पहुँचने को उत्सुक थे, वह कम से कम पड़ाव डालते हुए प्रतापनगर पहुँचे। अग्रसेन एवं दोनों रानियों को देखकर महाराजा वल्लभ और महारानी अति प्रसन्न हुए। महाराजा वल्लभ का बहुत अच्छे वैद्य से उपचार चल रहा था किन्तु होनी को कौन टाल सकता है। महाराजा वल्लभ का अंतिम समय आ गया था, उन्होंने अपने सभी परिजनों को बुलाकर उनसे विदा मांगी और अपना नश्वर देह त्याग दिया।

गया में पिण्डदान : अग्रसेन ने शासन के सभी कार्य शूरसेन को सौंपकर महाराजा वल्लभ की प्रथम पुण्य तिथि पर गया में श्राद्ध करने का निश्चय किया, एक बार पुन: माता वल्लभी के साथ, अग्रसेन और दोनों रानियों ने प्रतापनगर से विदा ली, रास्ते में अनेक तीर्थों के दर्शन करते हुए वे सेवकों के साथ गया पहुँचे। गया पहूँच कर अग्रसेन ने सरयू नदी के किनारे अपना पड़ाव डाला और गौड़ पुरोहित को बुलाकर अपने पिता का पिण्डदान किया, पूरे श्राद्ध पक्ष में उन्होंने अपने सभी पितरों को आह्वान कर पिण्ड दान किया, अग्रसेन अति प्रसन्न थे कि उन्होंने अपने सभी पितरों को पिण्ड दान कर बार-बार जन्म लेने वाली योनि से मुक्त करा दिया।

लोहागढ़ यात्रा : गया से प्रारम्भ करते समय माता वल्लभी ने अग्रसेन को लोहागढ़ में जाकर महाराजा वल्लभ को पिण्डदान देने का सुझाव देते हुए कहा कि लोहागढ़ में पिण्डदान के बिना महाराजा वल्लभ को योनिचक्र से मुक्ति नहीं मिलेगी, अग्रसेन ने लोहागढ की ओर प्रस्थान किया, लोहागढ़ में जाकर उन्होंने एक माह का प्रवास किया, वहां पर उन्होंने सभी कर्मकाण्ड पूरे कर अपने पिता का पिण्डदान किया।

एक माह की लम्बी साधना से महाराजा वल्लभ ने उन्हें दर्शन दिए और कहा! हे पुत्र तुम्हारी साधना व लोहागढ़ में पिण्डदान से मुझे बार-बार जन्म लेने वाली योनि से मुक्ति मिली है और मुझे स्वर्ग में स्थान प्राप्त हो गया है, मेरा आशीर्वाद हर समय तुम्हारे साथ है, तुम यहां से आगे बढ़ो और सरस्वती व यमुना नदी के बीच एक वीर भूमि तुम्हें मिलेगी, उसी वीर भूमि पर एक नए राज्य का निर्माण करो' माता वल्लभी, अग्रसेन, दोनों रानियां माधवी व सुन्दरावती ने महाराजा वल्लभ को प्रणाम किया तथा लोहागढ़ से उस वीर धरा को खोजने चले, जिसकी महाराजा वल्लभ ने चर्चा की थी।

अग्रोहा निर्माण : लोहागढ़ सीमा से निकलकर अग्रसेन ने पंचनद (वर्तमान में पंजाब) राज्य में प्रवेश किया, पंचनद में एक स्थान पर उन्होंने एक सिंहनी को शावक (हाल ही में जन्मा शेर बालक) को साथ खेलते देखा। अग्रसेन अपने गजराज पर बैठे उस शावक को देख रहे थे अचानक **शेष पृष्ठ १७ पर...**

तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता।
तुमको सब कुछ खुद अंदर से सीखना है। आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है।

Rajendra Prasad Mody
Mob: 9831999999
Hindusthan Engineering & Industries Limited
Mody Building, 27, R.N. Mukherjee Road,
Kolkata, West Bengal,Bharat-700001
Ph.: 033 2248 0682
e-mail: rpm@heilindia.com

पृष्ठ १६ से ... ही शावक उछला और गजराज के मस्तक पर आ बैठा। शावक को अचानक अपनी ओर उछल कर आते देख महावत भी नीचे गिर पड़ा। अग्रसेन ने शावक को उछलते हुए, महावत को गिरते हुए देखकर उन्हें अपने पिता की वह बात याद आ गई जिसमें उन्होंने वीर धरा पर एक नया राज्य बसाने की बात कही थी, वे वहीं गजराज से उतर पड़े, अपने साथ चल रहे ज्योतिषियों और पंडितों से उस स्थान के बारे में चर्चा की, सभी ने एकमत से कहा कि यह भूमि न केवल वीरभूमि है बल्कि चारों और हरी-भरी होने से कृषि उपज भी बहुत अच्छी होगी। अग्रसेन ने अपने सहयोगियों के साथ आसपास के क्षेत्रों का भी भ्रमण किया और उन्होंने देखा कि हर स्तर पर इस भूमि पर एक सुव्यवस्थित राज्य की स्थापना हो सकती है। प्रताप नगर से शूरसेन को बुलाया गया। पुरोहित व ऋषियों को बुलाकर सबसे पहले यज्ञ किया। यज्ञ के पश्चात भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ। भवन निर्माण के कार्य प्रारम्भ के साथ ही उस वीर प्रसूता भूमि पर अग्रसेन ने अपना ध्वज फहराया। ध्वज फहराने के साथ ही अग्रसेन महाराजा बन गए, उन्होंने अपने भाई शूरसेन को तिलक कर प्रतापनगर प्रस्थान का आदेश दिया और कहा, 'आज से प्रतापनगर के तुम ही स्वामी हो, वहां के शासक के रूप में राज्य करो। राज्य व्यवस्था ऐसी सुदृढ़ और सुव्यवस्थित बनाओ जिससे राज्य की रक्षा के साथ-साथ प्रजा भी सुख-शांति से रह सके' महाराजा अग्रसेन का आशीर्वाद पाकर शूरसेन ने प्रतापनगर के लिए प्रस्थान किया।

महाराजा अग्रसेन अपनी नई राजधानी को बसाने में पूरा ध्यान दे रहे थे। हर आगंतुक उनके लिए एक सम्मानित व्यक्ति था, लोकोक्ति एवं भाटों के गीतों के अनुसार उस समय महाराजा अग्रसेन ने १८ बस्तियां बसाई थीं। ऋषि-मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नए राज्य का नाम आग्रेयगण (जिसे आज अग्रोहा के नाम से जाना जाता है) रखा गया और राजधानी का नाम अग्रोदक रखा गया। महाराजा अग्रसेन ने सभी प्रजाजनों को सुखी और सम्पन्न बनाने के लिए शासन से सभी तरह की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाई। प्रजाजन भी महाराजा अग्रसेन के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे। राज्य में 'जिओ और जीने दो' की कहावत पूरी तरह से चरितार्थ हो रही थी। महाराजा अग्रसेन की शासन व्यवस्था से पड़ोस के दूसरे राज्य भी अपने यहां पर अग्रोदक के समान नई व्यवस्था लागू कर रहे थे, अपने नए राज्य में अग्रसेन बहुत ही प्रसन्न थे।

विश्वमित्र का आगमन : महाराजा अग्रसेन राजदरबार में बैठे हुए थे, मंत्रीगण आपस में चर्चा कर रहे थे। महाराजा अग्रसेन शासन का काम-काज तो बराबर देखते ही थे, लेकिन रह-रह कर उन्हें परशुराम का श्राप याद आ जाता। श्राप के कारण वह चिंतित से रहने लगे थे एक दिन दरबान ने **शेष पृष्ठ १८ पर...**

अग्रसेन तो ज्योति किरण हैं मानवता की मूरत है
उनकी वाणी अजर अमर है आज की जरूरत है
महाराजा अग्रसेन जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

VIJAY MURARKA
(Managing Director)
Mob. : 9303320131/8770402286

EDICE INFRASTRUCTURE (P) LTD.

Mig 49, Bandhavgarh Colony,
Satna, M. P.- 485001
email:- Ediceinfra@gmail.com

पृष्ठ १७ से... आकर ऋषि विश्वमित्र के आगमन की सूचना दी। ऋषि के आगमन की सूचना पाकर महाराजा अग्रसेन नंगे पांव उनकी अगवानी के लिए बाहर आए। उनको स-सम्मान लाकर राजदरबार के उच्च आसन पर बैठाया और उनकी चरण वंदना की। ऋषि विश्वमित्र ने देखा कि महाराजा अग्रसेन के मन में जितना उत्साह है उतना उनके चेहरे पर तेज नहीं है?

ऋषि विश्वमित्र ने महाराजा अग्रसेन से पूछा कि 'नरेश आपके मुख-मण्डल पर जो तेज होना चाहिए वह क्यों नहीं है' महाराजा अग्रसेन ने परशुराम से सामना होने व उनके द्वारा दिए गए श्राप की सारी घटना बताई, ऋषि विश्वमित्र ने कहा कि आर्य शत्रु को आप अपने बुद्धि बल से हराओ न कि शक्ति से, आपको पुन: कुलदेवी महालक्ष्मी की तपस्या करनी होगी और उनसे इस श्राप से मुक्त होने का वरदान मांगना होगा, यही आपकी समस्या का उचित समाधान है, आप यमुना के किनारे दोनों नासुताओं के साथ विष्णुप्रिया का ध्यान करें और उनसे संतान प्राप्ति का वरदान लें।

महालक्ष्मी की आराधना : अग्रसेन ने विश्वमित्र का मार्ग-दर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। यमुना के किनारे एक स्वच्छ जगह देखकर महाराजा अग्रसेन ने अपने लिए कुटिया बनवाई, वहां पर सभी ऋषि-मुनियों को निमंत्रित कर एक विशाल यज्ञ किया। यज्ञ सम्पन्न होने के पश्चात महाराजा अग्रसेन और दोनों रानियों ने निराहार रहने का संकल्प कर महालक्ष्मी के ध्यान में बैठ गए। महाराजा अग्रसेन और दोनों रानियों की कठिन तपस्या को देखकर महालक्ष्मी प्रकट हुईं। महालक्ष्मी ने अग्रसेन से वरदान मांगने को कहा। महाराजा अग्रसेन और दोनों रानियों ने विष्णुप्रिया को प्रणाम कर संतान का आशीर्वाद मांगा। महालक्ष्मी बोली, 'मैं आप लोगों की तपस्या से बहुत प्रसन्न हूँ और अपना

आशीर्वाद देती हूँ कि आपको जो संतान प्राप्त होगी वह युगो-युगो तक आपको अमर कर देगी, जब तक आपकी संतान मेरी पूजा करती रहेगी, तब तक आपके परिवार पर मेरी कृपा दृष्टि बनी रहेगी।'

महालक्ष्मी का वरदान पाते ही श्राप की काली छाया समाप्त हो गई। महाराजा अग्रसेन, महारानी माधवी और सुन्दरावती तीनों ने आहार ग्रहण किया और अग्रोहा की ओर प्रस्थान करने का निश्चय किया।

बनवास गमन: अश्वमेघ यज्ञ के १०८ वर्ष पश्चात महाराजा अग्रसेन ने विभु को शासन व्यवस्था सौंपकर दोनों महारानियों के साथ वन की ओर प्रस्थान कर लिया, अनेकों वर्ष वन में सन्यासी बन कर रहे और उनके पुण्य कार्यों के परिणाम स्वरूप आदिपिता ब्रह्मा ने महाराजा अग्रसेन व दोनों महारानियों को स्वर्ग में स्थायी स्थान प्रदान कर 'अग्रोहा' पर उपकार किया।

नार्थ लखीमपुर का इतिहास

असम राज्य का एक प्रशासनिक जिला 'लखीमपुर' असम के पूर्वोत्तर कोने पर स्थित है। जिला मुख्यालय उत्तरी लखीमपुर में स्थित है। जिले के उत्तर में अरुणाचल प्रदेश का सियांग और पापुमपारे जिला है, पूर्व में धेमाजी जिला और सुबनसिरी नदी है, जिले के दक्षिणी हिस्से में जोरहाट जिले का 'माजुली' उपमंडल है और जिले के पश्चिम में गहपुर है सोनितपुर जिले का उप प्रभाग है।

लखीमपुर नाम का महत्व

इस स्थान का नाम 'लखीमपुर' दो शब्दों 'लक्ष्मी' और 'पुर' से मिलकर बना है। असमिया में 'लक्ष्मी' धन और समृद्धि की देवी है (धान को स्थानीय रूप से लक्ष्मी भी माना जाता है क्योंकि यह क्षेत्र पूरी तरह से कृषि और धान पर निर्भर है) जबकि 'पुर' का अर्थ है 'पूर्ण', इसलिए 'लखीमपुर' नाम का अर्थ है धान से भरा स्थान या वह स्थान जहाँ धान प्रचुर मात्रा में उगाया जाता है।

लखीमपुर का ऐतिहासिक अतीत

'लखीमपुर' को प्रथम स्थान के रूप में लिया जाता है जहाँ पूर्व से आक्रमणकारियों ने सबसे पहले ब्रह्मपुत्र में कदम रखा था। उस समय के दौरान, एक शान जाति, सुतिया ने, बारो भुइयां को बाहर निकाल दिया, जो मूल रूप से भारत के पश्चिमी प्रांतों से थे और उन्होंने १३ वीं शताब्दी में अपने अधिक शक्तिशाली भाइयों 'अहोमों' को जगह दी। यंदाबू की संधि के तहत अंग्रेजों ने १८२६ में बर्मी लोगों को निष्कासित कर दिया, जिन्होंने १८वीं सदी के अंत में देशी राज्यों को बर्बाद कर दिया था। हालांकि उन्होंने शिवसागर के साथ राज्य के दक्षिणी हिस्से को राजा पुरंधर सिंह के शासन के अधीन कर दिया। १८३८ तक ऐसा कभी नहीं हुआ था कि संपूर्ण जिले को सीधे ब्रिटिश प्रशासन के अधीन ले लिया गया था।

उस समय के दौरान 'लखीमपुर' जिले के अंतर्गत अरुणाचल प्रदेश के कई अन्य जिले हुआ करते थे और तब इसे 'लखीमपुर फ्रंटियर ट्रैक्ट' के रूप में जाना जाता था। बाद में भारत की स्वतंत्रता के बाद जिले में वर्तमान डिब्रूगढ़ जिला, धेमाजी जिला और तिनसुकिया जिला शामिल थे और जिले का मुख्यालय 'डिब्रूगढ़' में स्थित था। वर्ष १९७६ में डिब्रूगढ़ जिले को लखीमपुर से अलग कर दिया गया, इसे १४ अक्टूबर १९८९ को दोहराया गया, जब 'धेमाजी' को एक नया जिला बनाया गया, अंततः तिनसुकिया को एक अलग जिला बना दिया गया और फिर 'लखीमपुर' जिले को एक स्वतंत्र जिला बना दिया गया। वर्ष १९८९ में 'लखीमपुर' जिले को दो उपविभागों अर्थात् ढकुआखाना और उत्तरी लखीमपुर के साथ मान्यता दी गई थी।

लखीमपुर जिले को पहले 'कोलियापानी' कहा जाता था, क्योंकि १९५० तक जिले के लिए व्यावहारिक रूप से कोई सड़क संपर्क नहीं था, बाद में वर्ष १९५४ में यहां अस्थायी हवाई अड्डा शुरू किया गया, अंततः समय के साथ जिले में परिवहन का विकास शुरू हुआ और १९५७ **शेष पृष्ठ २० पर...**

पृष्ठ १९ से ... से असम राज्य परिवहन निगम की बसें 'लखीमपुर' से चलनी शुरू हो गईं। नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर रेलवे ने १९६३ से ट्रेन सेवाएं शुरू कीं।

वर्तमान में 'लखीमपुर' एक जिला है जिसका मुख्यालय उत्तरी लखीमपुर में स्थित है। 'उत्तरी लखीमपुर' शहर का नाम भी है। वर्तमान में यहां चार असम विधान सभा क्षेत्र हैं जिनके नाम हैं-लखीमपुर, ढकुआखाना, बिहपुरिया और नाओबैचा।

लेटेकुपुखुरी

'लेटेकुपुखुरी' नारायणपुर शहर में स्थित है। नारायणपुर माधवदेव के जन्मस्थान के रूप में प्रसिद्ध है। नारायणपुर, जिसे मूल रूप से बोर-नारायणपुर (महान नारायणपुर) के नाम से जाना जाता है, कामता साम्राज्य के समय से एक ऐतिहासिक स्थान है। नारायणपुर को पहले बोर-नारायणपुर के नाम से जाना जाता था, इसका विस्तार सोनितपुर जिले के 'कोलाबारी' क्षेत्र तक किया गया था, इस स्थान की उत्पत्ति के साथ-साथ इसके नाम की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न इतिहास लेखकों के अलग-अलग विचार थे। यह कभी चुटिया राजा सत्यनारायण की राजधानी थी, कुछ अन्य लोगों का मानना है कि कोच राजा नारायणन ने इस स्थान को एक चौकी के रूप में इस्तेमाल किया था, इसीलिए इसका नाम 'नारायणपुर' हो गया।

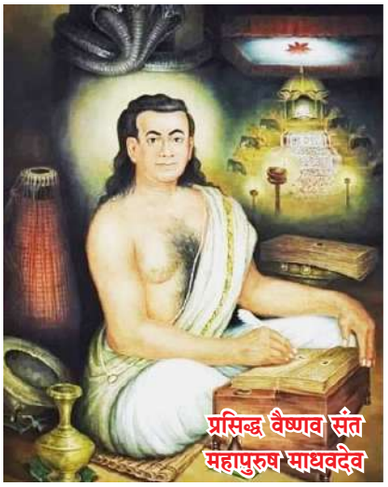
प्रसिद्ध वैष्णव संत महापुरुष माधवदेव

'लेटेकुपुखुरी' बहुत ही शांतिपूर्ण और लुभावनी जगहों में से एक है और कई पर्यटक असम के उत्तरी लखीमपुर की इस खूबसूरत जगह को देखने आते हैं। उत्तरी लखीमपुर और उसके आसपास देखने के लिए कई जगहें हैं जैसे पाभा या मिलरॉय अभयारण्य, नरूआ सत्रा और एक वास्तविक स्थान भी है यहां सुंदर और बड़ा नामघर है, यहां ५८० साल पुराना पेड़ भी देखा जा सकता है। बच्चों के लिए एक छोटा सा पार्क 'उत्तरी लखीमपुर' असम के जिलों में से एक है और यह पूर्वी अरुणाचल प्रदेश के लोगों के लिए प्रमुख व्यावसायिक केंद्र था। विभिन्न इतिहास लेखकों सहित सभी लोगों के पास इस स्थान की उत्पत्ति के साथ-साथ इसके नाम के बारे में अलग-अलग विचार हैं नारायणन ने इस 'लेटेकुपुखुरी' को एक चौकी के रूप में इस्तेमाल किया था, इसलिए इसका नाम 'नरतनपुर' रखा गया। 'लेटेकुपुखुरी' प्राकृतिक रूप से बहुत सुंदर है और यह उत्तरी लखीमपुर का प्रमुख आकर्षण है, जंगल और नदियाँ दोनों हरियाली, शांति से भरे पूर्वोत्तर में व्याप्त है। पर्यटकों के आकर्षण के लिए 'उत्तरी लखीमपुर' और उसके आसपास ऐतिहासिक महत्व के कई मंदिर हैं, 'लखीमपुर' अरुणाचल प्रदेश के कई जिलों का प्रवेश द्वार भी है, जो भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में से एक है।

बासुदेव थान

बासुदेव थान या नरूआ सत्र, ढाकुआखाना, लखीमपुर, असम में स्थित एक सत्र है। इसकी स्थापना सबसे पहले १४वीं शताब्दी में अहोम राजा जयध्वज शिंघा ने की थी। मूल रूप से लौमुरा सत्र के नाम से जाना जाने वाला यह सत्र असम और भारत के अन्य हिस्सों में अच्छी तरह से जाना जाता है।

यद्यपि मूल मंदिर १४वीं-१५वीं शताब्दी में चुटिया राजा लक्ष्मीनारायण और सत्यनारायण के शासनकाल के दौरान बनाया गया था, इसे १७वीं शताब्दी के मध्य में अहोम के शासन के दौरान शंकरदेव के पोते, दामोदर अता द्वारा लौमुरा

बासुदेव थान

सत्र के रूप में वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया था। राजा जयध्वज सिंह पर विवाद है कि दामोदर अता बिजानी से आए थे या ऊपरी असम से। सत्रा की भूमि (जहां यह मूल रूप से स्थित थी) १३९२ **शेष पृष्ठ २१ पर...**

प्रकृति की सुंदरता को सजाए हुए असम का
एक जिला 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें

Bhagirath Lahoti
Mob: 9706075391
Basant Rice Mill & Oil Mill
Japisajia, North Lakhimpur,
Assam, Bharat-787001

पृष्ठ २० से ... ई. में साधयपुरा/सदिया के चुटिया राजा सत्यनारायण द्वारा बिष्णु पूजा के लिए 'नारायण द्विज' नामक एक ब्राह्मण को दान में दी गई थी, बाद में अन्य एक ब्राह्मण परिवार ने जमीन ले ली और अंततः १७वीं शताब्दी में ब्राह्मण परिवार 'बाहुडे' के एक सदस्य ने जमीन दामोदर अता को दे दी। एक अन्य किंवदंती के अनुसार १४०१ ई. में साधयपुरिया/सदिया चुटिया राजा लक्ष्मीनारायण ने बिष्णु पूजा के लिए रविदेव बासस्पति को भूमि समर्पित की थी, इस परिवार से १७वीं शताब्दी में सत्र की स्थापना के लिए भूमि अंततः दामोदर अता को हस्तांतरित कर दी गई, तब से मंदिर और सत्र का विलय हो गया और इसे नरूआ सत्र के नाम से जाना जाने लगा।

लैटेकुपुखुरी थान

दामोदर अता की मृत्यु के बाद रमाकांत अता ने अधिकार का स्थान लिया। हालाँकि, दो अन्य सत्रों को देखने के बाद, बासुदेव थान, उपेक्षा के कारण लगभग एक जंगल में बदल गया। १६८३ में रमाकांत अता की मृत्यु के बाद रामदेव अता ने अधिकार का स्थान ले लिया। यहां मंदिर की भूमि रविदास वनस्पति नामक एक पुजारी को दी गई थी, जिनके वंशज बाहुडे ने अंततः वैष्णव संत दामोदरदेव अता को सत्र की स्थापना के लिए भूमि दी, तब से मंदिर और सत्र का विलय हो गया और इसे नरूआ सत्र के नाम से जाना जाने लगा, इस समय के दौरान मंदिर को अंततः वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया, उस समय तक अहोम राजाओं ने सत्राधिकारों को सम्मान देना शुरू कर दिया, १७०७ में अहोम राजा गौरीनाथ सिंघा ने इस सत्र का दौरा करने का फैसला किया, हालाँकि उन्हें उस स्थान से लौटना पड़ा जिसे अब 'उवाता संपारा' कहा जाता है (उवाता का अर्थ है 'लौटना')। यह जानकर सत्राधिकार को दुःख हुआ और वह इस सत्र को छोड़कर 'बारपेटा' में रहने चले गये। बाद में जब राजा को इस बात का पता चला तो उन्होंने पछतावा किया और महीधर डांगरिया को वहां भेजा और बोर-काह प्रदान किया।

धीरे-धीरे यह स्थान वीरान हो गया। रंगैन अलधारा के आने तक ऐसा ही रहा। बाद में अच्युत अता ने अलधारा की मदद से वहां एक मंदिर की स्थापना की। बासुदेव मंदिर की स्थापना 'माघी पूर्णिमा' में हुई थी, इस प्रकार लोग आज तक हर साल माघी पूर्णिमा पर 'पल नाम' का आयोजन करते हैं। उनके भाई महेश अता ने वहां एक बड़ा नामघर बनवाया। वर्षों से रूपेंद्र देव गोस्वामी, भूपेन्द्र देव गोस्वामी जैसे पुजारी ने मंदिर का कार्यभार संभाला।

'धेनुखाना' में पाए गए ताम्रपत्र शिलालेखों के अनुसार पूर्व मंदिर की मूर्तियों में बासुदेव, अंबा और गणेश शामिल थे। दामोदरदेव **शेष पृष्ठ २२ पर...**

प्रकृति की सुंदरता से सजाए हुए एक शहर 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Dinesh Lohia
Mob. : 8820412743
Nandkishore Santosh Kumar
Thakurbari Road,
North Lakhimpur, Assam, Bharat-787001

प्रकृति की सुंदरता से सजाए हुए एक शहर 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Devanand Sharma
Proprietor
Mob.: 7002115471/9435084794
D N Drug Distributors
(Pharmaceutical Wholesaler & Distributors)
P.K.Complex, 1St Floor, Opposite Sani Mandir,
N.T. Road, North Lakhimpur (Assam) Bharat
Email.. dndrugdistributors@gmail.com
Shop Ph.:- 9954333721

पृष्ठ २१ से ... के दिनों में काले पत्थर से बनी बासुदेव की एक और मूर्ति सदिया में कुंडिल से स्थानांतरित की गई थी, जो चुटिया साम्राज्य की राजधानी थी। पांडुलिपि ठाकुर चरित्र के अनुसार, काले पत्थर से बनी एक मूर्ति को अहोम राजा जयध्वज सिंहा के शासन के दौरान सदिया से स्थानांतरित कर नोरुवा सत्र में स्थापित किया गया था। मूर्ति की लंबाई करीब ४ फीट है, यह इंगित करता है कि सत्रहवीं शताब्दी के दौरान सत्र और मंदिर का विलय होकर बासुदेव नरूआ सत्र का निर्माण हुआ। मंदिर में पाई गई अन्य मूर्तियाँ और कलाकृतियाँ १३९२ की हैं जब इसे चुटिया राजाओं द्वारा स्थापित किया गया था।

नारायणपुर

पानबारी, नारायणपुर

नारायणपुर पूर्वोत्तर भारतीय राज्य असम के लखीमपुर जिले में स्थित एक शहर है। यह असम विधान सभा के बिहपुरिया निर्वाचन क्षेत्र और नारायणपुर पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आता है। नारायणपुर विकास खण्ड का नाम भी है, यह धौलपुर और बिहपुरिया के बीच स्थित है।

इतिहास

नारायणपुर को पहले बोर-नारायणपुर के नाम से जाना जाता था। इसका विस्तार सोनितपुर जिले के कोलाबारी क्षेत्र तक किया गया था, इस स्थान की उत्पत्ति के साथ-साथ इसके नाम की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न इतिहास लेखकों के अलग-अलग विचार मिलते हैं। यह कभी चुटिया राजा सत्यनारायण की राजधानी थी। जॉन पीटर वेड के अनुसार 'नारायणपुर' लंबाई में तीस मील और चौड़ाई में पंद्रह मील है, यह जिला ज़ोकई चुक के पिचला नदी और कोलाबारी के तट पर स्थित है।' कुछ अन्य लोगों का विचार है कि कोच राजा नारायणनारायण ने इस स्थान का उपयोग एक चौकी के रूप में किया था, जब से इसका नाम 'नारायणपुर' पड़ा।

'नारायणपुर' के विभिन्न हिस्सों में हिंदू देवी-देवताओं की कई प्राचीन मूर्तियाँ मिलती हैं, इससे इस क्षेत्र में प्राचीन काल में अत्यंत सभ्य समाज के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है।

रुचि के स्थान

यह कई बैष्णव गुरुओं जैसे माधवदेव, हरिदेव, अनिरुद्धदेव, बडाला पद्मा अट्टा आदि, बेलागुड़ी सत्र, बडाला सत्र, फुलानी थान, बिष्णुबालिकुची, दहघरिया सत्र, बुद्ध बापुचांग, माघनोवा डोल, डोंगिया नोई, गोहाइकमल अली, राधापुखुरी, बुरहाबुरही का जन्मस्थान है। पुखुरी, रंगती पुखुरी, नागा पुखुरी, पिचाला नदी, तुलुगोनी जान नारायणपुर में स्थित कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान हैं।

'नारायणपुर' असम के बारह पवित्र गुरुओं का जन्मस्थान है और इसलिए इसे बहुत पवित्र स्थान माना जाता है। यह माधबदेव के युग के दौरान वैष्णववाद का केंद्र था। यह धार्मिक और भौगोलिक आकर्षणों के अलावा अन्य आकर्षणों की भी पूरी श्रृंखला है, जो एक पर्यटन स्थल बनने की पूरी क्षमता रखते हैं, ऐसे कुछ और आकर्षण हैं जैसे कि नेपाली लोगों का गोविंद मंदिर, सकराही

थान, दहघरिया सत्र, सियालमारा सत्र, धरमगढ़ आश्रम, होमोरा थान, देबरापार सत्र आदि।

असम सरकार ने २००६ में नारायणपुर के बडाला सत्र में श्री श्री माधवदेव कलाक्षेत्र के निर्माण की घोषणा की है और नारायणपुर के पास इसकी आधारशिला रखी गई है। असम के तत्कालीन मुख्यमंत्री तरूण गोगोई ने कलाक्षेत्र की आधारशिला रखी थी।

शेष पृष्ठ २३ पर...

'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

For Your Any Type Of Income Tax & Gst Problems Please Contact

Advocate I C Jain 9435084537
Advocate Sumit Jain 9954640308
Advocate Mayank Jain 8256066765

I C JAIN & CO

I C JAIN & CO.

Thakurbari Road, North Lakhimpur, Assam, Bharat-787001
jainindar@yahoo.com

पृष्ठ २२ से... 'नारायणपुर' में कई प्रतिष्ठित स्कूल और शैक्षणिक संस्थान हैं, जिन्होंने शिक्षा, मीडिया, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रशासनिक सेवाओं, रक्षा सेवाओं आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कई सफल व्यक्तित्व पैदा किए हैं। माधवदेव कॉलेज और नारायणपुर हायर सेकेंडरी स्कूल नारायणपुर के पास स्थित हैं जो उच्च शिक्षा प्रदान करते हैं।

स्थानीय आबादी की ज़रूरतें:

नारायणपुर के कई पेशेवर पूरे भारत और कई अन्य देशों में विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। 'नारायणपुर' के लेखकों और कवियों का असमिया साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है।

कुछ उल्लेखनीय शैक्षणिक सरकारी संस्थान:

- माधवदेव विश्वविद्यालय
- नारायणपुर हायर सेकेंडरी स्कूल
- ढालपुर हायर सेकेंडरी स्कूल
- हारमति पिचाला हाई स्कूल
- पिचालागुड़ी हायर सेकेंडरी स्कूल (जराबारी)
- टाटीबहार हाई स्कूल
- नामानी सुबनसिरी हायर सेकेंडरी स्कूल
- पिचाला राष्ट्रीय अकादमी

निजी संस्थान:

- शंकरदेव शिशु विद्या निकेतन
- जिज्ञासा जातीय विद्यालय
- एक्रिट अकादमी
- ज्ञानज्योति अकादमी
- शंकरदेव जातीय विद्यालय
- निजी कंप्यूटर-प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण संस्थान

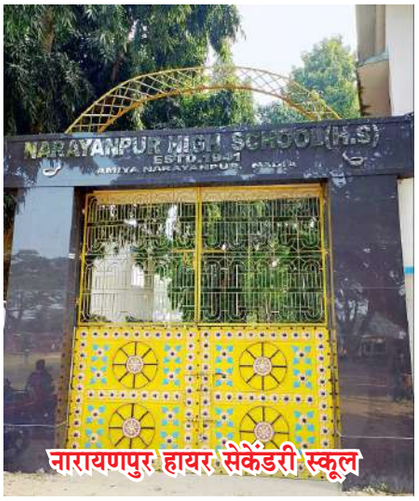

नारायणपुर हायर सेकेंडरी स्कूल

इस क्षेत्र का पहला निजी कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्थान १९९६ में स्थापित किया गया, इस संस्थान का नाम 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ कंप्यूटर एंड वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर' है। 'नारायणपुर' में कुछ आईटी संस्थान भी हैं।

उजिरोर टोल रोंगाजन - प्रसिद्ध वैष्णव संत महापुरुष माधवदेव का जन्मस्थान नारायणपुर से लगभग १५ किमी दूर है। माघनोवा डोल- नारायणपुर से लगभग ७ किमी दूर माघनोवा गांव में अहोम साम्राज्य काल का एक मंदिर है। पेटुवा गोसानी थान चुटिया साम्राज्य के दौरान एक ऐतिहासिक थान या पूजा स्थल है, जो नारायणपुर से लगभग ७ किमी दूर 'धौलपुर' में है। डफुलानी थान, एक लोकप्रिय नामघर (कृष्ण पूजा का वैष्णव मंदिर) नारायणपुर केंद्र में है। लोकप्रिय मान्यता है कि इस मंदिर में प्रार्थना करने पर लोगों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं। पानबारी बोर नामघर इस क्षेत्र में स्थित एक और महत्वपूर्ण प्राचीन नामघर है।

शंकरदेव द्वारा स्थापित बडाला और बेलागुड़ी सत्र नारायणपुर से क्रमशः ०.५ किमी और १.५ किमी दूर है।

शेष पृष्ठ २४ पर...

प्रकृति की सुंदरता से सजाए हुए एक शहर 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Manikchand Lahoti
Mob: 9435084812 / 9401012689
LUNKARAN NANDKISHORE
General Merchants & Commission Agents
N. T. Road, North Lakhimpur,Assam, Bharat-787001

प्रकृति की सुंदरता से सजाए हुए एक शहर 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Moolchand Didwania
Mob. : 8011801360
NOBLE MEDICOS
Dolly Complex, Opp. Shiv Mandir,
Town Bantow, ward No. 14
North Lakhimpur, Assam, Bharat-787001

पृष्ठ २३ से... नारायणपुर के पास दो बड़े प्राचीन तालाब राधापुखुरी और रंगती पुखुरी स्थित है।

शंकरदेव शिशु विद्या निकेतन

माधबदेव थान (लेटेकुपुखुरी/उजिरोर टोल रोंगाजन) बोरबली के पास स्थित है। यह माधवदेव (१४८९ ई.) का जन्मस्थान है। दो बड़े थान एक दूसरे से सटे हुए हैं, एक लेतेकुपुखुरी और दूसरा रोंगाजन में, इन दोनों थान के अनुयायी इसे माधवदेव का जन्मस्थान होने की मांग करते हैं।

थान में पवित्र पुस्तकों, प्राचीन पांडुलिपियों और सांस्कृतिक विरासतों का विशाल संग्रह है।

मघनोआ डौल फुलबारी गांव में स्थित है और इसे फुलबारी डौल के नाम से भी जाना जाता है। यह पिछोला नदी के पूर्व की ओर और मघनोआ बील के तट पर स्थित है। एक समय यह काली (शक्ति की देवी) की पूजा का एक प्रमुख स्थान और एक तीर्थ स्थान था। ज्ञात हो कि कई अहोम राजाओं ने भी इस स्थान का दौरा किया था। मान आक्रमण के दौरान मूर्ति को छिपाकर रखा गया था, लेकिन कभी भी डौल को वापस नहीं किया गया, इसकी स्थापना वर्तमान स्थान पर धौलपुर के पास 'बोर कालिका' थान में की गई।

डौल की चारदीवारी करीब ५ फीट ऊंची है। मुख्य डौल की ऊंचाई लगभग ७५ फीट है। डौल के अंदर बुलानी घर है जहां मूर्ति रखी जाती थी। अंदर की दीवार पर विभिन्न मूर्तियां हैं, लेकिन सरकार और स्थानीय लोगों की लापरवाही के कारण ज्यादातर मूर्तियां और कीमती सामान पहले ही चोरी हो गए, हाल ही में पुरातत्व विभाग ने डौल की मरम्मत का कार्य कराया है।

खाम्ती गांव और बापूचांग

१८४३ में, अंग्रेजों ने सदिया में खामती क्रांति को नियंत्रित किया और कुछ खामती लोगों को नारायणपुर में बसाया, उन्होंने बरखामती में इस बुद्ध मंदिर की स्थापना की। गांव में कुछ खमती हैं जिनकी संख्या केवल कुछ हजार ही बची है, लोग धर्म से बौद्ध हैं और उनके पास समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। खाम्टिस के धार्मिक मंदिर को बापूचांग कहा जाता है, यह दुनिया भर के बौद्ध समुदायों के बीच पाए जाने वाले बौद्ध मंदिर या बुद्ध बिहार के समान है। ऊंचा मंच लकड़ी से बना है और छत खलिहान से बनी है। बाहरी वास्तुकला म्यांमार के बौद्ध मंदिरों से मिलती जुलती है। बापूचांग के अंदर बुद्ध की मूर्तियाँ रखी हुई हैं और इसे बहुत पवित्र स्थान माना जाता है।

देवटोला

माघनोआ डौल की प्राचीन मूर्ति मान आक्रमण के दौरान एक तालाब में छिपा दी गई थी, बाद में यह मूर्ति खेराजखट के गवोरु बील से बरामद की गई। चूंकि मूर्ति को बाद में बोर-कालिका थान में स्थापित किया गया, इसलिए इस स्थान को देवटोला (देव-भगवान, तोला-उठाने के लिए) के रूप में जाना जाने लगा, यह स्थान नारायणपुर से ८ किमी की दूरी पर है।

पेटुआ-गोसानी थान

असम पर आक्रमण करने के बाद अंग्रेजों को 'लखीमपुर' क्षेत्र पर कब्ज़ा करने

बोरखामटी गांव

में काफी समय लग गया। यह काली देवी की पूजा का एक पुराना स्थान था और इसकी खोज अंग्रेजों ने की थी। यह धौलपुर के पास गणकदलानी में स्थित है, इसकी देवी को केसाई-खैती कहा जाता है। पहले के समय में अरुणाचल प्रदेश से डफला लोग तीर्थयात्रा के लिए यहां आते थे, यहां नियमित रूप से दुर्गा पूजा भी मनाई जाती है।

बेलागुड़ी सत्र

यह सत्र १६१८ में मूल रूप से माजुली द्वीप में स्थापित किया गया, जहाँ दो महान गुरु और शिष्य श्री श्री शंकरदेव और श्री श्री माधवदेव पहली बार एक-दूसरे से मिले थे। इस सत्र को १९४७ ई. में नारायणपुर में स्थानांतरित कर जोराबारी राजस्व गांव में बसाया गया, यह सत्र असम के लोगों के बीच बहुत प्रसिद्ध है। 'चाली' नृत्य असम का एक प्रसिद्ध पारंपरिक नृत्य है।

बोदुला सत्रा और फुलानी थान

इस सत्र की स्थापना नारायणपुर में १६३६ ई. में बडाला पद्म अता द्वारा की गई थी, जो महापुरुष माधवदेव के महान अनुयायी थे। कहा जाता है कि पद्मा अता को माधवदेव के अधीन ऊपरी असम की जिम्मेदारी मिली और उन्होंने जमदग्नि की भूमि पर सत्र की स्थापना की। एक समय यह सत्र वैष्णव धर्म का केंद्र था। बदाला पद्मा अता शंकरदेव और माधवदेव **शेष पृष्ठ २५ पर...**

'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर को हार्दिक शुभकामनायें
Ramesh Sharma
Mob: 9435520673
R. K. FOOTWEAR
Saikia Complex, D. K. Road, Lakhimpur, Assam, Bharat-780001
Deals in:- Hawai Chappal, P.U. Chappal, EVA & PVC Chappal, School Shoes, Socks & Fancy Footwear
Ph.:- 9508982177, 7896735670

पृष्ठ २४ से ... के बाद थे जिन्होंने इन दो पवित्र विभूतियों के निधन के बाद बड़ी जिम्मेदारी संभाली। सत्रा में प्राचीन पांडुलिपियों का एक समृद्ध संग्रह है। फुलानी थान की स्थापना भी १५५५ शक में बडाला अट्टा द्वारा की गई थी। यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान है और हर साल बड़ी संख्या में अनुयायी इस थान में आते हैं।

बिष्णु बालिकुंची सत्र

यह नागपुर से ८ किमी दूर डाकुआ गांव में स्थित है। काल संघति गुरु भबानीपुरिया अट्टा के शिष्य श्री श्री अनिरुद्धदेव का जन्म १५५३ ई. में नारायणपुर के पास डाकुआ गाँव में हुआ था। उन्होंने १६०२ ई. में भाबापुरिया अता की सहायता से इस सत्र की स्थापना की, इसी सत्र में अनिरुद्धदेव की मृत्यु हो गई। वह पवित्र व्यक्ति थे जिन्होंने मोरान और मोटोक लोगों को बैशनिविज़्म में बदल दिया।

राधा पुखुरी

राधापुखुरी टैंक नारायणपुर के पास सावकुची गाँव में स्थित है, इसका निर्माण चुटिया राजा लख्मीनारायण ने अपनी पत्नी 'राधा' के नाम पर १४०० से १५०० ईस्वी के बीच करवाया था। कुछ विद्वान यह भी तर्क देते हैं कि इसका निर्माण रानी सरबेश्वरी ने करवाया था, लेकिन निर्माण कार्य आधे में ही खत्म हो गया और इसलिए इसका नाम अधापुखुरी (आधा का मतलब आधा) रखा गया जो अंततः राधापुखुरी में बदल गया।

वर्तमान में इस टैंक का उपयोग असम सरकार के मत्स्य पालन विभाग द्वारा मछली प्रजनन और खेती के लिए किया जाता है।

भटौकुची थान

भटौकुची थान धौलपुर के पास कठानी गांव में स्थित है, इसकी स्थापना केशवसरन भटौकुचिया अता ने की थी। कथागुरुचरित के अनुसार उनका जन्म १६०५ में और मृत्यु १६६५ में हुई थी, यह थान आज भी पूर्ण रूप से कार्य कर रहा है।

अकाडोहिया पुखुरी

यह बड़ा तालाब धौलपुर के पास कछुआ गांव में स्थित है। तालाब के पास अकादोशी नामक एक पवित्र ब्राह्मण गुरु रहते थे और इसलिए यह नाम प्रसिद्ध हो गया।

गोहाई-कमाल अली

कोच साम्राज्य की स्थापना १६वीं शताब्दी के आरंभ में हुई थी। यह साम्राज्य कोर्तुआ नदी से बोर्नोडी तक फैला हुआ था। कोचबिहार (अब पश्चिम बंगाल में) को राज्य की राजधानी बनाया गया और यह सड़क अहोमों से लड़ने के लिए बनाई गई।

अहोतगुड़ी सत्रा

यह सत्र बोरबली समुआ गांव में स्थित है, इसकी स्थापना १६८३ में श्री राम अता ने की थी। अधिकांश शिष्य ब्राह्मण थे। इस सत्र शेष पृष्ठ २६ पर...

प्रकृति की सुंदरता से सजाए हुए एक शहर 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Mangilal Bhattar
Mob: 9414147019
Chamapalal Bhanwarlal
Malapani Charali,N. T. Road,
North Lakhimpur, Assam, Bharat-787031

भारत का प्रसिद्ध पर्यटन क्षेत्र 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनायें

Surya Prakash Maheshwari
Mob.: 9435189697
PATANJALI
Patanjali Chikitsalaya
N. T. Road, North Lakhimpur, Assam, Bharat-787031

पृष्ठ २५ से... की प्राचीन पांडुलिपि १९८७ में बाढ़ के दौरान खराब हो गई, वर्तमान में इसमें शंकरदेव ठाकुर अता और श्री राम अता की पांडुलिपियों का संग्रह है।

प्राचीन नरूआ सत्र का अन्वेषण करें

नरूआ सत्र या श्री श्री बासुदेव थान जिसे मूल रूप से लौमुरा सत्र के नाम से जाना जाता है, भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम का एक बहुत प्रसिद्ध मंदिर है और यह असम के उत्तरी लखीमपुर जिले के 'ढकुआखाना' में स्थित है। सत्र की स्थापना १७वीं शताब्दी में दामोदर अता द्वारा लौमुरा सत्र के रूप में की गई थी, जो श्रीमंत शंकर देव के पोते थे, लेकिन वहां के स्थानीय लोगों के अनुसार, बासुदेव की मूर्ति रुक्मणी ने उनसे शादी करने की इच्छा के लिए बनवाई थी। बासुदेव नाम भगवान विष्णु के लिए असमिया शब्द से संबंधित है। नरूआ सत्र असम के प्राचीन मंदिरों में से एक है और मूल रूप से 'उत्तरी लखीमपुर' में है, यह बलाही संपारा और सौपारा के बीच छोटे से क्षेत्र में स्थित है, इस सत्र का भूखंड मूल रूप से १३९२ ईस्वी में चुटिया राजा सत्यनारायण द्वारा बिष्णु के लिए दान में दिया गया था। श्री श्री बासुदेव थान तक पहुंचने के लिए हरे-भरे जंगल के बीच से होकर गुजरना पड़ता है, क्योंकि यह हरे-भरे हरियाली के बीच स्थित है और घने जंगल से भी घिरा हुआ है। मूल मंदिर वास्तव में १४वीं-१५वीं शताब्दी में चुटिया राजाओं लक्ष्मीनारायण और सत्यनारायण के शासनकाल के दौरान बनाया गया था, लेकिन १७वीं शताब्दी में इसे शंकरदेव के पोते दामोदर अता द्वारा वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। वर्ष १५८५ में दामोदर अता की मृत्यु के बाद रमाकांत अता जो दामोदर अता के पुत्र थे, बासुदेव थान के अधिकारी बने। बासुदेव थान लगभग २०० बीघे की भूमि को कवर करता है जो घने जंगल से भरा हुआ है, पहले विष्णु की कई मूर्तियाँ और अन्य ऐतिहासिक सामग्रियाँ आसपास के गाँवों में पाई गई, सभी प्रकार की मूर्तियाँ ग्रामीणों द्वारा थान में जमा कर दी गईं और ग्रामीणों ने जश्न मनाना शुरू कर दिया। रामधेमाली गाई नामक एक त्योहार, जहां उन्होंने सभी मूर्तियों के नाम का उल्लेख किया। श्री श्री बासुदेव थान तक पहुंचने के लिए सड़क, ट्रेन या हवाई जहाज से यात्रा करनी होती है। निकटतम हवाई अड्डा 'उत्तरी लखीमपुर' का लीलाबाड़ी हवाई अड्डा है जो जिला मुख्यालय से लगभग ५ किलोमीटर दूर है, यदि आप ट्रेन से यात्रा कर रहे हैं तो आपको अरुणाचल एक्सप्रेस लेनी होगी जो रंगपारा, रंगिया और आदि के माध्यम से लखीमपुर और गुवाहाटी के बीच चलती है। असम के सभी प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है, इसलिए गंतव्य तक पहुंचने के लिए कोई भी सड़क मार्ग से भी यात्रा कर सकता है।

पाभा या मिलरॉय अभयारण्य

खूबसूरत पाभा अभयारण्य, जिसे मिलरॉय अभयारण्य के समान ही जाना जाता

है, भारत के एक आधिकारिक सरकारी राज्य असम के 'लखीमपुर' जिले में स्थित है। हालाँकि यह कई अलग-अलग जानवरों और पौधों की प्रजातियों का प्राकृतिक आवास है, इस अभयारण्य को शानदार एशियाई जल भैंस की रक्षा के लिए डिज़ाइन किया गया था। यह काफी छोटा है, जिसका क्षेत्रफल ५० वर्ग किलोमीटर से भी कम है, लेकिन इस प्रजाति की सुरक्षा और संरक्षण के लिए यह एक सुंदर और आकर्षक अभ्यारण्य है। मिलरॉय अभयारण्य एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, जो पूरे भारत और दुनिया भर से यात्रियों को लुभाता है। इसका प्राकृतिक दृश्य भव्य है, जो आंखों के लिए अद्भुत दृश्य और भारत की आश्चर्यजनक भूमि की स्थायी यादें दिलाता है। मौसम के पैटर्न के साथ-साथ जानवरों के प्रसार के संदर्भ में पार्क का दौरा करने का सबसे अच्छा समय नवंबर और अप्रैल के महीनों के बीच है।

'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक धन्यवाद

Hari Gopal Mundhra
Mob: 9435085722

Subham Mundhra
Mob: 6002635935

SGP
SUBHAM GLASS & PLY
Deals In:
Glass, Ply, Door Fitting, Paints, Hardware & Building Materials, etc.
Shani Mondir Road, Near Minerva Academy School,
North Lakhimpur, Assam - 787001

'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें
Rajesh Malpani
Mob: 9435084673
Saurabh Malpani
Mob: 9731355665 / 8147006665
MALPANI HARDWARE STORE
DEAL IN WEIGHING SCALES, WIRE NAIL, BINDING WIRE, PAINT, ALUMINIUM SHEETS, GP COILS, BOLTS, SCREWS HERBALIFE NUTRITION PRODUCTS, ROPES, TARPAULIN
NT Road, North Lakhimpur, Assam, Bharat-787001

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि
मैं भारत हूँ

विजय मुरारका
कोषाध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन सतना
नवलगढ़ निवासी-सतना प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३०३३२०१३१

विजय जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी अग्रवाल समाज के अग्रज हैं, हम सब उन्हीं के वंशज हैं, उन्हीं की आराधना करते हैं, उनकी कृपा दृष्टि और सिद्धांतों से आज संपूर्ण अग्रवाल समाज भारत ही नहीं विश्व में अपना परचम लहरा रहे हैं। आजकल अग्रवाल समाज में यह भी देखा जा रहा है कि एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ गई है। अपने समाज की रक्षा और समाज को आगे बढ़ाने के लिए सबको एकजुट होना बहुत जरूरी है। जरूरतमंदों की सहायता के लिए हमेशा अग्रसर रहना चाहिए। सतना में अग्रवाल समाज द्वारा 'अग्रसेन जयंती' बड़े ही धूमधाम से मनाई जाती है, महाराजा अग्रसेन जी की कृपा दृष्टि संपूर्ण अग्रवाल समाज पर हमेशा बनी रहे, इस मंगल कामना के साथ 'अग्रसेन जयंती' के अवसर पर कोटि-कोटि वंदन...

आज की युवा पीढ़ी को अपने समाज और महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों के महत्व की जानकारी देना चाहिए, जिससे वह भी अपने धर्म समाज से जुड़े रहे, उन्हें विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जाना चाहिए, तभी युवा वर्ग धर्म और समाज के प्रति सक्रिय रहेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'। 'भारत' बोलने पर हमें गर्व की अनुभूति होती है, यह आत्मीयता से जुड़ा हुआ है, इसीलिए अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

विजय जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नवलगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा मध्य प्रदेश के 'सतना' में संपन्न हुई है। यहां आप प्रॉपर्टी के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन सतना शाखा के कोषाध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

अशोक अग्रवाल
व्यवसायी व समाजसेवी
रतनगढ़ निवासी-एर्नाकुलम प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३८८६३९३७२

अशोक जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी को समाजवाद का जनक कहा जाता है, उन्होंने ही सर्वप्रथम समाज को 'एक ईंट-एक रुपए' के माध्यम से सहयोग के लिए प्रेरित किया था ताकि सभी अपना घर बना सके और व्यापार स्थापित कर सक्षम बन सके और दूसरों की सहायता कर सके पर आज अग्रवाल समाज उनके सिद्धांतों और मूल्यों को कहीं ना कहीं भूलते जा रहा है। हम अपने बच्चों को महाराजा अग्रसेन जी के बारे में, अग्रोहा धाम के बारे में और उनके मूल्यों व सिद्धांतों के बारे में जानकारी नहीं दें तो उन्हें अपने धर्म समाज और संस्कारों की जानकारी कैसे होगी? जिन क्षेत्रों में अग्रसेन जयंती मनाई जाती है उन क्षेत्रों में तो थोड़े बहुत बच्चों को महाराजा अग्रसेन जी के बारे में जानकारी उपलब्ध रहती है, पर अग्रवाल समाज द्वारा यह भी प्रयास करना चाहिए कि महाराजा अग्रसेन जी के इतिहास के बारे में पाठ्यक्रम में बताया जाए। हमें महाराजा 'अग्रसेन जयंती' एक त्यौहार के रूप में बड़े ही धूमधाम से मनाना चाहिए, बच्चों के बीच प्रतियोगिताएं आयोजित की जानी चाहिए, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिसमें युवा और वरिष्ठ सभी बढ़ चढ़कर सहभागी हों, ताकि लोगों का अपने धर्म और समाज के प्रति जिज्ञासा और रुझान बढ़े।

आज की युवा पीढ़ी को अपने धर्म और समाज से जोड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए, उन्हें उचित जानकारी उपलब्ध करानी चाहिए, जिससे युवाओं को अपने धर्म और समाज से जोड़ा जा सके।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', वर्तमान सरकार ने 'भारत' को फिर से जीवित कर दिया है।

अशोक जी मूलतः राजस्थान के चुरू जिले में स्थित 'रतनगढ़' के निवासी हैं, आपका परिवार कई वर्षों से केरल के एर्नाकुलम में बसा हुआ है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा रतनगढ़ में संपन्न हुयी है, यहां आप आईटी फील्ड के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, २००१ में अग्रवाल युवा मंच की स्थापना की गई, जिसके आप संस्थापक सदस्य रहे, गायत्री परिवार केरल के संयोजक के रूप में भूमिका निभा रहे हैं, अग्रवाल सभा व अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

मदन मोहन बगड़िया

कोषाध्यक्ष विश्व हिंदू परिषद झारखंड राज्य

रतनगढ़ निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३११०८३७०

मदन मोहन जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन की एक दानवीर एवं आदर्श राजा के रूप में विख्यात थे, उनकी महिमा युगों युगों तक रहेगी, उनका एक ही सिद्धांत था कि उनके राज्य की प्रजा सुखी रहे, इसीलिए उन्होंने अपने राज्य में आने वाले नए आगंतुकों के लिए 'एक ईंट-एक रुपए' का सिद्धांत प्रेषित किया, जिसके माध्यम से सभी अपना घर बना सके और व्यापार शुरू करे और दूसरों की सहायता कर सके। आज अग्र समाज महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों को भूलता जा रहा है, उनके मूल से भटक गया है। आज अग्र समाज द्वारा धर्मशाला, विद्यालय व अन्य सामाजिक संस्थाओं का निर्माण किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य पहले सिर्फ सामाजिक ही था पर आज यह परिवर्तित होकर व्यवसायिकरण का रूप ले लिया है। युवा पीढ़ी कुछ वर्ष तक अपने धर्म और समाज से दूर हो रही थी, पर वर्तमान परिपेक्ष में युवाओं का अपने धर्म और समाज के प्रति रुझान बढ़ा है, विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों में रूचि रखते हैं, युवाओं को अपने धर्म और समाज से जोड़ने के लिए ही 'अग्रसेन जयंती' के अवसर पर १५ दिनों का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं, जिसमें युवाओं की भागीदारी सबसे बढ़-चढ़कर रहती है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

मदन जी मूलतः राजस्थान स्थित 'रतनगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म कोलकाता में व सम्पूर्ण शिक्षा 'रांची' में संपन्न हुई है। १९७० से आप 'रांची' में बसे हुए हैं। यहां व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं, अग्रवाल सभा के सदस्य और विश्व हिंदू परिषद झारखंड राज्य के कोषाध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

लक्ष्मी चंद खेमका

अध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन सतना

उदयपुर वाटी निवासी-सतना प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४२५३३०७११

लक्ष्मी चंद जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन के हम वंशज हैं, वे हमारे लिए पूजनीय हैं, उन्होंने सर्वप्रथम समाजवाद का जो सिद्धांत दिया था, आज भी अग्र समाज उसे किसी न किसी रूप में अपना रहा है, तभी तो आज हर क्षेत्र में हमारा समाज अग्रणी भूमिका में हैं, महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों को अपनाकर ही जीवन में आत्मसात कर, उच्च मुकाम अग्रवाल समाज को मिला हुआ है। धार्मिक कार्यों, दान-धर्म में भी अग्रवाल बंधु अपनी प्राथमिकता दर्ज करवाते हैं। अग्रवाल समाज द्वारा 'अग्रसेन जयंती' बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। महाराजा अग्रसेन जी के चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में अपना पूर्ण समर्थन देते हुए कहते है कि अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' था और 'भारत' ही रहना चाहिए। लक्ष्मी चंद जी मूलतः राजस्थान स्थित उदयपुर के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा मध्य प्रदेश के सतना में संपन्न हुई है, यहां आप खाद्य तेल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन सतना शाखा के अध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं। किराना मर्चेंट एसोसिएशन व जनरल मर्चेंट एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। अन्य कई संस्था में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

अशोक कंसल

प्रधान अग्रसेन चैरिटेबल ट्रस्ट

हरियाणा निवासी-दिल्ली प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९२१३४५०५९३

अशोक जी समाजसेवी, लोकप्रिय, उदारवादी व्यक्तित्व के धनी हैं, आपका मुख्य उद्देश्य मानव व सभी प्राणियों की सेवा, सभी को जीने का हक हो। मध्यमवर्गीय परिवार में जन्में कौशल जी मूलतः हरियाणा के कैथल जिले में स्थित 'मटोर' के निवासी हैं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा 'हरियाणा' में ही संपन्न हुई है। १९८७ से दिल्ली के 'बुद्ध विहार' में बसे हैं, व्यवसाय के साथ आप सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। बुद्ध विहार में स्थित महाराजा अग्रसेन चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रधान की भूमिका निभा रहे हैं। अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा दिल्ली प्रदेश के प्रधान हैं। रोहिणी धार्मिक सभा, रामलीला कमेटी, जापानी पार्क के प्रमुख व अग्रवाल धर्मशाला समाज एकता मंच के उपप्रधान, जींद मैत्री संघ के उप प्रधान के रूप में कार्यरत हैं। आप अग्रवाल चेरीटेबल ट्रस्ट के माध्यम से गरीब कन्याओं की शादी में सहयोग करते हैं।

'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी अग्रवाल समाज के कुल प्रवर्तक हैं, उन्हीं के दिए सिद्धांतों शेष पृष्ठ २९ पर...

पृष्ठ २८ से... का अनुसरण कर आज अग्रवाल समाज हर क्षेत्र में अग्रणीय भूमिका निभा रहा है, उनके दिए गए सहयोग के सिद्धांत को किसी न किसी रूप में आज भी अग्रवाल समाज अपनाए हुए है, उनकी जयंती समाज द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है, महाराजा अग्रसेन जी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन।
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'। इंडिया हमारी संस्कृति नहीं है। इंडिया से पश्चिमी सभ्यता का बोध होता है। हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में जानी जाती है, हमारी वास्तविक पहचान 'भारत' नाम से है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए, भारत सोने की चिड़िया है इंडिया नहीं। जय भारत!

राजकुमार अग्रवाल

व्यवसायी व समाजसेवी

लाडनूं निवासी-कोलकाता प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९८३०००५९६०

राजकुमार जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि संपूर्ण अग्र समाज महाराजा अग्रसेन जी के ही वंशज हैं, उनके बताए सिद्धांतों का अनुसरण कर आज अग्रवाल समाज हर क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। उद्योग व्यापार में अग्र परिवारों की अहम भूमिका तो रहती ही है साथ ही सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में भी अग्र समाज हमेशा अग्रसर रहता है, उनके द्वारा कई धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं का धर्मशालाओं का निर्माण किया गया है, पर यह देखने में आया है कि आज अग्र समाज महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों व मूल्यों को भूलते जा रहे हैं और यह सब पश्चिमी सभ्यता और आधुनिक फिल्मों के कारण हो रहा है, हमारी युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख होती जा रही है। आज की युवा पीढ़ी वैवाहिक बंधन में बंधने से परहेज कर रही है और वंश वृद्धि में भी रूची नहीं रखजी। महाराजा 'अग्रसेन जयंती' अग्र परिवारों द्वारा मनाई जाती है पर जिस उत्साह निष्ठा के साथ मनाया जाना चाहिए उसमें कमी आ गई है, इसका कारण पहले तो लोगों के पास समय नहीं है, शिक्षा और नौकरी के लिए लोग अपने परिवार और समाज से दूर होते जा रहे हैं इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है, आज हम 'भारत' में ही नहीं कहीं भी चले जाएं अग्र परिवारों द्वारा धर्मशाला, मंदिर, स्कूल कॉलेज आदि का निर्माण गया है लेकिन आज समाज में एकता की कमी दिखाई दे रही है, इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह प्रक्रिया बहुत लंबी है क्योंकि इंडिया शब्द हमारे भीतर और विश्वस्तर पर इतना रच-बस गया है कि लोगों के बीच यह विषय बैठना थोड़ा कठिन है पर होना 'भारत' ही चाहिए। धीरे-धीरे ही सही पर आज यह प्रचार-प्रसार होने लगा है, अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।
राजकुमार जी मूलतः राजस्थान के सुजानगढ़ जिले में स्थित 'लाडनूं' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा कोलकाता में संपन्न हुयी है। यहां आप प्रिंटिंग व अन्य कारोबार से जुड़े हुए हैं, आपकी प्रिंटिंग प्रेस द्वारा 'मां मेरी मां' किताब का प्रकाशन हुआ है जो राष्ट्रपति भवन में भी रखा गया है। आप विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं, अग्रवाल सभा प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन व अन्य कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!

नंदकिशोर पाटोदिया

अध्यक्ष अग्रवाल सभा रांची

लक्ष्मणगढ़ निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९३३४७०२३१९

नंदकिशोर जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी हमारे पूर्वज हैं, आज के युग में भी उनका समाजवाद का सिद्धांत काफी सार्थक है, उन्हीं के बताएं सिद्धांतों का अनुसरण कर आज अग्र समाज समृद्ध संपन्न है तथा सामाजिक कार्यों में आगे रहते हैं। महाराजा अग्रसेन जी ने जो सिद्धांत दिया वह आज से ५५०० वर्ष पूर्व से भी उतने ही साध्य थे, उन्होंने अपनी जनता को सुखी रखने के लिए कई प्रकार पर उपाय किए थे, जिसमें से 'एक ईंट-एक रूपया' का सिद्धांत आज भी अग्र समाज द्वारा पूरी निष्ठा से अपनाया जा रहा है, आज भारत में कहीं भी चले जाइए अग्र समाज द्वारा हॉस्पिटल, विद्यालय व अन्य धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं का निर्माण किया गया, सारी संस्थाएं बड़े ही सिद्धांत रूप से संचालित हैं, अपनी आय का कुछ प्रतिशत जरूरतमंदों की सहायता के लिए आवश्यक खर्च करता है। संपूर्ण अग्र समाज महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों का पूर्ण समर्थन करता है, उनके ही सिद्धांतों को जीवित रखे हुए हैं।
रांची में अग्र समाज की संख्या लगभग ३०-४० हजार के करीब है, यहां 'अग्रसेन जयंती' बड़े ही धूमधाम से और श्रद्धा पूर्वक मनाई जाती है।
रांची अग्रवाल युवा सभा द्वारा युवाओं को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, जिसके माध्यम से वे विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों से जुड़े रहें।
नंदकिशोर जी मूलतः राजस्थान स्थित सीकर जिले के 'लक्ष्मणगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण 'रांची' में ही संपन्न हुयी है। रांची स्थित विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं, अग्रवाल सभा रांची के अध्यक्ष, लायंस क्लब के अध्यक्ष इसके पूर्व सचिव भी रहे हैं, मारवाड़ी सम्मेलन में भी सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थाओं जुड़े हैं। जय भारत!

राजेश मालपानी

व्यवसाई व समाजसेवी

सीकर निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३५०८४६७३

राजेश जी अपनी कर्मभूमि 'लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में बहुत ही अंतर आ गया है, पहले यहां व्यवस्था के नाम पर कुछ नहीं था, पहले की सरकारों ने यहां के विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया, पर पिछले कुछ वर्षों में वर्तमान सरकार द्वारा यहां बहुत तेजी से विकास हुआ है, संपर्क के माध्यम बढ़ गए हैं, आवागमन की सुविधा बढ़ गई है। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही बढ़िया है, हर समाज के लोग एक दूसरे से मिलजुल कर और सौहार्दपूर्ण वातावरण में निवास करते हैं। राजस्थानियों में यहां माहेश्वरी समाज की संख्या सबसे अधिक है, यहां मारवाड़ी समाज की कई संस्थाएं, सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत हैं। मारवाड़ी समाज का परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, लोग एक दूसरे के सुख-दुख में हमेशा खड़े रहते हैं। पर्यटन की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां आस-पास कई देखने लायक स्थल हैं, कई धार्मिक और ऐतिहासिक मंदिर बने हुए हैं, गोगामुख का हनुमान मंदिर का नक्शा और सम्पूर्ण बनाने का कार्य स्व. नंद किशोर माहेश्वरी जी कि देखरेख में सम्पन्न हुआ उन्होंने समाज के सहयोग से नामघर, शिव मंदिर, गणेश मंदिर, दुर्गा मंदिर निर्माण कार्य संपूर्ण किया। ३० किलोमीटर पर ऐतिहासिक मां पद्मनी देवी जी का मंदिर है, इसके अलावा दुर्गा जी का मंदिर शिव जी का मंदिर गणेश जी का मंदिर, नामघर व अन्य कई मंदिर उल्लेखनीय है, जहां लोग दर्शन करने के लिए जाना बहुत पसंद करते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में अपना पूर्ण समर्थन देते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम-एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

राजेश जी मूलतः राजस्थान स्थित सीकर जिले के निवासी हैं, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। बीकॉम स्नातक की शिक्षा आपने 'लखीमपुर' से ग्रहण की है, लगभग ५० वर्षों से आप 'लखीमपुर' में बसे हुए हैं, हार्डवेयर के व्यवसाय से संलग्न हैं। २०१९ में आपको लायंस क्लब इंटरनेशनल द्वारा कर्मयोगी अवार्ड से सम्मानित किया गया जिसमें साथ में ५१००० का चेक भी जिसे आपने गोगामुख के पास मोहरी कैंप के स्कूल में छात्र-छात्राओं को शिक्षा हेतु प्रयोगशाला के लिए दिया।

पूर्वोत्तर माहेश्वरी सभा द्वारा नॉर्थ ईस्ट के सर्वोत्तम सामाजिक कार्यकर्ता, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा भी २०२३ में बेस्ट सामाजिक कार्यकर्ता, पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति द्वारा जनजाति शिक्षा में कार्य करने पर गुरु अमृतमई मां आनंद मूर्ति ने प्रदान किया वही जिले की विभिन्न संस्थानों द्वारा आपको सम्मानित किया गया। शिशु शिक्षा समिति असम के कार्यकारणी सदस्य है जिसकी राज्य में ५६२ स्कूल चल रहे है। वर्तमान में रेड क्रास सोसाइटी लखीमपुर जिला के चेयरमैन है वही जनसेवा के अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय माहेश्वरी कपल क्लब के अध्यक्ष, श्री कृष्ण गोपाल गोशाला के सचिव सहित विभिन्न संस्थानों में अंतकरण से जुड़े हुए है। जय भारत!

सूर्य प्रकाश माहेश्वरी

व्यवसाई

रतनगढ़ निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३५१८९६९७

सूर्य प्रकाश जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के लखीमपुर में रात-दिन का अंतर आ गया है, पहले यह छोटा सा टाउन हुआ करता था और आज यह शहर बन चुका है। क्षेत्रफल की दृष्टिकोण से यह चारों ओर से बढ़ गया है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही शांतिपूर्ण है, प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्रफल बहुत ही सुंदर है, समय के अनुसार यहां कई विकास हुए हैं, आज यहां शिक्षा के लिए कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान बन गए हैं, मेडिकल कॉलेज, कैंसर हॉस्पिटल भी बन गए हैं, एल एन कॉलेज अब विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित हो चुका है। संपर्क माध्यम बढ़ गए हैं रेलवे सुविधा उत्तम हो गई है, यहां राजधानी ट्रेन आती है, यहां का 'लीलाबाड़ी' एयरपोर्ट की सुविधा उत्तम हो गई है। यहां पिछले कुछ दशकों में बहुत मंदिर बनाए गए हैं जो मेरे चाचा नंदकिशोर जी द्वारा बनाए गए हैं, जिनमें गोगामुख में संकट मोचन हनुमान जी का मंदिर, दुर्गा जी का मंदिर, शिव जी का मंदिर, गणेश जी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो बहुत ही सुंदर और शिल्प कला का अद्भुत संगम है। यहां का ऐतिहासिक मंदिर वासुदेव थान भी उल्लेखनीय है, क्योंकि यहां भगवान विष्णु की काली प्रतिमा स्थापित है। पद्मिनी धाम भी दर्शनीय स्थल है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

सूर्य प्रकाश जी मूलतः राजस्थान के 'रतनगढ़' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग चार पीढियों से 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसा हुआ है। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'लखीमपुर' में, स्नातक की शिक्षा आपने रतनगढ़ से ग्रहण की है। यहां आप विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए हैं, आप यहां एक महाविद्यालय का भी संचालन करते हैं, पतंजलि औषधालय से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

मूलचंद डिडवानिया

व्यवसायी व समाजसेवी

जोधपुर निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ८०११८०१३६०

मूलचंद जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' के विशेषताओं के संदर्भ में कहते हैं कि पिछले १५-२० सालों में 'लखीमपुर' पूरी तरह से बदल चुका है, विशेषकर इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में बहुत ही बदलाव आया है, पहले यहां लोगों के घर टीन के हुआ करते थे, पर अब हर जगह आरसीसी बिल्डिंग दिखाई देती है, पहले यहां का मुख्य बाजार एन.टी. रोड तक ही सीमित हुआ करता था, अब बाजार भी बहुत अधिक बढ़ गया है। व्यापारिक क्षेत्र में भी बहुत बदलाव आए हैं, आज यहां माल, शोरूम, रेस्टोरेंट व कई बड़ी-बड़ी दुकानें बन गई है। सुविधा भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। रोड लाइट व पानी की सुविधा अच्छी हो गई है। आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, पहले यहां से गुवाहाटी जाने के लिए नाइट शिफ्ट या बस का ही सहारा लेना होता था पर अब दिल्ली, गुवाहाटी, चेन्नई और भारत के हर क्षेत्र के लिए यहां ट्रेन उपलब्ध है। प्रतिदिन यहां से फ्लाइट कोलकाता के लिए उड़ान भरी जाती है। यहां का सामाजिक माहौल भी बहुत ही उत्तम है। उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा, यहां के मूल निवासी असमीज, बंगाली और मुस्लिम हर समुदाय के लोग बसे हैं, यहां लोगों के बीच परस्पर सामंजस्य और सौहार्द का वातावरण बना रहता है। पर्यटन की बात की जाए तो 'नॉर्थ लखीमपुर' में कई भव्य मंदिर बने हुए हैं। लखीमपुर में प्रवेश करते ही दुर्गा जी का मंदिर बना हुआ है तो दूसरा प्रमुख गणेश जी का मंदिर है जहॉ नाव पर कलश बनाया गया है, उसमें गणेश जी की प्रतिमा स्थापित की गई है। शिवजी का भी मंदिर भव्य रूप में बनाया गया है। शिवलिंग के अंदर शिवलिंग की प्रतिमा स्थापित की गई है। लखीमपुर के आसपास कई पर्यटन स्थल हैं जैसे ईटानगर, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यहां मारवाड़ी समाज की कई संस्थाएं कार्यरत हैं, जिनमें मारवाड़ी सम्मेलन और मारवाड़ी युवा मंच के अंतर्गत सभी शाखाएं कार्य करती हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' इंडिया तो अंग्रेजों की देन है यह हमारी पहचान नहीं बन सकता।

मूलचंद जी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'पीपाड़' के रणसी गांव के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले २० सालों से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हैं और मेडिसिन के व्यवसाय में संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक संस्थाओं में भी यथा संभव सहभागी रहते हैं। 'नॉर्थ लखीमपुर' मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़े हैं। जय भारत!

माणकचन्द लाहोटी

अध्यक्ष माहेश्वरी सभा लखीमपुर

लालगढ़ निवासी-लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९३४०४४७३१५

माणकचन्द जी अपनी कर्मभूमि 'लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आज से ४०-५० साल पहले का 'लखीमपुर' और आज के 'लखीमपुर' में बहुत अधिक अंतर आ गया है, पहले यहां कच्चे और टीन के मकान हुआ करते थे और आज हर जगह बिल्डिंग ही नजर आती है। कम्युनिकेशन के माध्यम अधिक बढ़ गए हैं, हर तरह से यहां विकास हुआ है, व्यापारिक क्षेत्र भी बढ़ गए हैं। यहां मेडिकल कॉलेज एवं कॅन्सर हॉस्पिटल भी बने हुए है। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग यहां बसे हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह बहुत ही सुंदर स्थान है, हर तरफ हरियाली ही नजर आती है, अरुणांचल यहां से ६०-७० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, वहां की राजधानी ईटानगर एक रमणीय स्थान है, जहां लोग पर्यटन के लिए जाते हैं, यहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है 'वासुदेव धाम' साथ ही लखीमपुर में शिव जी का मंदिर, गणेश जी का मंदिर, दूर्गा जी का मंदिर व अन्य देवी देवताओं के मंदिर बने हुए हैं जो लोगों की श्रद्धा का मुख्य केंद्र है। शिक्षा व अन्य सुविधाओं के मामले में भी आज लखीमपुर बहुत ही विकसित हो चुका है। यहां राजस्थानी समाज के लगभग ४०० से ५०० परिवार निवास करते हैं, सभी के द्वारा सामाजिक संस्थाओं का भी निर्माण किया गया है जिनमें से प्रमुख है 'वासुदेव कल्याण ट्रस्ट' एवं मंच भवन भी है जिसके द्वारा भवन निर्माण किया गया है और इस भवन में शादी व अन्य धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। यहां की राजस्थानियों में सबसे पुरानी संस्था सीताराम ठाकुर बाड़ी है, जिसमें कई देवी देवताओं के मंदिर बने हुए हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए इंडिया तो इसे अंग्रेजों ने बना दिया, हमारी पहचान 'भारत' से हैं और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

माणकचन्द जी मूलतः राजस्थान के 'लालगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म लालगढ़ व संपूर्ण शिक्षा लालगढ़ व सुजानगढ़ में संपन्न हुई है। १९६८ से आप असम के 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हैं और ग्रोसरी के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, यहां स्थित माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष और चैंबर्स ऑफ कॉमर्स के कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। सीताराम ठाकुरबाड़ी के भी कार्यकारिणी से जुड़े हैं, अन्य कई संस्थानों में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

रामगोपाल मालपानी

व्यवसायी व समाजसेवी

सीकर निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३५०८८८९१

रामगोपाल जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में बहुत ही परिवर्तन आ गया है, पहले 'लखीमपुर' सब डिवीजन है एक समय जिला डिब्रूगढ़ हुआ करता था, रेलवे संपर्क भी बहुत मुश्किल था, कोई सोच भी नहीं सकता था कि 'लखीमपुर' रेल मार्ग से जुड़ेगा, पर १९६२ में चीन से युद्ध के पश्चात यहां रेल का कार्य प्रारंभ हुआ, उस समय सड़क की भी सुविधा अच्छी नहीं थी, डिब्रूगढ़ से यहां आने के लिए नाव से सफर किया जाता था। राजस्थान से यहां आने में लगभग ६ से ७ दिन लग जाते थे, एयरपोर्ट १९४५ के पहले ही बन गया था पर चाय बागान वाले ही इसका उपयोग करते थे। आसपास के क्षेत्र से माल का आवागमन नाव से होता था। बिहार और कोलकाता से माल लाया जाता था। 'लखीमपुर' टाउनशिप कुछ क्षेत्र में फैला हुआ था, प्रॉपर टाउन में भी बस्तियां कम थी, आसपास के क्षेत्र में छुटपुट बस्तियां होती थी, आधा किलोमीटर दूर से ही जंगल प्रारंभ हो जाता था। यहां हमेशा बाढ़ आती रहती थी। १९५० में जब यहां बहुत भयंकर भूकंप आई उस समय पूरा असम क्षेत्र हिल गया था, तब यहां मारवाड़ी रिलीज समिति द्वारा कई सहायता प्रदान की गई, जो आज 'मारवाड़ी सम्मेलन' के नाम से जानी जाती है। एक समय एक दो ही दुकानें बनी हुई थी। आज 'लखीमपुर' पूरी तरह से ही विकसित हो चुका है, हर तरह की सुविधा यहां उपलब्ध होने लगी है। आवागमन के साधन बहुत उत्तम हो गए हैं, हवाई मार्ग, जल मार्ग और रेल मार्ग की उत्तम व्यवस्था उपलब्ध है। शिक्षा के लिए यहां कई बड़े-बड़े क्षेत्र संस्थान बन गए हैं, मेडिकल कॉलेज विश्वविद्यालय आदि बन गए हैं, अस्पताल की भी सुविधा उत्तम है, एम्स हॉस्पिटल भी बना हुआ है, कई निजी अस्पताल भी हैं। पर्यटन की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां आस-पास कई पर्यटन क्षेत्र हैं। अरुणाचल की राजधानी 'ईटानगर' यहां से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है, यहां कई प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर हैं, जो अपनी विशेष मान्यता के लिए जाने जाते हैं, यहां के 'ढेकुआखाना' में असम का सबसे प्राचीन जैन मंदिर बना हुआ है। आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यहां एक समय जूट, धान, सरसों आदि की पैदावार सबसे अधिक होती थी, यहां चाय की ट्रेडिंग व अन्य वस्तुओं की ट्रेडिंग का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है।

अरुणाचल बनने से 'नॉर्थ लखीमपुर' के विकास में बहुत प्रगति आई है। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही समन्वय पूर्ण रहता है, सभी का एक दूसरे से प्रेम व्यवहार बहुत ही उत्तम है, यहां राजस्थानियों में माहेश्वरी समाज की संख्या सबसे अधिक है, जबकि यहां सबसे पहले जैन और अग्रवाल परिवार के लोग आकर बसे थे, यहां राजस्थानी समाज की कई संस्थाएं कार्यरत हैं, ऐसी ही कई विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

राम गोपाल जी मूलतः राजस्थान के सीकर जिले के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है व उच्च शिक्षा असम से ग्रहण की है। आप १९५१ से नॉर्थ लखीमपुर में बसे हैं और यहां गवर्नमेंट कांट्रेक्टर व अन्य कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन, ठाकुरबाड़ी, चैंबर्स ऑफ कॉमर्स जैसे कई संस्थानों से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

इंद्रचंद जैन

कार्यकारी अध्यक्ष दिगम्बर जैन समाज नॉर्थ लखीमपुर

नागौर निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३५०८४५३७

इंदरचंद जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आज से ४० साल पहले का 'लखीमपुर' और आज के 'लखीमपुर' में जमीन आसमान का अंतर आ गया है, हर तरफ से बहुत तेजी से बदलाव हुए हैं 'लखीमपुर' में। इंफ्रास्ट्रक्चर भी बहुत अधिक तेजी से बढ़ा है, आज यहां बड़े-बड़े शैक्षणिक प्रतिष्ठान, चिकित्सालय, मॉल, शोरूम आदि बन गए हैं, दिन प्रतिदिन यह सुविधा बढती ही जा रही है, सिर्फ एक अभाव है वह बिजली की। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उन्नत है, हर धर्म और समाज के लोग परस्पर मेल मिलाप के साथ रहते हैं, व्यापार की बात की जाए तो यहां उद्योग तो कोई नहीं है, व्यापार ट्रेडिंग पर ही निर्भर है। यहां राजस्थानी समाज की कई संस्थाएं कार्यरत हैं, जैन समाज के यहां लगभग १५ परिवार हैं, एक चैत्यालय बना हुआ है। मारवाड़ी युवा मंच, वासुदेव कल्याण ट्रस्ट द्वारा बहुत ही सुंदर दो भवन बनवाये गये है, सबडिवीजन ठेकुआखाना में पूरे असम का सबसे पुराना जैन मंदिर बना हुआ है जो लगभग ३५० साल पुराना है, यहां कई हिंदू देवी-देवताओं के मंदिर हैं, जो अपनी विशेष मान्यताओं के लिए जाने जाते हैं। पर्यटन की दृष्टिकोण से भी है क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, ऐसे ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम-एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

इंदरचंद जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नागौर' के निवासी हैं, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'नागौर' में ही संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने नॉर्थ लखीमपुर से ग्रहण की है, यहां आप टैक्स कंसल्टेशन के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही आप 'नॉर्थ लखीमपुर' के लॉ कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में भी कार्यरत है। दिगम्बर समाज के कार्यकारी अध्यक्ष हैं, लायंस क्लब के कार्यकारिणी सदस्य, मारवाड़ी जन सेवा ट्रस्ट में ट्रस्टी, रेड क्रॉस सोसाइटी व असम साहित्य सभा के आजीवन सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

रमेश शर्मा

व्यवसायी व समाजसेवी

नागौर निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३५५२०६७३

रमेश जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'नॉर्थ लखीमपुर' में काफी अंतर आ गया है, जब हम यहां आए थे, उस समय अल्फा का दौर चल रहा था, यहां काफी अशांत माहौल था, आवागमन के साधन का भी अभाव था, इसीलिए कई मारवाड़ी परिवार के लोग यहां से छोड़ जाने के विचार में थे, पर सन २००० के आसपास यहां राष्ट्रपति शासन लागू होने से काफी शांति स्थापित हो गई और स्थानीय लोगों से मारवाड़ियों का मेल-मिलाप बढ़ने से यहां के सामाजिक माहौल में भी बहुत परिवर्तन आया। आज यह पूर्णतः शांतिपूर्ण क्षेत्र बन गया है। हर धर्म और समाज के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं, तभी से यहां के विकास में भी बहुत गति आयी है, आज हर तरह से सुविधा संपन्न है 'नॉर्थ लखीमपुर' आवागमन के साधन की व्यवस्था उत्तम हो गई है, आज यहां का व्यापार बहुत अधिक बढ़ गया है, अरुणाचल नॉर्थ लखीमपुर से ही जुड़ा हुआ है, यहां मारवाड़ी समाज किराना, कपड़ा, पेट्रोल पंप, हार्डवेयर व अन्य कई व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही सुंदर है, यह चारों ओर हरियाली और नदियों से घिरा हुआ है, यहां कई प्राचीन ऐतिहासिक और मारवाड़ी समाज द्वारा मंदिर बनाया गया है। मारवाड़ी समाज द्वारा सबसे पुराना मंदिर 'सीताराम ठाकुरबाड़ी' है, जहां कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं। दुर्गा जी का मंदिर, गणेश जी का मंदिर, शिव जी का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर और विष्णु जी का भी मंदिर बना हुआ है, यहां के स्थानीय निवासी कृष्ण और शिव जी के भक्त हैं उनके मंदिरों को नामघर कहा जाता है। यहां राजस्थानी समाज के कई संस्थाएं धार्मिक सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम तो एक ही रहना चाहिए 'भारत', क्योंकि यह हमारे देश का सबसे प्राचीन नाम है, जो हमें हमारी संस्कृति और गौरवशाली इतिहास से जोड़ता है।

रमेश जी मूलतः राजस्थान स्थित नागौर जिले के 'तरणाऊ' के निवासी हैं आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९८८ से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हुए हैं और शूज के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकारिणी सदस्य व परशुराम सेवा समिति से भी जुड़े हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

भागीरथ लाहोटी

पूर्व सचिव चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स नॉर्थ लखीमपुर

जसवंतगढ़ निवासी-नार्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३५०८५३९१

भागीरथ जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में बहुत कुछ परिवर्तन आ गया है, पहले 'लखीमपुर' एक छोटा सा टाउन हुआ करता था, यहां जनसंख्या भी कम थी, एक तरह से असम का सबसे पिछड़ा हुआ इलाका था, यहां सुविधाओं की कमी थी, पर आज का 'लखीमपुर' हर तरह से समृद्ध होते जा रहा है पिछले कुछ वर्षों में बहुत तेजी से विकास हुआ है 'लखीमपुर' का। पहले यहां सामाजिक वातावरण बहुत ही अशांत था, जिसके कारण यहां के मारवाड़ी समाज अन्य राज्यों में जाकर बसने के लिए तैयार हो गए थे, पर १९९५ के बाद यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौभाग्यपूर्ण होने लगा, हर धर्म और समाज के लोग यहां मिलजुल कर रहने लगे, व्यापार की बात की जाए तो यहां का व्यापार दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहा है, बोगीबिल ब्रिज से डिब्रुगढ़ और तिनसुकिया जुड़ने के कारण और अरुणाचल पास में होने के कारण संपर्क माध्यम बढ़ गए हैं। आवागमन की सुविधा भी बढ़ रही हैं। यहां की व्यापारिक स्थिति में सुधार आया है, पर आजकल ऑनलाइन के कारण पहले जैसा व्यापार यहां नहीं है। एग्रीकल्चर यहां उत्तम है, यहां चावल की खेती सबसे अधिक होती है इसीलिए यहां कुछ एक राइस मिल भी हैं। पर्यटन की दृष्टिकोन से यह क्षेत्र बहुत ही रमणीय है, चारों ओर हरियाली नजर आती है, यहां कई प्रसिद्ध मंदिर हैं, जिसे देखने लोग यहां आते हैं, यहां का मालिनी थान एक ऐतिहासिक और प्राचीन मंदिर है, इसके अलावा गणेश जी का मंदिर, दुर्गा जी का मंदिर भी है जो अपनी विशेष बनावट के लिए जाना जाता है। यहां मारवाड़ी समाज द्वारा कई सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं का निर्माण किया गया है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

भागीरथ जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'जसवंतगढ़' के निवासी हैं। लगभग ४० वर्षों से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हुए हैं और वर्तमान में तेल मिल के व्यवसाय से जुड़े हैं, आप सामाजिक क्षेत्र में भी कार्यरत रहते हैं, पूर्व में चैंबर्स ऑफ कॉमर्स नॉर्थ लखीमपुर के सचिव रहे हैं, मारवाड़ी सम्मेलन, माहेश्वरी सभा व अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

देवानन्द शर्मा

कोषाध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन नॉर्थ लखीमपुर

चिड़ावा निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ७००२११५४७१

देवानंद जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में बहुत ही बदलाव आया है, दिन प्रतिदिन यहां का विकास बहुत तेजी से हो रहा है, हर क्षेत्र में विकसित हुआ है 'लखीमपुर'। पहले यह एक छोटा सा टाउन था और आज बड़ा शहर बन चुका है, यहां हर तरह की सुविधा उपलब्ध होने लगी है, शिक्षा के लिए यहां संस्थान बने हैं। मेडिकल कॉलेज विश्वविद्यालय आदि बन गए हैं, चिकित्सा के लिए टाटा कैंसर हॉस्पिटल जैसे कई चिकित्सालय यहां मौजूद है।

व्यापार की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, पहले यहां कैट का व्यापार बहुत बड़े पैमाने पर होता था पर अब यहां यह व्यवसाय कम होकर अन्य ट्रेडिंग का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है, यहां छोटी-छोटी कई इंडस्ट्रीज भी हैं, चाय बागान भी हैं, एग्रीकल्चर की बात की जाए तो यहां चावल की पैदावार सबसे अधिक होती है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, सभी के बीच पर सामंजस्य जैसे बहुत ही उत्तम है, यहां हमेशा सौहार्दपूर्ण वातावरण बना रहता है। यहां कई पर्यटन स्थल हैं, यहां के प्रमुख मंदिरों में मालिनी थान, गणेश जी का मंदिर, शिव जी का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर जैसे कई मंदिर उल्लेखनीय है। यहां राजस्थानी समाज की संख्या भी काफी है, हर समाज की अपनी-अपनी सामाजिक धार्मिक संस्थाएं बनी हुई हैं, मारवाड़ी समाज द्वारा सभी पर्व एक साथ एक रूप में मनाए जाते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम और एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

देवानंद जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'चिड़ावा' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'चिड़ावा' में ही संपन्न हुयी है। लगभग ३५ वर्षों से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हुए हैं और मेडिसिन होलसेल के व्यवसाय में संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जन सेवा ट्रस्ट नॉर्थ लखीमपुर में सह सचिव, लायंस क्लब इंटरनेशनल लखिमपुर शाखा के पूर्व सचिव, मारवाड़ी युवा मंच, मारवाड़ी सम्मेलन जैसी कई संस्थानों से जुड़े हुए हैं।

हरिगोपाल मूंधडा

व्यवसायी व समाजसेवी

नोखा निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३५०८५७२२

हरिगोपाल जी अपने कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में बहुत अधिक परिवर्तन आया है, पहले लखीमपुर एक छोटा सा टाउन था, चारों ओर जंगल थे और आज का एक विकसित शहर बन चुका है, जहां हर तरह की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। चारों तरफ मार्केट, शोरूम, मॉल, होटल बन गए हैं। स्कूल, कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, अस्पताल की भी व्यवस्था अच्छी हो गई है आवागमन के साधन अधिक बढ़ गए हैं, यहां प्रतिदिन कोलकाता के लिए फ्लाइट उड़ान भरती है। राजधानी ट्रेन आने से यह भारत के अन्य क्षेत्रों से जुड़ गया है।

यहां के सामाजिक वातावरण की बात की जाए तो हर राज्यों के लोग यहां बसे हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, बाजार अधिक बढ़ जाने से प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, यहां ९०% राजस्थानी समाज के लोग व्यापार से जुड़े हैं, यहां कई छोटे उद्योग भी लगे हैं। पर्यटन की बात की जाए तो यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'वासुदेव स्थान' जो एक ऐतिहासिक स्थल है, साथ ही अरुणाचल का 'ईटानगर' यहां से पास ही है जो एक रमणीय और पर्यटन के लिए विशेष जाना जाता है, इसके अलावा यहां गणेश जी का मंदिर, दुर्गा जी का मंदिर, शिव जी का मंदिर, ठाकुर जी का मंदिर आदि कई देवी-देवताओं के मंदिर बने हुए हैं जो 'नॉर्थ लखीमपुर' को और खास बना देते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत तो 'भारत' ही रहा है, भारत ही रहना चाहिए, यह हमारे प्राचीन इतिहास, संस्कृति और इतिहास का परिचय देता है, इसलिए अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

हरिगोपाल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नोखा मंडी' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, १९७८ से आप नॉर्थ लखीमपुर में बसे हुए हैं। हार्डवेयर और ग्लास के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही माहेश्वरी सभा और मारवाड़ी सम्मेलन में भी सदस्य के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

राज कुमार सराफ़

प्रांतीय सहायक सचिव, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन (असम)

फतेहपुर शेखावाटी निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३५५९४९६४

राजकुमार जी अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में समयानुसार काफी परिवर्तन आया है, पूर्वोत्तर का सबसे पिछड़ा इलाका होने के कारण जिस गति से यहाँ प्रगति होनी चाहिए थी उस गति से कभी प्रगति नहीं हो पाई, फिर भी पहले की तुलना में अरुणाचल के बॉर्डर पर स्थित होने के कारण 'लखीमपुर' काफी सुविधा संपन्न हुआ है, यहां रेल मार्ग व हवाई मार्ग, यातायात के अन्य साधन की सुविधा भी उत्तम हो गयी है। आज शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में भी यह प्रगति कर रहा है। आज यहां मेडिकल कॉलेज बन गए हैं, विश्वविद्यालय बनते जा रहे हैं। चिकित्सा क्षेत्र में भी कई निजी चिकित्सालय खुले हैं। कैंसर हॉस्पिटल भी बना हुआ है। व्यापार के दृष्टिकोण से यहां ऑयल मिल, राइस मिल, फ्लोर मिल जैसे कई छोटे-बड़े प्लांट्स लगे हुए हैं। यहां आसपास कई चाय के छोटे-बड़े बागान व चाय बनाने के कारखाने लगे हैं। व्यापार की बात की जाए तो यहाँ ज्यादातर व्यापारी रोज मर्रा की जरूरत से जुड़ी वस्तुओं का ही व्यापार करते है।

यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है, जिले की आबादी लगभग १२ लाख के करीब है। स्थानीय जन जाति के अलावा मारवाड़ी समाज के लगभग ६०० परिवार यहां निवास करते हैं, इसके अलावा बंगाली व हिंदी भाषी लोगों की संख्या भी अच्छी खासी है, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग आपस में मिलकर रहते हैं। समय के अनुसार यहां के पर्यावरण में भी काफी परिवर्तन आए हैं, पहले यहां कई कई दिनों तक बरसात होती रहती थी, अब इसमें भी कमी आ गई है पर मौसम हमेशा सुहावना रहता है। पर्यटन की बात की जाए तो 'लखीमपुर' के आसपास कई पर्यटन स्थल हैं, 'लखीमपुर' को मंदिरों का गांव कहा जाता है, यहां के मूल निवासी श्री श्रीमंत शंकरदेव जी को अपना गुरु मानते हैं, उनके प्रिय शिष्य श्री श्रीमंत माधव देव जी की जन्मभूमि 'लेटेकुपुखुरी' पास में ही स्थित है, जो एक दर्शनीय स्थल है, प्रतिदिन यहां सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है, इसके अलावा यहां मारवाड़ी समाज के कीर्ति पुरुष स्व: नंदकिशोर महेश्वरी द्वारा कई मंदिरों का निर्माण किया गया, जिसमें गणेश जी का मंदिर, शिव जी का मंदिर, विष्णु जी का मंदिर, दुर्गा जी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यहां मारवाड़ी समाज की संस्था 'सीताराम ठाकुरवाड़ी' बनी हुई है, जहां कई देवी-देवताओं के मंदिर बने हुए हैं, संपूर्ण विश्व में असम अपनी भाषा-संस्कृति, बिहू व मुंगा सिल्क के लिए अपनी अलग पहचान लिए हुए है। 'लखीमपुर' जिले के ढकुवाखाना में विश्व का बेहतरीन मूंगा सिल्क का उत्पादन होता है। अरुणाचल के बॉर्डर पर स्थित होने के 'लखीमपुर' व्यापारिक दृष्टि से एक अलग महत्व है। यह एक कृषि प्रधान जिला है। धान, सरसों की यहाँ अच्छी पैदावार होती है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि इंडिया अंग्रेजों द्वारा थोपा हुआ नाम है, जबकि 'भारत' हमारा पौराणिक व ऐतिहासिक परिचय है। पर संविधान निर्माताओ ने संविधान में दोनों ही नामों का उल्लेख कर के देश वासियों के बीच यह वाद विवाद का विषय बना दिया, पर हमारे राष्ट्रगीत में कहीं भी इंडिया नाम का उल्लेख नहीं है, यह दर्शाता है कि हम सभी देशवासियों के रग रग में 'भारत' ही समाया हुआ है।

राजकुमार जी मूलतः राजस्थान स्थित 'फतेहपुर शेखावाटी' के निवासी हैं, आपका परिवार कई दशकों से 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसा हुआ है। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, आप पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट है, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय सहायक सचिव और मारवाड़ी सम्मेलन नॉर्थ लखीमपुर शाखा के उपाध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थानों में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

दिनेश लोहिया

व्यवसायी व समाजसेवी

नागौर निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ८८२०४१२७४३

दिनेश जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज के 'लखीमपुर' में बहुत सुधार हुआ है, हर तरह से प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है, यहां के आवागमन के साधन सुदृढ़ हो रहे हैं, रेलवे और हवाई मार्ग से 'भारत' के हर क्षेत्र से जुड़ गया है। व्यावसायिक दृष्टिकोण से बात की जाए तो यहां का मार्केट भी बहुत अधिक बढ़ गया है, यहां राजस्थानी समाज के लोग हर तरह के व्यवसाय व ट्रेडिंग के कारोबार से जुड़े हुए हैं, यहां एग्रीकल्चर भी बहुत बड़े पैमाने पर होता है, धान की पैदावार सबसे अधिक होती है, 'लखीमपुर' के आसपास कई चाय बागान हैं जो 'लखीमपुर' को और सुंदर बना देते हैं, पर्यटन के दृष्टिकोण से 'लखीमपुर' के आसपास कई पर्यटन स्थल हैं। अरुणाचल और डिब्रूगढ़ पास में स्थित होने के कारण यहां कई दर्शनीय और रमणीय स्थान हैं, जहां लोग जाना पसंद करते हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर समाज के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं, यहां शिक्षा और स्वास्थ्य की भी सुविधा उत्तम है, आज यहां सरकारी और निजी विद्यालय, महाविद्यालय खुल गए हैं। मेडिकल कॉलेज भी बन गए हैं चिकित्सीय सुविधाएं भी उत्तम हो गई हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि सदियों से हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है और 'भारत' ही रहना चाहिए।

दिनेश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नागौर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'नॉर्थ लखीमपुर' में संपन्न हुई है, यहां आप किरणा, ड्राई फ्रूट्स के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही माहेश्वरी सभा, मारवाड़ी सम्मेलन से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

नरेश दिनोदिया

व्यवसायी व समाजसेवी

हरियाणा निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३५०८५८०४

नरेश जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जब मैं यहां आया था तो 'लखीमपुर' एक पिछड़ा हुआ इलाका था, सुविधाओं की कमी थी, पर अब यह बहुत ही विकसित हो गया है, हर तरह की सुविधा आसानी से उपलब्ध होने लगी है। विशेषकर कृषि प्रधान क्षेत्र है, यहां चाय बागान के अलावा धान व सरसों की पैदावार सबसे अधिक होती है, व्यापार में ट्रेडिंग का कारोबार बहुत ही अधिक होता है, पिछले कुछ वर्षों में यहां छोटी-छोटी इंडस्ट्रीज लगने लगी हैं। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है, लोगों में बहुत ही भाईचारा है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां आस-पास कई पर्यटन स्थल हैं, जैसे ३० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है वासुदेव थान, कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है मां पद्मिनी थान जो कि ऐतिहासिक और प्राचीन मंदिर है, यहां के ठेकुआखाना में जैन समाज का सबसे प्राचीन मंदिर है, यहां मारवाड़ी समाज द्वारा सीताराम ठाकुरबाड़ी बनाया गया है, जहां कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, यहां राजस्थानी और हरियाणा के लोगों को मिलाकर लगभग ७०० परिवार निवास करते हैं, यहां कई सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हमारे 'लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम और एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

नरेश जी मूलतः हरियाणा स्थित भिवानी जिले के निवासी हैं, आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा 'भिवानी' में ही संपन्न हुई है। पिछले कुछ वर्षों से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हैं और इलेक्ट्रिकल व्यवसाय में संलग्न हैं, साथ ही यहां स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं, पूर्व में १० वर्षों तक अग्रवाल सभा के सचिव रहे हैं, अन्य कई संस्थानों में भी संलग्न हैं। जय भारत!

आनंद प्रकाश सोन्थलिया

व्यवसायी व समाजसेवी

झारखंड निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३५०८५१०४

आनंद जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'नॉर्थ लखीमपुर' में जमीन आसमान का अंतर आ गया है। यहां की जनसंख्या के साथ-साथ हर चीज में बढ़ोत्तरी हुई है। आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, लोगों के मकान पक्के बन गए हैं, दुकानें बढ़ गई हैं, बाजार बढ़ गया है। आज यहां बड़े-बड़े शोरूम, मॉल, रेस्टोरेंट, होटल खुल गए हैं। यहां की जनसंख्या में राजस्थानी समाज के साथ-साथ बिहार, पंजाब, हरियाणा व भारत के अन्य राज्यों के लोग भी बसे हुए हैं, लोगों का परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, आज यहां हर तरह की वस्तुएं उपलब्ध होने लगी हैं, यहां चाय बागान के अलावा धान और सरसों की पैदावार अधिक होती है। पर्यटन की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। 'नॉर्थ लखीमपुर' में हनुमान जी का मंदिर, गणेश जी का मंदिर, शिव जी का मंदिर बहुत ही रमणीय स्थान है, साथ ही यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है रंगा नदी और ३०-३५ किलोमीटर दूरी पर स्थित है सुवनसिरी नदी, जहां लोग घूमने जाना पसंद करते हैं। ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

आनंद जी मूलतः राजस्थान के निवासी हैं, आपके पूर्वज लगभग १५० साल पहले राजस्थान से झारखंड के 'गिरिडीह' जिले में स्थित राजधनवार में आकर बस गए थे। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। आपके पिताश्री १९५७-१९९२ चाय बागान में कार्यरत रहे। पिछले ४१ वर्षों से आप नॉर्थ लखीमपुर में व्यवसाय कर रहे है। वर्तमान में हार्डवेयर के व्यवसाय से जुड़े है। आप यहां विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

मुकेश शर्मा

व्यवसायी व समाजसेवी

बीकानेर निवासी नॉर्थ-लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९८५४१९०११२

मुकेश जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले का लखीमपुर आज के लखीमपुर में बहुत बड़ा बदलाव आया है। पहले यह एक छोटा सा टाउन हुआ करता था और आज शहर बन चुका है, यह बहुत ही सुंदर और शांत शहर के रूप में जाना जाता है। यहां राजस्थानी समाज के अलावा हर भाषा के लोग बसे हुए हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। पर्यटन के लिए यहां अरुणाचल का ईटानगर नजदीक है जो एक रमणीय स्थान है, इसके अलावा 'नॉर्थ लखीमपुर' में राजस्थानी समाज द्वारा ठाकुरवाड़ी, राम मंदिर, दुर्गा जी का मंदिर, गणेश जी का मंदिर व अन्य कई देवी देवताओं के मंदिर बनाए गए हैं, यहां के व्यापार की बात की जाए तो यहां हर तरह के व्यापार होते है, राजस्थानी समाज के अधिकतर लोग व्यापार से ही जुड़े हैं। एग्रीकल्चर के दृष्टिकोण से भी यह **शेष पृष्ठ ३७ पर...**

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ ३६ से ... क्षेत्र उत्तम है। 'लखीमपुर' शहर के आसपास कई गांव लगते हैं जो बहुत ही सुंदर हैं, शिक्षा व स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र दिन प्रतिदिन आगे बढ़ता जा रहा है, आज यहां मेडिकल कॉलेज भी खुल गया हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि मैं इस अभियान का पूर्ण समर्थन करता हूं, अपने देश का एक ही नाम और एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

मुकेश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बीकानेर' के निवासी हैं, आपका परिवार कई पीढ़ियों से 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही मारवाड़ी सम्मेलन, नॉर्थ लखीमपुर ब्राह्मण समाज से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

किरण बजाज

अध्यक्ष माहेश्वरी महिला संगठन नॉर्थ लखीमपुर

नोखा मंडी निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३५५३४४५५

किरण जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहती हैं कि पहले 'लखीमपुर' एक छोटा सा टाउन था और आज यह बहुत बड़ा शहर बन चुका है, इसके क्षेत्रफल में भी बहुत विस्तार आया है। सुविधाएं भी बढ़ गई हैं, फ्लाइट व रेलवे की सुविधा उत्तम है जो 'लखीमपुर' को 'भारत' के अन्य क्षेत्रों से जोड़ते है। मेडिकल व शिक्षा की भी सुविधा यहां उत्तम है, यहां आज कई बड़े-बड़े शिक्षा संस्थान बने हुए हैं, सरकार द्वारा यहां मेडिकल कॉलेज और महाविद्यालय व विश्वविद्यालय भी बनाये गये है। पर्यटन की बात की जाए तो 'लखीमपुर' के आसपास कई पर्यटन स्थल हैं जैसे 'अरुणाचल' यहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, वहां की राजधानी 'ईटानगर' पर्यटन के लिए प्रमुख है, साथ ही यहां का जिरो नामक पर्यटन स्थल भी उल्लेखनीय है और भी कई रमणीय स्थान हैं। 'नॉर्थ लखीमपुर' में राजस्थानी समाज के सहयोग से कई देवी-देवताओं के मंदिर बनाए गए हैं, जिनमें गणेश जी का मंदिर, शिव जी का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर, रामदेव जी का मंदिर, दुर्गा जी का मंदिर बहुत ही सुंदर रूप से बनाए गए हैं। यहां के ढेकुआखाना नामक स्थान पर पौराणिक मंदिर वासुदेव थान की भी विशेष मान्यता है, ऐसा कहा जाता है कि यहां साक्षात भगवान विष्णु विराजमान है। यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, हर समाज के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि हमारे देश का नाम 'भारत' था और 'भारत' ही रहना चाहिए।

किरण जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नोखा मंडी' की निवासी हैं, आपका पीहर पक्ष 'हिम्मतसर' का है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा असम के 'तीतावर' में संपन्न हुई है, इसलिए ४५ वर्षों से आपका परिवार लखीमपुर के 'पानीगांव' (बापाखाट) में बसा हुआ था और ३० वर्षों से लखीमपुर शहर में बसे हुए हैं। आप माहेश्वरी महिला संगठन के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही मारवाड़ी महिला मंच नार्थ लखीमपुर की कोषाध्यक्ष भी रही हैं। जय भारत!

प्रभुदयाल भरतीया

व्यवसायी व समाजसेवी

सुजानगढ़ निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९९५४४०७९७४

प्रभु दयाल जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में बहुत ही परिवर्तन आ गया है, लोगों के घर भी कच्चे और टीन के बने हुए होते थे पर आज हर जगह आरसीसी बिल्डिंग दिखाई देती है, हर तरह की सुविधा बन गई है। सड़क, रेल मार्ग, हवाई मार्ग, मेडिकल, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल हर तरह से यह समृद्ध हुआ है और यह बदलाव पिछले कुछ सालों में बहुत तेजी से आया है। व्यापारिक स्थिति की बात की जाए तो यहां हर तरह का व्यापार होता है, यहां का व्यापार अरुणाचल पर निर्भर है और जब से बोगीबिल ब्रिज बन गया है तब से डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया भी 'नॉर्थ लखीमपुर' से जुड़ गए हैं। यहां राजस्थानी समाज के लोग अधिकतर व्यापार से जुड़े हैं, इसके अलावा कुछ लोग प्रोफेशन में भी संलग्न हैं। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर समाज धर्म के लोग बसे हुए हैं, सभी के बीच परस्पर मेल-जोल बहुत ही उत्तम है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से यह बहुत ही सुंदर स्थान है, लखीमपुर में कई चाय के बागान है साथ ही यहां कई नदी और झरने है जहां लोग पिकनीक के लिए जाना पसंद करते है। यहां कई दर्शनीय स्थल भी हैं, यहां कई देवी-देवताओं के मंदिर बने हुए हैं, जैसे दुर्गा जी का मंदिर, गणेश जी का मंदिर शिव जी का मंदिर बहुत ही भव्य रूप में बनाया गया है, जो लखीमपुर की शोभा को और बढ़ा देते हैं। यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है, गोगामुख में हनुमान जी का मंदिर, जो कि एक रमणीय स्थान है, इसके अलावा वासुदेव थान और पद्मिनी थान एक पौराणिक स्थान के रूप में जाने जाते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि हमें नाम के साथ संस्कृति को भी महत्व देना चाहिए नाम तो 'भारत' ही रहना चाहिए।

प्रभुदयाल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सुजानगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुयी है, पिछले कुछ वर्षों से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हुए हैं और गल्ला किरणा के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

रामेश्वर तापड़िया

अध्यक्ष चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स

नागौर निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३५०८५२५३

रामेश्वर जी अपनी कर्मभूमि 'लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में दिन रात का अंतर आ गया है। पहले यहां विकास के नाम पर कुछ नहीं था, सुविधाओं का हमेशा अभाव रहता था। आज यहां हर तरह की सुविधा आसानी से उपलब्ध हो जाती है। पहले राजस्थान से आने पर दो-तीन गाड़ियां बदलनी पड़ती थी, पर अब गुवाहाटी से बीकानेर के लिए ट्रेन उपलब्ध है, आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, फ्लाइट की भी सुविधा अच्छी हो गई है, कम्युनिकेशन के साधन बढ़ गए हैं, व्यापार बहुत अधिक बढ़ गया है, ट्रेडिंग का कारोबार यहां बड़े पैमाने पर होता है, यहां खेलकूद के साधन बहुत अधिक उपलब्ध हैं, शिक्षा व चिकित्सा के दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। पर्यटन की बात की जाए तो 'लखीमपुर' को मंदिरों की नगरी कहा जाता है, यहां दुर्गा मंदिर, शिव मंदिर, गणेश मंदिर, हनुमान मंदिर, नामघर व अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर बने हुए हैं, यहां आने वाला इन मंदिरों के दर्शन के लिए अवश्य जाता है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल 'भारत' ही नाम रहना चाहिए। हमारे देश की पहचान और इतिहास भारत से है। रामेश्वर जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित श्रीबालाजी के निवासी हैं, आपका परिवार १९४७ के पहले से 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसा हुआ है, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान में, बीकॉम की शिक्षा जोरहाट में, एमकॉम एलएलबी की शिक्षा गुवाहाटी से ग्रहण की है, आप इनकम टैक्स में प्रैक्टिस करते हैं। लगभग ५० सालों से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हैं। यहां लेक्चरर के रूप में भी कार्यरत थे, वर्तमान में आप सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। चेंबर ऑफ कॉमर्स नॉर्थ लखीमपुर के अध्यक्ष हैं, अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच पूर्वोत्तर के उपाध्यक्ष रहे हैं, मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्वोत्तर के उपाध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

मांगीलाल भट्टड

व्यवसायी व समाजसेवी

नोखा निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४१४१४७०१९

मांगीलाल जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'नॉर्थ लखीमपुर' प्रकृति की गोद में बसा एक सुंदर और सौहार्दपूर्ण क्षेत्र है, पहले और आज के 'लखीमपुर' में बहुत बड़ा अंतर आ गया है, पहले यहां कुछ भी नहीं था, उग्रवादिता का प्रभाव अधिक था, आज यह एक समृद्ध शहर बन गया है, हर तरह की सुविधा आसानी से उपलब्ध होने लगी है, आवागमन के साधन बढ़ गए हैं, यहां कोलकाता के लिए प्रतिदिन फ्लाइट उपलब्ध है, साथ ही रेल मार्ग में यहां राजधानी ट्रेन आती है, जिससे यह दिल्ली व भारत के अन्य क्षेत्रों से जुड़ा है। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल व अन्य सुविधा भी बढ़ गई है। यहां के मूल निवासी भी आज उच्च शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न क्षेत्रों में अग्रसर हैं। व्यापार व सरकारी विभाग में भी संलग्न है। यहां राजस्थानी समाज के अलावा यहां के मूल निवासी असमिया, बंगाली, पंजाबी, हरियाणा व भारत के अन्य क्षेत्रों के लोग बसे हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, यहां व्यापार की स्थिति भी पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है, यहां राजस्थानी समाज के लोग गल्ला किरणा, हार्डवेयर व कपड़ों के कारोबार से अधिक जुड़े हैं। पर्यटन के दृष्टिकोण से भी क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। अरुणाचल का ईटानगर यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है, जो एक हिल स्टेशन के रूप में जाना जाता है, पास ही स्थित है गेरुकामुख मंदिर, जो एक रमणीय स्थान है, इसके अलावा यहां गणेश जी का मंदिर, शिव जी का मंदिर, दुर्गा जी का मंदिर व देवी देवताओं के मंदिर बने हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह तो होना ही चाहिए और वर्तमान मोदी सरकार द्वारा भी इसका पूर्ण समर्थन किया जा रहा है। मांगीलाल जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'नोखा' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, १९७६ से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हैं और गल्ला किराणा के व्यवसाय में संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक संस्थाओं में भी यथा संभव अपनी सक्रियता निभाते हैं। जय भारत!

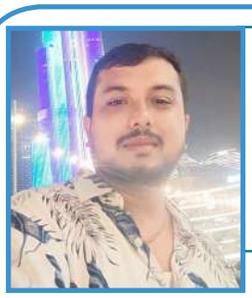

अमित जाजोदिया

व्यवसाई व समाजसेवी

गोठमांगलोद निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९९५७६८३८७९

अमित जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'लखीमपुर' में काफी अंतर आ गया है, विकास तो बहुत ही अधिक हुआ है, पहले उच्च चिकित्सा सुविधा के लिए गुवाहाटी या अन्य क्षेत्रों में जाना पड़ता था, पर अब लखीमपुर में भी कई बड़े-बड़े अस्पताल व कैंसर हॉस्पिटल बन गए हैं, यहां मेडिकल कॉलेज भी बना हुआ है। यहां खेलकूद में भी विकास हो रहा है, इसीलिए स्टेडियम बन रहा है जिसका ७०% भाग बन चुका है, यहां कई मंदिरों का भी **शेष पृष्ठ ३९ पर...**

पृष्ठ ३८ से... निर्माण किया गया है, जैसे दुर्गा जी का मंदिर, गणेश जी का मंदिर व अन्य कई देवी-देवताओं के भी मंदिर बने हैं। गोगामुख में हनुमान जी का मंदिर विशेष रूप से प्रसिद्ध है। एयरपोर्ट व ट्रेन की सुविधा भी यहां अच्छी हो गई है, अरुणाचल की सीमा से लगा है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत उत्तम है, यहां चारों ओर हरियाली ही नजर आती है, लोग पर्यटन के लिए अरुणाचल जाना पसंद करते हैं, वहां कई रमणीय और पर्यटन स्थल हैं, यहां चाय बागान होने के कारण हमेशा हरियाली बनी रहती है, एग्रीकल्चर को भी बढ़ावा मिल रहा है। आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत उन्नत है 'लखीमपुर', यहां कई तरह के व्यापार होते हैं जिनमें हार्डवेयर, कपड़े, इलेक्ट्रिकल व बड़े-बड़े मोटर के शोरूम स्थापित हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं। ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' नाम ही सर्वोत्तम है, हमारी पहचान 'भारत' से है और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

अमित जी मूलतः राजस्थान के सीकर जिले में स्थित 'गोठ मंगलोद' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'नॉर्थ लखीमपुर' में ही संपन्न हुई है, यहां आपका प्लाईवुड ग्लास का व्यवसाय हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, मारवाड़ी युवा मंच के कार्यकारिणी सदस्य हैं। जय भारत!

बलवीर शर्मा

अध्यक्ष नॉर्थ लखीमपुर ब्राह्मण समाज

जींद निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३५०८४८८७

बलवीर जी अपनी कर्मभूमि 'नॉर्थ लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'नॉर्थ लखीमपुर' में दिन रात का अंतर आ गया है, पहले से यह जिला टाउन था, पहले यह गांव की तरह था, आज पूरा शहर बन चुका है, दिन प्रतिदिन यहां विकास की गति बढ़ती जा रही है, यह विकास हर क्षेत्र में हो रहा है। पहले के मुकाबले आज यहां सुविधा भी बढ़ गई है, एयरपोर्ट की सुविधा उत्तम है, रेल मार्ग की भी सुविधा अच्छी है, प्रतिदिन यहां राजधानी ट्रेन का आवागमन होता है। शिक्षा के लिए यहां कई निजी और सरकारी विद्यालय और महाविद्यालय खुल गए हैं, मेडिकल कॉलेज भी बना हुआ है, साथ ही चिकित्सा के क्षेत्र में भी यह प्रगति कर रहा है, यहां राजस्थानी समाज द्वारा ठाकुरवाड़ी बनवाया गया है इसके अलावा यहां गणेश जी का मंदिर, दुर्गा जी का मंदिर व शिवजी का मंदिर भी भव्य रूप में बना हुआ है, यहां के 'ढेकुआखाना' में वासुदेव थान बना हुआ है, जो एक ऐतिहासिक स्थल है, कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है 'मालिनी थान' जहां भगवान कृष्ण ने रुक्मणी का हरण कर के लाए थे, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग व स्थानीय समाज आपस में मिलजुल कर व प्रेम भाव के साथ निवास करते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

बलवीर की मूलतः हरियाणा स्थित जींद के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा असम के तिनसुकिया में संपन्न हुई है, १९७५ से आप 'नॉर्थ लखीमपुर' में बसे हुए हैं और व्यवसाय में संलग्न हैं, साथ ही आप कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं, मारवाड़ी सम्मेलन, सीताराम ठाकुरवाड़ी जनसेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में नॉर्थ लखीमपुर ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्था से भी जुड़े हुए हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि भारत ही हमारे देश का नाम रहना चाहिए, यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

नारायण लखोटिया

कोषाध्यक्ष माहेश्वरी युवा संगठन

नोखा निवासी-नॉर्थ लखीमपुर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३५०८५४००

नारायण जी अपनी कर्मभूमि नॉर्थ 'लखीमपुर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरे बचपन का 'लखीमपुर' और आज के 'लखीमपुर' में जमीन आसमान का अंतर आ गया है, पिछले कुछ सालों में तो यहां बहुत अधिक विकास हुआ है। माहौल पूरी तरह से बदल गया है, इंफ्रास्ट्रक्चर बहुत अधिक डेवलप हुआ है, हर क्षेत्र में परिवर्तन आया है। आज यहां बड़े-बड़े कंपनियों के शोरूम, मॉल खुल गए हैं, दुकानों की संख्या बढ़ गई है, बाजार बहुत अधिक बढ़ गए हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से यह बहुत ही संपन्न है। अरुणाचल में वस्तुओं का आवागमन और ट्रेडिंग का कारोबार 'नॉर्थ लखीमपुर' से ही होता है। पर्यटन की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां आसपास कई पर्यटन स्थल हैं, जहां लोग जाना पसंद करते हैं। माजुली द्वीप यहां से १ घंटे की दूरी पर है जो की एक रमणीय स्थान है। सुविधाओं के मामले में आज 'लखीमपुर' हर तरह से उत्तम हो गया है, यहां शिक्षा के लिए कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान, मेडिकल कॉलेज बन गए हैं। आवागमन की सुविधा उत्तम हो गई है। एयरपोर्ट व रेल मार्ग से भी यह जुड़ा हुआ है। सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग यहां मिलजुल कर रहते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'नॉर्थ लखीमपुर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए, इंडिया नाम तो अंग्रेजों ने थोप दिया, हमारी पहचान भारत से है और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

नारायण जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'नोखा' के निवासी हैं, आपका जन्म 'नोखा' में और संपूर्ण शिक्षा 'लखीमपुर' में संपन्न हुयी है, यहां आप डिस्ट्रीब्यूशन के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, माहेश्वरी युवा संगठन के कोषाध्यक्ष हैं, मारवाड़ी युवा मंच से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

स्नेह कुमार मोर
संस्थापक अध्यक्ष मारवाड़ी युवा मंच पेटरवार बोकारो झारखंड
ठेलासर निवासी-झारखंड प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९५५६६६०००

स्नेह जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि अग्रकुल प्रवर्तक महाराज अग्रसेन जी की कृपा व आशीर्वाद से आज हम अग्र परिवार सभी क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। अग्र समाज समृद्ध माना जाता है, महाराजा अग्रसेन जी के एक ईंट-एक रुपए के सिद्धांत को आज भी किसी न किसी रूप में अपनाया जा रहा है। अग्रवाल समाज धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र में हमेशा ही अग्रणी रहा है और आज भी अग्रवाल समाज के लोग दूसरों के सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। यहां अग्रसेन जयंती बड़े धूमधाम और उत्साह पूर्वक मनाई जाती है। आज की युवा पीढ़ी का भी अपने धर्म और समाज से रुझान बढ़ता जा रहा है, समाज द्वारा आयोजित विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता बढ़-चढ़कर रहती है, जिससे उनमें अपनी संस्कृति और सभ्यता की जानकारी बढ़ती जा रही है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहना चाहिए केवल भारत। भारत हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है, हमारी संस्कृति और सभ्यता भारत से जुड़ी हुई है, हम 'भारत माता की जय' बोलते हैं ना कि इंडिया माता की। भारत से ही हमारे सारे भाव जुड़े हुए हैं, अतः अपने देश का हर भाषा में एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

स्नेह जी मूलतः राजस्थान चुरू जिले में स्थित 'ठेलासर' के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से झारखंड के पेटरवार 'बोकारो' में बसा हुआ है। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां बिल्डिंग मटेरियल के व्यवसाय से जुड़े हैं। साथ ही आप सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। मारवाड़ी युवा मंच पेटरवार बोकारो के संस्थापक अध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

शत्रुओं का विनाश करने वाला पर्व विजयादशमी

आसोज सुदी दशमी को विजयादशमी कहते हैं, इस दिन तीसरे प्रहर (अपराह्नकाल) में दशमी होना जरुरी है, अगर नवमी के अपराह्न में ही दशमी होती है तो यह दिन मान्य है अन्यथा यदि दशमी के तीसरे प्रहर में दशमी रहे तो वही सही मानी जाती है, यदि दशमी दो हों तो अपराह्न में रहने वाली दशमी ही ग्राह्य है, यदि अपराह्न में श्रवण नक्षत्र हो तो वह और भी उत्तम माना जाता है, दोनों ही दिन यदि श्रवण नक्षत्र आ जाये तो वह और अधिक श्रेष्ठ होता है।

श्रवण नक्षत्र में दशमी का योग 'विजय-योग' कहलाता है इसलिए इस दशमी को विजयादशमी भी कहते हैं, इस दिन अपराजिता देवी की भी पूजा की जाती है।

विधि-विधान - इस दिन चार काम किये जाते हैं-

(१) अपराजिता देवी का पूजन

(२) सीमा का लांघना

(३) शमी (खेजड़ी) का पूजन

(४) देशान्तर जाने का प्रस्थान। पहले अपराजिता का पूजन किया जाता है। तीसरे प्रहर ईशान दिशा में गमन करके पवित्र स्थान पर जमीन लीपें, फिर वहाँ गेरु लीपकर, लाल कपड़े पर चावल का अष्टदल बनावें और आसन पर बैठकर आचमन, प्राणायाम करके यह संकल्प करें कि 'मैं अपने कुटुम्ब के लिये अपराजिता देवी की पूजन करुँगा, फिर अष्टदल के मध्य भाग में देवी की मूर्ति रखकर उसकी पूजा करें। 'अपराजितायै नमः' इस मंत्र से देवी का आवाह्न करें, फिर अपराजिता देवी के दाईं ओर जया देवी का आवाहन इस मंत्र से करें- 'क्रियाशकत्ये नमः'। बाईं ओर 'उमायै नमः' मंत्र से विजया देवी का आवाह्न करें।

उपर्युक्त अलग-अलग मंत्रों से उपराजिता, जया, विजया नामक, तीनों देवियों की पूजा करें, फिर 'आसनं समर्पयामि। पाद्यं अर्घ्यं, स्नानम्, वस्त्रं, कुमकुमं, चंदनं, अक्षतान्, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवैद्य, फलम्, ताम्बूलं, दक्षिणां समर्पयामि' कह कर उन्हें पुनः 'अपराजितायै नमः' आसनं समर्पयामि। जयायै नमः आसनं समर्पयामि। 'विजयायै नमः' इन नामों से मंत्रों को बोलकर षोडशोपचार से उनकी पूजा करें। इस क्रिया की एवज में रावण का पुतला बनाकर तथा भगवान श्रीराम की पूजा कर, राजा की सवारी की एवज में राम की सवारी निकाली जाती है, शत्रु की जगह रावण को जलाया जाता है।

मंडेलिया परिवार ने ७ दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम उत्साहपूर्वक मनाया

कोलकाता: शिवपुर हावड़ा राघव रेजिडेंसी अपार्टमेंट में राघव परिवार द्वारा आयोजित सात दिवस श्री श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ २४ जुलाई से ३० जुलाई तक परम श्रद्धेय कथा वाचक पंडित श्याम सुंदर जी शास्त्री ने अपने मुखारविंद से किया, इस अवसर पर हजारों भक्तों ने महायज्ञ का लाभ उठाया। ७ दिनों के दौरान समाज के विशिष्ट समाजसेवी, राजनीतिज्ञ और उद्योगपतियों ने अपनी उपस्थिति देकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। समापन दिन पर यजमान राजेंद्र प्रसाद मंडेलिया ने अपने पौत्र के जन्म दिवस पर बधाई गीत और श्री शास्त्री जी के मुखारविंद से उनके पौत्र मिशा श्याम मंडेलिया को आशीर्वाद व्यास पीठ की तरफ से और समस्त उपस्थित श्रोताओं के परिवार की तरफ से दिया गया।

बधाई गीत में मंडेलिया जी के विभिन्न रिश्तेदारों व उनकी पत्नी कविता मंडेलिया ने भाग लिया। विदेश में रहने की वजह से उनके दोनो पुत्र श्री मनोज कुमार और श्री भास्कर इस आयोजन में शामिल नहीं हो सके।

मंगल आयोजन का समापन यज्ञ के दौरान धार्मिक मंत्र के साथ किया गया, तत्पश्चात महाप्रसाद का भी वितरण किया गया। इस सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन राघव रेजिडेंसी परिवार की तरफ से किया गया था और इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य भूमिका श्री अशोक कुमार शर्मा, श्री राजीव अग्रवाल और राघव परिवार के कर्मठ कार्यकर्ताओं की रही। जय भारत!

'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर को हार्दिक शुभकामनायें

Mukesh Sharma
Mob: 98541 90112
Thakur Bari, P.O.-Lakhimpur, Assam, Bharat-780001

प्रकृति की सुंदरता से सजाए हुए एक शहर 'नॉर्थ लखीमपुर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें

Kiran Bajaj
अध्यक्ष:- माहेश्वरी महिला संगठन नॉर्थ लखीमपुर
Mob. : 9435534455
Bajaj Complex, NT Road,
North Lakhimpur, Assam, Bharat-787001

मध्यप्रदेश

मतदान 17 नवंबर

230 सीट (बहुमत 116)

नामांकन 21-30 अक्टूबर
नामांकन वापसी 2 नवंबर तक

अभी भाजपा की सरकार

2018	सीटें	वोट शेयर
भाजपा	109	41.6%
कांग्रेस	114	41.5%

अभी भाजपा की 127, कांग्रेस की 96 और अन्य की 7 सीटें हैं।
वोटर- 5.61 करोड़
न्यूवोटर- 22 लाख

राजस्थान

मतदान 23 नवंबर

200 सीट (बहुमत 101)

नामांकन 30 अक्टू. से 6 नवंबर
नामांकन वापसी 9 नवंबर तक

अभी कांग्रेस सत्ता में है

2018	सीटें	वोट शेयर
भाजपा	73	39.3%
कांग्रेस	99	39.8%

अभी भाजपा की 70, कांग्रेस की 108 व अन्य की 22 सीटें हैं।
वोटर- 5.25 करोड़
न्यूवोटर- 22 लाख

छत्तीसगढ़

मतदान 7,17 नवंबर

90 सीट (बहुमत 46)

नामांकन 13-31 अक्टूबर
नामांकन वापसी 2 नवंबर तक

कांग्रेस की सरकार

2018	सीटें	वोट शेयर
भाजपा	15	33.6%
कांग्रेस	68	43.9%

अभी भाजपा की 13, कांग्रेस की 71 और अन्य की 5 सीटें हैं।
वोटर- 2.03 करोड़
न्यूवोटर- 18 लाख

तेलंगाना

मतदान 30 नवंबर

119 सीट (बहुमत 60)

नामांकन 3-10 नवंबर
नामांकन वापसी 15 नवंबर

बीआरएस की सरकार है

2018	सीटें	वोट शेयर
बीआरएस	88	47.4%
कांग्रेस	19	28.7%

अभी बीआरएस की 101, कांग्रेस की 5, भाजपा की 3 और अन्य की 10 सीटें हैं।
वोटर- 3.17 करोड़

मिजोरम

मतदान 7 नवंबर

40 सीट (बहुमत 21)

नामांकन 13-20 अक्टूबर
नामांकन वापसी 23 अक्टूबर तक

एमएनएफ सत्तारूढ़ है

2018	सीटें	वोट शेयर
एमएनएफ	26	37.8%
कांग्रेस	5	30.3%

मिजोरम में भाजपा की एक सीट है और वह एमएनएफ के साथ गठबंधन में।
वोटर- 8.52 लाख

सभी मतदाताओं से निवेदन

- सर्वप्रथम मतदान जरूर करें।
- मतदान उसी को दें जो आपकी समस्याओं का निवारण करने के लिए तैयार रहें।
- जुमलों में या मुफ्त रेवड़ी में ना फंसे।
- जो 'भारत' नाम के सम्मान के लिए अग्रसर रहें।

मिलकर बोलें-बुलवायें

''जय भारत''

निवेदक
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व संपादक
विशेष जानकारी व भारत नाम सम्मान मुहिम से जुड़ने के लिए संपर्क करें
मो. ९३२२३०७९०८

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

स्व. रामप्रसादजी माहेश्वरी का संक्षिप्त जीवन परिचय

स्व. रामप्रसादजी माहेश्वरी

स्व. रामप्रसादजी माहेश्वरी का जन्म सम्वत् १९५२ आश्विन शुक्ला ५ सोमवार दिनांक २४ सितम्बर १८९५ को हेसामरा गाँव (पथालिपाम) उत्तर लखीमपुर, असम में हुआ। आपके पिता स्व. अमरचन्दजी तथा माता स्व. नानुदेवी उन्नीसवीं सदी में ही असम आये थे। राजस्थान में निवास स्थान, वर्तमान १०० वर्षों में रतनगढ़, बीकानेर डिविजन वर्तमान जिला चुरू है। स्व. रामप्रसाद जी को अपने पिता के इकलौते लाडले होने की वजह से व्यापार में शीघ्र ही कदम रखना पड़ा। अंग्रेजी के ४/५ कक्षा ही पढ पाये थे। आपके तीन पुत्र क्रमश: सर्वश्री राम निवास, रामा किशन और नन्द किशोर हुए जिन्होंने अपने पिता तथा दादाजी की सम्पत्ति को सम्भाला तत्पश्चात इनके पोते सूर्यप्रकाश, चंद्रप्रकाश और रविप्रकाश ने इस परंपरा को आगे बढाया।

सन् १९२८ में स्व. रामप्रसाद जी ने 'अमर चन्द रामप्रसाद' के नाम पर 'उत्तर लखीमपुर' में जमीन खरीदकर सन् १९३० के प्रारम्भ तक दुकान तैयार की और वर्तमान दुकान का शुभ मुहुर्त फाल्गुन शुक्ला ७ शुक्रवार सम्वत् १९८६ दिनांक ७ मार्च १९३० को किया। शुरू में यहां धान, पाट की खरीदी तथा मोटे कपड़े का थोक व्यापार किया, बाद में गल्ला, किराणा तत्पश्चात कार्यालय सामग्री, मनीहारी आदि रखने लगे।

स्व. रामप्रसाद जी को फोटोग्राफी का बहुत शौक था। चुंकि यहाँ आस पास में कोई फोटोग्राफर नहीं था, वे खुद फोटो प्रिंट करते थे। यह सिर्फ शौक था व्यापार नहीं, यह शौक बढते-बढ़ते सिनेमा तक ले गया और अपनी इच्छा की पुर्ती हेतु 35MM की छोटी सिनेमा मशीन लेकर गाँव वालों को मुफ्त सिनेमा (उस समय 'टोकी') का मनोरंजन कराया करते थे, १९३७ में यह निजि मनोरंजन व्यापार में परिवर्तित हो गया और 16MM की बड़ी सिनेमा फिल्म चलाने की मशीन भाड़े में लाकर यहाँ लखीमपुर में 'सूर्य सिनेमा' के नाम से टोकी खेल चालु किया। उन दिनों बोलती फिल्में ज्यादा नहीं बनती थी, छोटे शहर के लिये बिना बोलती (Silent Film) फिल्म ही प्राप्त थी, एक ही फिल्म को २/३ महीने तक कभी-कभी एक (One Show) प्रदर्शित किये जाते थे। सिनेमा फिल्में उस वक्त प्रज्वलनशिल होती थी, यानी आग लगाने वाली। अत: १९४० के लगभग सिनेमा मशीन-कमरे में आग लग जाने से काफी नुकसान उठाना पड़ा, फिर सिनेमा शीघ्र ही चालु किया, सन् १९४४ में स्थाई सिनेमा चलाये जाने की अनुमति, उस वक्त की सरकार से प्राप्त की। सूर्य सिनेमा का उद्घाटन १६ मई १९४४ के दिन विधि पूर्वक सम्पन्न किया। सन् १९५० के १५ अगस्त वाले दिन असम में हुए भूकम्प के कारण व्यवसाय में काफी नुकसान सहना पड़ा, इस प्रकार आपके जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आये, जिनका आपने मुकाबला किया।

स्व. रामप्रसाद जी माहेश्वरी एक समाजसेवी थे। अंग्रेजों के शासन के समय सन् १९४४ में यहां टाउन कमेटी के वार्ड कमिश्नर बनें। 'नॉर्थ लखीमपुर मर्चेन्ट असोसिएशन' नामक व्यापारीक संस्था सन् १९४२ में स्थापित की और दो वर्ष इस संस्था के संगठन मंत्री के रूप में रहे। सन् १९४४ के बाद इस संस्था का नाम 'नॉर्थ लखीमपुर चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स' हुआ एवं १९५१ तक इस संस्था के अध्यक्ष रहे।

सन् १९६४ में राजस्थान में भी व्यापार फैलाने की सोची और उसी वर्ष रतनगढ़ (राजस्थान) गये तथा रतनगढ में ही 'सूर्य थियेटर' नामक सिनेमा घर का निर्माण १९६६ में किया। उन्हें आयुर्वेदिक दवाइयों पर पूर्ण विश्वास था और इसी वजह से असम में आयुर्वेदिक दवाइयों की बहुत सी एजेंसियां लेकर व्यापार करते रहे।

स्व. रामप्रसाद जी की मृत्यु के समय उनके दो बेटे बड़े और छोटे पास में थे, उन्होंने अपने मझले पुत्र (जो उस समय असम में थे) को ५ अगस्त १९७१ को एक लंबा चौड़ा १४ पृष्ठ का पत्र लिखा और ६ अगस्त को पोस्ट किया, उस पत्र में उन्होंने अपने जीवन के कार्यों का विवरण, परिवार को सुखी किस प्रकार बनाया जा सकता है लिखा और विशेष बात यह लिखी कि मैं अब एक दिन और जीवित रहूंगा, मेरे पिताजी तथा दादाजी मेरे से बहुत कम आयु में ही स्वर्गवासी हुए थे यह मेरा आखिरी पत्र समझना। ६ अगस्त १९७१ की सुबह अपने सगे-संबंधियों को बुलाने के लिए कहा। उस दिन भी उन्होंने नित्य कर्म पूजा पाठ रोजाना की भांति सुबह ४:०० बजे उठकर किया, शाम को सभी बुलाए गए संबंधी आ पहुंचे, रात को उनके स्वास्थ्य में फर्क महसूस होने लगा और दूसरे दिन सुबह ७ अगस्त को देरी तक सोते रहे, सुबह जब उन्होंने आंखें खोली तो देखा डॉक्टर साहब इलाज में लगे हैं उन्होंने डॉक्टर का इलाज स्वीकार नहीं किया।

विष्णु की तस्वीर जो उनके पूजा स्थल पर थी उसे लाने को कहा और अपने हाथ से तुलसी लेकर खाई तथा गंगाजल कुछ पिया शेष अपने हाथों से सर पर डाल लेने के साथ-साथ ही राम स्मरण करके अपने ज्येष्ठ पुत्र की गोद में सर रख प्राण त्याग दिए।

अंत समय में किसी प्रकार का मोह उनके मन में नहीं था भाद्र कृष्णा १ संवत् २०२८ शनिवार दिनांक ७ अगस्त १९७१ के दिन ११:०० बजे रामप्रसाद जी माहेश्वरी अपने सुख समृद्धि परिवार को छोड़कर स्वर्गवासी हो गए।

'नॉर्थ लखीमपुर' के
इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनायें
Rameshwar Taparia
M. Com., LL.B.
Mob. : 9435085253 (W) / 7002348143
Tax Consultant
S. S. Commercial Complex, N.T. Road,
North Lakhimpur, Assam, Bharat-787001

अक्लांत कर्मयोद्धा नन्दकिशोर माहेश्वरी

श्री नन्दकिशोर माहेश्वरी (स्व. रामप्रसाद जी के पुत्र), 'मैं भारत हूँ' विश्वस्तरीय पत्रिका के धारणा में व्यक्ति नहीं, वरन एक बहू उद्धेशीय संगठन का प्रतिक नाम हमें मिला है। कला-संस्कृति, साहित्य, समाज संस्कार आदि क्षेत्रों में सर्वांगिण विकास के जरिए समाज व राष्ट्र के विकास हेतु प्रयत्नशील कई-कई संगठनों की झलक एक ही व्यक्ति में देखने का सुखद अनुभव करनेवालों में से एक हम भी हैं। नाटक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्य, पत्रकारिता आदि विभन्न क्षेत्रों में उनका योगदान सदैव अनुकरणीय रहा आपका।

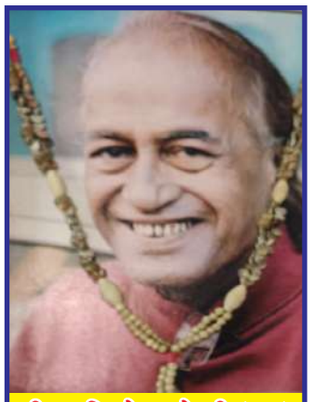
श्री नन्दकिशोर माहेश्वरी (स्व.)

१९८३ में मारवाड़ी युवा मंच शाखा की स्थापना के बाद प्रांतीय अध्यक्ष सुरेश बेड़िया व महामंत्री हरिप्रसाद शर्मा के अनुरोध पर लखीमपुर शाखा गठन के प्रयास के दौरान पहली बार नन्दकिशोर जी के बारे में पता चला, बाद में यह भी ज्ञात हुआ कि उनकी रूचि 'लखीमपुर' के विशाल सांस्कृतिक क्षेत्र में अधिक है। मारवाड़ी समाज की सिमित गतिविधी में अपने आपको सिमित रखना उन्हें जचा नहीं, १९८९ में 'पूर्वांचल प्रहरी' की स्थापना हुई। उन्हें धेमाजी से संवाददाता के रूप में अधिकृत रूप से जुड़ने का मौका मिला 'लखीमपुर' से नन्दकिशोर माहेश्वरी को भी इसी समाचार पत्र से जुड़ने का मौका भी मिला जो कि सुखदायक रहा। करीब दस साल के लंबे समय के दौरान नन्दकिशोर माहेश्वरी ने जाना-सुना, प्रत्यक्ष रुप से हम अब तक नहीं मिले थे, १९८० में ११वीं अखिल असम पद्मनाथ गोसाई बरूवा एकांकी नाटक प्रतियोगिता के सह-सचिव के रूप में नन्दकिशोर महेश्वरी की प्रतिभा के बारे में जानने का मौका स्थानिय लोगों को मिला।

दुर्गा मंदिर

तीन दिवसीय आयोजन के अर्न्तगत नाट्य प्रशिक्षण व कार्यशाला में विशेषज्ञ व विशिष्ट अतिथी के रूप में प्रतिष्ठित नाट्यकर्मी/रंगमंच कार्यकता मुनीन भुइयां, अलि हैदर के साथ नन्दकिशोर माहेश्वरी को भी आमंत्रित किया गया। उम्र में मुझसे काफी बड़े, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले बहू प्रतिक्षित शख्सीयत पहली मुलाकात ने प्रभावित किया, रंगमंच से संबधित एक लंबा इंटरव्यू लिया गया, जिसे जो बाद में 'पूर्वांचल प्रहरी' में प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया गया। लखीमपुर जिले के मुख्य नाट्य 'आंदोलनकारियों' में से एक के रूप में परिचित माहेश्वरीजी ने ज्योति प्रसाद अगरवाल, मुनीन भुइयां, अलि हैदर, हरेन्द्रनाथ बरठाकुर जैसे कई प्रतिष्ठित नाट्यकारों की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद कर असमीया, हिन्दी रंगमंच-साहित्य के क्षेत्र में सूत्रधार की भूमिका का निर्वहन किया। राजार देउल, बाली माही, धुमुहा-पखिर नीड़, एलाँदु पहाड़, एजन रजा आसिल, हाथी आरू फंदी जरौरूआ प्रजा आदि कई सफल व जनप्रिय नाटकों का अनुवाद, निर्देशन व अभिनय कर ना केवल लखीमपुर संस्कृति को प्रकाशवान किया, वरन असमिया संस्कृति में मारवाड़ीयों की सहयोगिता का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत कर मारवाड़ी समाज को गौरवान्वित करनेवाले ऐसी प्रतिभाओं का मारवाड़ी संगठनों द्वारा प्रोत्साहित किया गया। मारवाड़ी युवा मंच द्वारा 'समाज गौरव' से अभिनन्दन करने का प्रावधान भी हैं, परन्तु अज्ञात कारणों से माहेश्वरी जी जैसे व्यक्ति आज भी मंच की दृष्टि से प्रशंसनीय हैं। नाट्य प्रशिक्षुओं के सुविधार्थ असमिया में नाटककार की कथा, बोलछविर कथा अदि जैसे ग्रंथों की भी रचना की। नाट्य प्रेमियों ने दोनों ही ग्रंथों को पसंद भी किया, परिणाम स्वरूप मोरान शाखा साहित्य सभा ने 'नाटककर' की कथा का दूसरा संस्करण भी प्रकाशित किया। नाट्यकार नन्दकिशोरजी की स्वरचित निर्देशित तथा अभिनित असमिया नाटक 'ढुलिया उजा' तथा 'जाल' आज भी दर्शकों के स्मृति पटल में विद्यमान है। विभिन्न सुविधाओं से लैस आधुनिक नाट्य शैली के विपरित श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रचारित अति कष्टसाध्य भावना से युवा काल

गणेश मंदिर

से ही जड़ित तथा कंस आदि जैसे मुख्य व महत्वपूर्ण किरदारों की दो दशकों तक जानदार भुमिका निभानेवाले नन्द दा रिहर्सल के दौरान अभिनेताओं को गुर सिखाते रहे। असमीया सिनेमा जगत में भी आपकी उपस्थिति उल्लेखनीय रही। 'रजार देउल' शीर्षक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचित नाटक को सिनेमा रूप देने की एक योजना के तहत आपने काफी काम किया। प्रतिष्ठित गायक भूपेन हजारीका, कुमार शानू, आशा भोसले, ऊषा भोसले, आदि के कण्ठों में कई गीतों की रिकार्डिंग तक की, परन्तु आर्थिक अभाववश यह कार्य अधर में लटका पड़ा है। असम में रहनेवाले हिन्दीभाषियों को असमिया संस्कृति में सही ढंग से रच-बस जाने हेतु असमीया भाषा का ज्ञान होना अति आवश्यक है, इसे ध्यान में रखते हुए असमीया कथा कोबोले **शेष पृष्ठ ४५ पर...**

श्रीमद् भागवत कथाज्ञान यज्ञ का भव्यातिभव्य आयोजन

हावड़ा-कोलकाता: १ से ८ अक्टूबर तक श्री बंगेश्वर महादेव मंदिर बांधाघाट में श्रीमद् भागवत कथाज्ञान यज्ञ का आयोजन बहुत ही भव्य रूप में संपन्न हुआ। वृंदावन से श्री उदित नारायण महाराज जी को कथा व्यास के लिए आमंत्रित किया गया था, उन्होंने बहुत ही सुंदर रूप से कथा वाचन किया, इनमें भागवत कथा के साथ गंगा आरती, कृष्ण जन्म ९५६ भोग, रुक्मणी विवाह और सामूहिक सुंदरकांड पाठ का भी आयोजन किया गया। कृष्ण जन्म से गिरिराज पूजन एवं रुक्मणी विवाह के भव्य झांकी प्रस्तुत की गई। भागवत श्री पुराण का तिलक, अध्यात्म का मंथन है और इसका श्रवण अपने आप में भगवान का आशीर्वाद है, इन ८ दिनों की भागवत में महाराज श्री भक्तों को भक्ति की गंगा में स्नान कर उनके मस्तिष्क को और अधिक शुद्ध करते हैं। सनातन धर्म का श्रेष्ठतम ग्रंथ श्री भागवत पुराण वास्तव में प्राणियों के हर सवाल का जवाब है, यह कहना है श्री उदित नारायण महाराज जी का। बनारस में बनारस घाट पर होने वाली भव्य गंगा आरती का आयोजन श्री बंगेश्वर महादेव मंदिर में बहुत ही सुंदर रूप से आयोजित किया गया, ऐसा प्रतीत हुआ की भक्त काशी घाट पर बैठे हैं। रविवार ८ अक्टूबर को सामूहिक सुंदरकांड पाठ के द्वारा भगवान श्री राम के परम भक्त हनुमान जी का पूजन किया गया। सनातन

धर्म यह कहता है कि सुंदरकांड का पाठ करने वाले व्यक्ति के जीवन से हनुमान जी कष्ट हर लेते हैं।

इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन श्रीमद भागवत प्रचार समिति एवं लायंस क्लब ऑफ कोलकाता के सानिध्य में किया गया। आयोजन प्रमुख मनोज लुहारीवाला, आनंद जैन, संजय केजरीवाल, धनपत बंसल, विनोद तलवंडीवाला, बिजय अग्रवाल, रामधारी गोयल व अन्य माननीय सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पृष्ठ ४४ से ... हिकक (असमीया भाषा बोलना सिखें) शीर्षक पुस्तक की रचना भी की।

नाट्य कर्मी/रंगमंच कार्यकर्ता नन्दकिशोरजी लखीमपुर के धर्मीय क्षेत्र में अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में आज भी परिचित हैं।

१९८३ में श्री महादेव मंदिर, २००१ में श्री गणेश, २००५ में दुर्गा मंदिर, नामघर आदि कई धर्मानुष्ठानों के निर्माण परिचालन में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, प्रत्येक निर्माण में एक नये अन्दाज एक नयी डिजाइन की समाहित कर आपने इन धर्मानुष्ठानों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित कर पूरे 'लखीमपूर' को ही पर्यटन स्थल की पहचान दी है। जोनाई, सीलापथार, धेमाजी, ढकुवाखाना सहित लखीमपुर के आस-पास के क्षेत्रों में आनेवाले अतिथि परिजनों को लखीमपुर के इन सौन्दर्य को दिखाये बिना मेहमान नवाजी पूरी नहीं होती, दरअसल इन क्षेत्रों के सिवाय दर्शनीय कुछ और है भी नहीं। 'लखीमपुर' के कई वरिष्ठजनों ने माना कि नये-नये अंदाज

में निर्माण व उद्भावना में माहिर नन्दु जी के नेतृत्व में मंदिर निर्माण हेतु धन संग्रह करना बहुत कठिन कार्य नहीं होता।

एक पत्रकार के रूप में भी नन्दकिशोरजी ने लखीमपुर के सर्वांगीण विकास में काफी योगदान किया है। एक निर्भीक निरपेक्ष व अध्ययनपुष्ट संवाददाता नन्दकिशोर महेश्वरी ने पत्रकार संगठनों की जिम्मेदारी भी निभायी है। वर्किंग जर्नलिस्ट युनियन लखीमपुर जिला अधिवेशन १९९० की सफलता का श्रेय श्री लुकेन हजारीका, तरूण सइकिया आदि के साथ-साथ नन्दकिशोर जी का नाम भी आता है। असम प्रेस पत्रकार यूनियन के उपाध्यक्ष, लखीमपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष, धेमाजी जिला संवाददाता संघ के उपाध्यक्ष सहित अनेक बार सांगठनिक दायित्व का बखूबी निर्वाहन किया है।

- उमेश खण्डेलिया

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

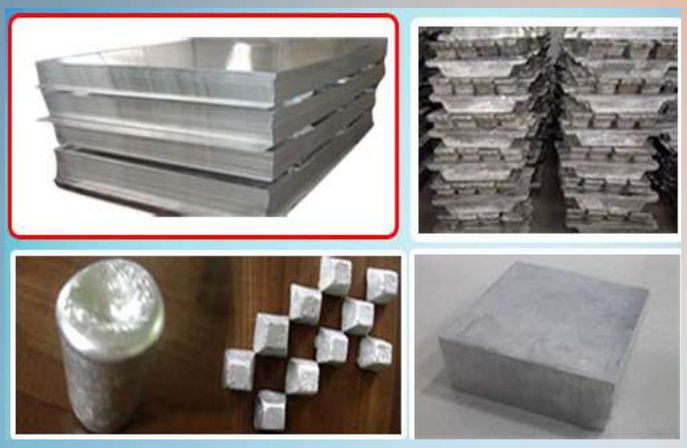

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

१४ वें वर्ष में प्रवेश

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

अभी तक भारत के शहरों के इतिहास बताते हुए प्रकाशित विशेषांक...

भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

विशेष छूट

विज्ञापन प्रकाशन करने पर
पूरे साल
मैं भारत हूँ
पत्रिका मुफ्त

आप चाहें तो प्रस्तुत विशेषांक
आपके घर-कार्यालय की
शोभा व ज्ञान (आसाम) बढ़ाने के लिए मंगवा सकते हैं

आपके हाथों में

विशेषांक मंगवाने के लिए संपर्क करें
(समय १ दोपहर से संध्या ५.०० बजे तक)

ज्योति
9820873689

मात्र ₹ १२००/-में
प्रति महिना, पूरे वर्ष तक
(आपके द्वार)

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९.
दूरभाष- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना: www.mainbharathun.co.in

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
Remove India Name From the Constitution

नीम लगायें पर्यावरण बचाये
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

Postal Registration Number - MCN/294/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2021-23
Published on 19th October 2023 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

चलें रांची

सादर आमंत्रण

चलो रांची

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

एक देश-एक नाम 'भारत' यह ही है हमारा काम

दें साथ-विश्व में चमकेगा 'भारत' का नाम

'भारत नाम सम्मान' विचार गोष्ठी का आयोजन

दिनांकः- २९ अक्टूबर २०२३, रविवार

स्थलः- माहेश्वरी भवन, रांची, झारखंड, भारत

समयः- दोपहर ११:३० बजे से (समयानुसार)

गौरवमयी उपस्थिति होगी लोकसभा सांसद की

- संजय सेठ, लोकसभा सांसद
- श्रीमती महुआ माझी, राज्यसभा सांसद
- अजय मारू (पूर्व सांसद राज्यसभा)
- महेश पोद्दार (पूर्व सांसद राज्यसभा)

और भी कई भारत माँ के लाडलों की रहेगी उपस्थिति

निवेदक

श्री माहेश्वरी सभा रांची

राज कुमार मारू, रांची	किशन कुमार साबू, रांची	नरेंद्र लाखोटिया, रांची	मुकेश काबरा, रांची
अध्यक्षः झारखंड-बिहार प्रदेश माहेश्वरी सभा	अध्यक्ष श्री माहेश्वरी सभा रांची	मंत्री श्री माहेश्वरी सभा रांची	कार्यक्रम संयोजक रांची
मो. 9334744030	मो. 9934582577	मो. 9142922750	मो. 9334459081

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
बिजय कुमार जैन	शोभा सादानी	गोविन्द मोहनरी	निशा लड्ढा
बिजय कुमार जैन, मुंबई	शोभा सादानी, कोलकाता	डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा	निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9322307908	मो. 8910628944	मो. 9414183919	मो. 9830224300

जय भारत! व समस्त भारतीय समाज जय भारत!

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-२८५० ९९९९, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574